हिंदी
भाषा शिक्षण

वर्ष - द्वितीय, सेमेस्टर - तृतीय

द्विवर्षीय डी०एल०एड० पाठ्यक्रम पर आधारित संदर्भ सामग्री

वर्ष - 2024

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

राज्य हिन्दी संस्थान . उ.प्र. वाराणसी - उत्तिष्ठत जाग्रत

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

डी०एल०एड० पाठ्यक्रम पर आधारित हिन्दी भाषा शिक्षण हेतु प्रशिक्षण सन्दर्भ सामग्री का विकास

वर्ष - द्वितीय, सेमेस्टर - तृतीय

वर्ष - 2024

मुख्य संरक्षक	:	**डॉ० एम.के. शन्मुगा सुन्दरम,** प्रमुख सचिव, बेसिक शिक्षा, उ०प्र० शासन।
संरक्षक	:	**श्रीमती कंचन वर्मा,** महानिदेशक (स्कूल शिक्षा), उ०प्र० तथा राज्य परियोजना निदेशक, उ०प्र० सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, लखनऊ।
निर्देशन	:	**श्री गणेश कुमार,** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।
परामर्श	:	**डॉ० पवन कुमार,** संयुक्त निदेशक (एस०एस०ए०), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।
समन्वयन	:	**श्रीमती चन्दना रामइकबाल यादव,** निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी। **डॉ० ऋचा जोशी,** पूर्व निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।
समीक्षा	:	**डॉ० रामसुधार सिंह,** (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, यू०पी० कॉलेज, वाराणसी), **प्रो० सत्यपाल शर्मा,** (प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०), **डॉ० उदय प्रकाश,** (प्रोफेसर, श्री बलदेव पी०जी० कालेज, बड़ागाँव, वाराणसी)
सम्पादन	:	**डॉ० प्रदीप जायसवाल,** शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी। **श्री देवेन्द्र कुमार दुबे,** शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।
लेखक मंडल	:	**डॉ० प्रसून कुमार सिंह** (प्रवक्ता, डायट, प्रयागराज), **डॉ० दिनेश कुमार यादव** (प्रवक्ता, डायट, कौशाम्बी), **डॉ० अजीत कुमार धुसिया** (प्रवक्ता, डायट, मऊ), **डॉ० जितेन्द्र गुप्ता** (प्रवक्ता, डायट, सन्त कबीर नगर), **श्री अमरेन्द्र कुमार मिश्र** (प्रवक्ता, डायट, प्रतापगढ़), **डॉ० मनीष कुमार यादव** (प्रवक्ता, सी०टी०ई०, वाराणसी), **डॉ० हरिओम त्रिपाठी** (प्रवक्ता, डायट, सुलतानपुर), **श्री योगिराज मिश्र** (प्रवक्ता, रा०शि०सं०, प्रयागराज), **श्री आदर्श कुमार सिंह** (प्रवक्ता, डायट, देवरिया), **श्री विनय कुमार मिश्र** (प्रवक्ता, डायट, फतेहपुर), **श्री सुदर्शन यादव** (से०नि० प्रवक्ता, डायट, गोरखपुर), **डॉ० अभिषेक दुबे** (प्रवक्ता, वि०ना०रा०इ० कॉलेज, भदोही), **डॉ० प्रेमलता** (प्रवक्ता, पं०दी०उ०मा०इ० कॉलेज, अम्बेडकरनगर), **डॉ० चंचल** (प्रवक्ता, बा०इ० कॉलेज, मऊ), **डॉ० दीपा द्विवेदी** (प्रवक्ता, रा०बा०इ० कॉलेज, सुल्तानपुर), **डॉ० विभा सिंह** (स०अ०, कि०इ० कॉलेज, बरहनी, चन्दौली), **श्री मनमोहन सिंह यादव** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, खानपुर, गाजीपुर), **डॉ० नीलम वर्मा** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, गरला, चन्दौली), **डॉ० विशालाक्षी देवी** (स०अ०, रा०बा०इ० कॉलेज चोलापुर, वाराणसी), **श्रीमती नंदिता शर्मा** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, धौरहा, वाराणसी), **डॉ० प्रतिभा मिश्रा** (स०अ०, उ०प्रा०वि० पाली, भदोही), **श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी** (स०अ०, उ०प्रा०वि० धरतीडोलवा, सोनभद्र), **श्री मिथिलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० पचेवरा, मीरजापुर), **श्री शैलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० कैनाल बस्ती, मीरजापुर), **श्री विकास शर्मा** (स०अ०, क०वि० नगला सूरजभान, आगरा) **डॉ० सरोज पाण्डेय** (स०अ०, प्रा०वि० गाडीवानपुर, वाराणसी), **श्री हिमांशु मिश्रा** (स०अ०, कं०वि० ढोलो, सोनभद्र), **श्रीमती रश्मि रूपम** (स०अ०, प्रा०वि० मंगोलेपुर, वाराणसी), **श्री अखिलेश कुमार मौर्य** (स०अ०, उ०प्रा०वि० करसारी, सुल्तानपुर), **डॉ० नितिकेश यादव** (स०अ०, क०वि० चकवा, जौनपुर), **डॉ० भानुप्रकाश धर द्विवेदी** (स०अ०, कं०वि० बढ़ैनी कला, वाराणसी), **श्री प्रदीप कुमार** (स०अ०, उ०प्रा०वि० तेतारपुर, गाजीपुर), **श्री रणविजय निषाद** (स०अ०, उ०प्रा०वि० कन्थुवा, कौशाम्बी)
डिजायनिंग एवं ग्राफिक्स	:	**श्री विकास शर्मा** (सहायक अध्यापक, कम्पोजिट विद्यालय नगला सूरजभान, शमसाबाद, आगरा)
आवरण	:	**श्री कासिम फ़ारुखी,** (प्रवक्ता (कला), राज्य शिक्षा संस्थान, उ०प्र०, प्रयागराज)
आभार		**प्रशिक्षण संदर्भ साहित्य के विकास में अनेक पुस्तकों का अवलोकन व पाठ्यसामग्री का उपयोग किया गया है। हम उनके प्रति आभारी हैं।**

निदेशक की कलम से

गणेश कुमार
निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
फोन (कार्यालय) : 0522–2780385, 2780505
(फैक्स) : 0522–2781125
ई–मेल : dscertup@gmail.com

संदेश

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषायी कौशल के समुचित विकास से सभी विषयों को सीखना सरल, सुगम एवं प्रभावी हो जाता है। बच्चों में अपेक्षित भाषायी कौशल विकसित करने के उद्देश्य से शिक्षकों को प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान करना हमारी प्राथमिकता है। हिन्दी शिक्षण को सरल, रुचिकर व बोधगम्य बनाने, रचनात्मक चिंतन एवं प्रभावी संप्रेषण कौशल के विकास एवं प्रशिक्षकों में क्षमता संवर्धन हेतु राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी द्वारा द्विवर्षीय डी0एल0एड0 पाठ्यक्रम पर आधारित **'हिन्दी भाषा शिक्षण'** हेतु प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री का विकास किया गया है।

प्रस्तुत प्रशिक्षण साहित्य के माध्यम से शिक्षक–प्रशिक्षकों एवं डी0एल0एड0 प्रशिक्षुओं में प्रभावी हिन्दी शिक्षण कौशल एवं भाषायी दक्षताओं की समझ को बेहतर बनाने हेतु नवाचारी गतिविधियों, क्रिया–कलापों, युक्तियों, आदर्श शिक्षण प्रविधि एवं योजनाएँ, आदर्श प्रश्न–पत्र, केस स्टडी, श्रव्य–दृश्य सामग्री आदि को समाहित करते हुए आदर्श भाषा शिक्षण के क्रियान्वयन को प्रोत्साहित किया गया है। इसके माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में उल्लिखित भाषायी कौशल के विकास सम्बन्धी अनुशंसा को क्रियान्वित करने में भी सफलता मिलेगी।

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी का यह प्रयास सराहनीय है। हिन्दी भाषा शिक्षण हेतु प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री के विकास एवं प्रयोग से जुड़े सम्बन्धित समस्त हितधारकों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएँ।

29/11/2024
(गणेश कुमार)

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानती है कि शिक्षा व्यवस्था में मौलिक सुधारों का केंद्र शिक्षक होता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। इसी के दृष्टिगत डी0एल0एड0 के हिन्दी विषय के पाठ्यक्रम पर आधारित सेमेस्टरवार (कुल चार सेमेस्टर) प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री का विकास किया गया है। इस प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री द्वारा डी0एल0एड0 प्रशिक्षण हेतु प्रामाणिक व उपयोगी संदर्भ सामग्री के अंतर्गत सरल एवं सहज गतिविधियों एवं क्रिया–कलापों का संकलन करते हुए उनके कक्षा–कक्ष में क्रियान्वयन हेतु प्रोत्साहित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अनुशंसा इस बात को महत्व देती है कि गतिविधियाँ एवं शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री आदि के अनुप्रयोग से बच्चे तेजी से विषय की अवधारणाओं को समझ लेते हैं। इस परिप्रेक्ष्य से प्रस्तुत पुस्तक में भाषाई कौशलों के विकास, हिंदी भाषा की ध्वनियों को सुनकर समझते हुए शुद्ध उच्चारण करना, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ, विराम चिह्नों का प्रयोग, रचनात्मकता तथा शिक्षण विधियों को नवाचारी तरीके से सीखने–समझने का प्रयास किया गया है। इसकी सहायता से जहाँ एक और प्रशिक्षक डी0एल0एड0 शिक्षकों को आनंदपूर्ण ढंग से प्रशिक्षित कर सकेंगे, वहीं दूसरी ओर डी0एल0एड0 प्रशिक्षु भी इसकी सहायता से विद्यालय में बच्चों को खेल–खेल में भाषाई कौशल सिखा पाने में सक्षम होंगे।

मेरा विश्वास है कि डी0एल0एड0 के हिन्दी विषय के पाठ्यक्रम पर आधारित सेमेस्टरवार विकसित प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री शिक्षक–प्रशिक्षकों को प्रभावी प्रशिक्षण करने में उपयोगी सिद्ध होगी तथा सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी0एल0एड0 प्रशिक्षुओं के लिए भी अपनी अर्थपूर्ण भूमिका निभाएगी।

(चन्दना रामइकबाल यादव)
निदेशक
राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश,
वाराणसी।

कक्षा–शिक्षण : विषयवस्तु

- पाठ्यपुस्तक में आये प्रमुख कवियों और लेखकों का सामान्य परिचय।
- श्रुत सामग्री में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल प्रयोग।
- राष्ट्रीय पर्वों, मेला, त्योहार जैसे विषयों पर अपने शब्दों में गद्य अथवा पद्य में स्वतंत्र लेखन।
- कर्ता कर्म के अनुसार क्रिया में परिवर्तन, तत्सम, तद्भव, देशज रूपों का परिचय, सरल संयुक्त व मिश्रित वाक्य, वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग।
- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को पढ़कर समझना।
- औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों के अनुरूप उपयुक्त भाषा का प्रयोग करना। अधिगम प्रतिफल का मूल्यांकन, शिक्षण प्रक्रिया एवं बच्चों के क्रियाकलापों के साथ प्रथम दो कक्षाओं में मौलिक और प्रेक्षात्मक मूल्यांकन तथा कक्षा 3 से आगे की कक्षाओं में अन्य तकनीकों के पूरकरूप में लिखित परीक्षा का संचालन।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल– प्रशिक्षु शिक्षकों को हिन्दी के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, जानकारी एवं घटनाओं के अन्तः संबंधों को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, खेल, गतिविधि, दृश्य–श्रव्य (वीडियो/आडियो), सामग्री, प्रयोग तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- आत्मकथा एवं यात्रा वृतांत का मौलिक लेखन।
- विभिन्न विराम चिन्हों वाले अनुच्छेदों का निर्माण।
- मुहावरों एवं लोकोक्तियों के बीच अंतर स्पष्ट करने की सामग्री।
- शब्दों की उत्पत्ति पर मॉडल/प्रोजेक्ट।
- एक ही विषय पर लिखी गयी कविताओं के कवियों का संग्रह तैयार करना।
- समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं से कक्षा शिक्षण के लिये उपयोगी सामग्री का संकलन तैयार करना।

विषय सूची

इकाई 1

पृष्ठ संख्या : 10–18

पाठ्यपुस्तक में आए प्रमुख कवियों और लेखकों का सामान्य परिचय

1.1- कबीरदास,
1.2- सूरदास,
1.3- मीराबाई,
1.4- बिहारी,
1.5- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र,
1.6- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला',
1.7- मैथिलीशरण गुप्त,
1.8- हरिवंश राय 'बच्चन',
1.9- कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर',
1.10- महाश्वेता देवी,
1.11- सुदर्शन,
1.13- प्रेमचन्द,
1.14- डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे,
1.15- क्वेंटीन रेनाल्ड्स।

इकाई 2

पृष्ठ संख्या : 19–31

श्रुत सामग्री में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल प्रयोग

2.1- मुहावरा
2.2- लोकोक्ति
2.3- मुहावरों एवं लोकोक्तियों में अंतर

इकाई 3

पृष्ठ संख्या : 32–40

राष्ट्रीय पर्वों, मेला, त्योहार जैसे विषयों पर अपने शब्दों में गद्य अथवा पद्य में स्वतंत्र लेखन

3.1- राष्ट्रीय पर्व पर स्वतंत्र लेखन
3.2- गणतंत्र दिवस
3.3- होली
3.4- दीपावली
3.5- कुम्भ मेला

इकाई 4

पृष्ठ संख्या : 41–57

कर्ता, कर्म के अनुसार क्रिया में परिवर्तन, तत्सम, तद्भव, देशज, रूपों का परिचय, सरल, संयुक्त व मिश्रित वाक्य, वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग।

4.1- कर्ता
4.2- कर्म
4.3- क्रिया
4.4- शब्द (तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्द)
4.5- वाक्य (सरल, संयुक्त व मिश्रित)
4.6- वाक्यांश के लिए एक शब्द

इकाई 5

पृष्ठ संख्या : 58–61

पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को पढ़ कर समझना।

इकाई 6

पृष्ठ संख्या : 62–66

औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों के अनुरूप उपयुक्त भाषा का प्रयोग।

6.1- औपचारिक भाषा
6.2- अनौपचारिक भाषा
6.3- औपचारिक और अनौपचारिक भाषा में अन्तर

इकाई 7

पृष्ठ संख्या : 67–73

अधिगम प्रतिफल का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन।

7.1- अधिगम
7.2- अधिगम प्रतिफल
7.3- मापन
7.4- मूल्यांकन
7.5- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

- प्रतिदर्श प्रश्न–पत्र मॉडल पेपर
- आदर्श शिक्षण योजना प्रारूप
- आदर्श पाठ योजना प्रारूप

इकाई 1

पाठ्यपुस्तक में आए प्रमुख कवियों और लेखकों का सामान्य परिचय

1.1- कबीरदास
1.2- सूरदास
1.3- मीराबाई
1.4- बिहारी
1.5- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
1.6- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
1.7- मैथिलीशरण गुप्त
1.8- हरिवंश राय 'बच्चन'
1.9- कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर',
1.10- महाश्वेता देवी
1.11- सुदर्शन
1.12- प्रेमचन्द
1.13- डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे
1.14- क्वेंटीन रेनाल्ड्स

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु प्रमुख कवियों के जीवनवृत्त और उनकी रचनाओं के बारे में बता लेते हैं।
2. प्रशिक्षु प्रमुख लेखकों और उनकी रचनाओं के बारे में बता लेते हैं।
3. प्रशिक्षु प्रमुख कवि किस शैली की कविताएँ लिखते हैं, बता लेते हैं।
4. प्रशिक्षु प्रमुख लेखक किस प्रकार की कहानियाँ लिखते हैं, बता लेते हैं।

1.1 कबीरदास

परिचय

निर्गुण भक्तिधारा के संत परंपरा के प्रमुख कवि कबीरदास के जन्म और मृत्यु के संबंध में अनेक किवदंतियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि कबीरदास का जन्म 1398 ई. में काशी के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ तथा मृत्यु सन् 1518 के लगभग मगहर में हुई। उनके जन्म के संबंध में एक जनश्रुति प्रचलित है कि एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ। नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपति ने इनका पालन–पोषण किया। इनका विवाह लोई नाम की कन्या से हुआ, जिससे इन्हें दो संताने कमाल और कमाली की प्राप्ति हुई। इनके गुरु का नाम रामानन्द था। कबीरदास जी ने शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, किंतु साधुओं के सत्संग, पर्यटन तथा अनुभव के आधार पर उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था।

"मसि कागद छुयो नहीं, कलम गह्यो नही हाथ।"

संत कवि कबीरदास जी स्वभाव से समाज सुधारक ,अत्यंत उदार, पाखंड के प्रति विद्रोही तथा गृहस्थ जीवन के प्रबल समर्थक थे। उनके राम और रहीम में एकरूपता है। उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक रुढियों, बाह्य आडंबरों, अंधविश्वासों का निडरता से विरोध किया। उन्होंने गुरु की महत्ता, नाम की महत्ता आदि पर विशेष बल दिया है। उन्होनें अपने काव्य में धार्मिक और सामाजिक भेदभाव से मुक्त होकर मानव कल्याण की कल्पना की है।

कबीर की भाषा को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'सधुक्कड़ी' अथवा 'पंचमेल खिचड़ी' कहा है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है। कबीर की भाषा में सरलता व सहजता विद्यमान है यही उनकी काव्य की शक्ति है। उनकी भाषा जनभाषा के अत्यंत निकट है। इसलिए यही कारण है कि कबीर के दर्शन को बड़े ही सरलता से समझा जा सकता है।

रचनाएँ

कबीर की रचनाएँ मुख्यतः कबीर ग्रंथावली में संग्रहित है। कबीर पंथ में उनकी रचनाओं का संग्रह बीजक नाम से प्रसिद्ध है जिसके तीन भाग है–

1. साखी– साम्प्रादायिक शिक्षा और सिद्धांत के उपदेश, जो दोहों में है।
2. सबद– अलौकिक प्रेम और उनकी साधना पद्धति, जो गेय–पद में है।
3. रमैनी– रहस्यवादी और दार्शनिक विचार,जो चौपाई छन्द में है।

1.2 सूरदास

परिचय

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में सगुण काव्य धारा के कृष्णोपासक कवि सूरदास का व्यक्तित्व हिन्दी जगत का आदर्श है। अष्टछाप के कवियों में अग्रगण्य महाकवि सूरदास का जन्म सन् 1478 ई के लगभग माना जाता है। एक मत के अनुसार उनका जन्म मथुरा के पास 'रुनकता' नामक ग्राम में हुआ, जबकि अन्य विद्वानों के अनुसार उनका जन्म दिल्ली के निकट 'सीही' नामक स्थान पर माना जाता है। इस प्रकार सूरदास का जन्म तथा जन्म स्थान के विषय में विद्वान एक मत नहीं हैं। सूरदास की मृत्यु सन 1583 ई में पारसौली नामक स्थान पर हुई थी। सूरदास महाप्रभु बल्लभाचार्य के शिष्य थे। सूरदास के विषय में प्रचलित है कि सूरदास जन्मांध थे, किंतु इस विषय में पुष्ट प्रमाण नहीं है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में "बाल सौंदर्य एवं स्वभाव के चित्रण में जितनी सफलता सूर को मिली है उतनी सफलता अन्य किसी को नहीं। वे अपने बंद आँखों से वात्सल्य का कोना–कोना झाँक आये।"

सूरदास मथुरा और वृंदावन के बीच 'गऊघाट' पर रहते थे तथा श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन–कीर्तन किया करते थे। उनके निधन पर गोसाईं विठ्ठलनाथ ने कहा था–

"पुष्टि मारग को जहाज जात है सो जाकों कछु लेनौ होय सो लेउ।"

सूरदास बल्लभाचार्य के सम्पर्क में आने से पहले विनय के पद लिखा करते थे किंतु बल्लभाचार्य के कहने पर कृष्ण–लीला का गान करने लगे।

सूरदास हिन्दी साहित्य में 'वात्सल्य रस सम्राट' जीवनोत्सव का कवि, श्रृंगार का कवि आदि उपाधियों को समेटे हुए हैं। उनके काव्य में खेती और पशुपालन वाले भारतीय समाज का दैनिक जीवन के अंतरंग चित्र तथा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों का चित्रण मिलता है। सूरदास के कृष्ण और गोपियों का प्रेम सहज रूप से मानवीय प्रेम की प्रतिष्ठा करता है।

"धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी।
एक धार दोहनि पहुँचावत, एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी।"

सूरदास की भाषा ब्रज भाषा है, उसमें चित्रात्मकता, आलंकारिता, भावात्मकता, सजीवता, प्रतीकात्मकता तथा बिम्बात्मकता पूर्ण रूप से विद्यमान है। उन्होंने ब्रज भाषा को ग्रामीण जनपद से लेकर नगर और ग्राम के संधिस्थल पर ला दिया था।

रचनाएँ

सूरदास की तीन रचनाएँ प्रसिद्ध हैं–

1. **सूरसागर–** सूरसागर की कथा भागवत पुराण के दशम स्कन्ध से ली गई है। इसमें कृष्ण जन्म से लेकर श्रीष्ण के मथुरा जाने तक की कथा का वर्णन है।
   "सूरसागर किसी चली आती हुई गीतिकाव्य परंपरा का, चाहे वह मौखिक ही रही हो–पूर्ण विकास सा प्रतीत होता है।"–रामचन्द्र शुक्ल
2. **सूरसारावली–** सूरसारावली में सूरदास जी ने इस संसार को होली के खेल का रूपक माना है, जिसमें लीला पुरुष की अद्भुत लीलाएं निरन्तर चलती रहती है।

3. **साहित्य लहरी–** साहित्य लहरी सूरदास के दृष्टकूट पदों का संकलन है। जिसमें रस, अलंकार और नायिका भेद वाली रचना शैली है।

1.3 मीराबाई

परिचय

मीराबाई का जन्म जोधपुर के चोकड़ी 'मेड़ता' के समीप 'कुडकी' गाव में सन् 1498 ई में हुआ था। उनका विवाह चित्तौड़ के राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज से 13 वर्ष की उम्र में हुआ। बाल्यकाल में माता, विवाह के सात वर्ष पश्चात् पति, उसके बाद श्वसुर का देहांत हो गया। उनका संपूर्ण जीवन दुखों से घिरा रहा। लौकिक जीवन से पलायन कर, मीरा उस समय प्रचलित सती प्रथा का बहिष्कार कर, गृह त्यागकर, अजर–अमर स्वामी की चिरसुहागिनी बन श्रीकृष्ण की उपासना में समर्पित हो गयीं।

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोय।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोय।।

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की आध्यात्मिक प्रेरणा ने जिन कवियों को जन्म दिया, उनमें मीराबाई का नाम प्रसिद्ध है। उन्होनें राजकुल के परिस्थितियों के विरुद्ध जाकर संतों संग बैठ ,नाच–गाकर अपने कृष्ण भक्ति को परिपुष्ट किया। मीरा संत रैदास की शिष्या हैं।
मीराबाई हिन्दी और गुजराती दोनों प्रदेशों की कवयित्री स्वीकार की जाती हैं। उनकी उपासना माधुर्यभाव से युक्त तथा भाषा राजस्थानी मिश्रित, विशुद्ध साहित्यिक ब्रज भाषा है। कहीं–कहीं उनकी भाषा में पंजाबी, गुजराती, खड़ी बोली तथा पूर्वी का प्रयोग भी मिल जाता है।

रचनाएँ

मीराबाई की कुछ रचनाएँ प्रसिद्ध हैं–

गीत गोविन्द की टीका, नरसी जी का मायरा ,राग सोरठा के पद, मलाराग गोविंद, सत्य भामानु रुसणं, मीरा के गरवी, रुक्मणीमंगल, स्फुट पद। मीरा के स्फुट पदों का संकलन वर्तमान में 'मीराबाई की पदावली' के नाम से प्रकाशित है।

1.4 बिहारी

परिचय

रीतिकाल के प्रतिनिधि कवियों में बिहारी का नाम सर्वश्रेष्ठ है। इनका जन्म सन् 1595 ई. में ग्वालियर के पास वसुधा,गोविन्दपुर में हुआ। इनके पिता का नाम केशवराय था। इनकी बाल्यावस्था बुण्देलखण्ड में व्यतीत हुई, उसके बाद वे मथुरा में आ गये। बिहारी जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के दरबार में रहा करते थे। इनका देहावसान सन् 1663 में हुआ।

कहा जाता है कि बिहारी ने राजा जयसिंह को छोटी रानी के प्रेम से निकलकर राजकाज की रक्षा के लिए प्रेरित किया था–

नहिं पराग नहिं मधुर मधु,नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सों बंधयो,आगे कौन हवाल।।

बिहारी की बहुज्ञता का आलोचक भी लोहा मानते हैं। वे लोक ज्ञान, शास्त्र ज्ञान, काव्य, रीति आदि ज्ञान से युक्त थे। इनकी कविता शृंगार–रस से ओत–प्रोत है। इसमें नायक–नायिका के हाव–भाव, चेष्टाएँ पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं।

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं, नैननु ही सौं बात।।

रचनाएँ

बिहारी की भाषा शुद्ध ब्रज है ,तथा साहित्यिक गुणों से युक्त है। बिहारी की ख्याति का मूल आधार उनकी एक मात्र कृति **'बिहारी सतसई'** है। जिसमें 700 दोहे संग्रहित हैं। इस सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं कि "शृंगार रस के ग्रंथो में जितनी ख्याति और जितना मान 'बिहारी सतसई' का हुआ, उतना और किसी का नहीं। इसका एक–एक दोहा हिन्दी साहित्य में एक–एक रत्न माना जाता है।"

1.5 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

परिचय

आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 9 सितम्बर सन 1850 ई० को काशी में हुआ। उनके पिता का नाम गोपालचन्द्र 'गिरिधरदास' और माता पार्वतीदेवी थीं। बाल्यावस्था में ही माता पिता की छाया से ये वंचित हो गए थे। बनारस के क्वींस कॉलेज में कुछ समय तक वे अध्ययन कार्य किए।

भारतेन्दु ने समाज तथा साहित्य के लिए अपना अमूल्य योगदान दिया था। उन्होंने तीन सशक्त पत्रिका का सम्पादन किया तथा उस समय लेखकों का एक मण्डल भी बनाया। साथ ही उनको लिखने के लिए भी प्रेरित किया। उन्होंने सन् 1868 में 'कविवचन–सुधा', सन् 1873 में 'हरिश्चन्द्र मैग्जीन' जिसका नाम आगे चलकर 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' हो गया। 1874 में 'बाला बोधिनी' पत्रिकाएँ निकाली। लेखक मण्डल में पं० बालकृष्ण भट्ट, पं० अम्बिकादत्त व्यास, पं० राधाकृष्ण गोस्वामी, लाला श्री निवासदास तथा डॉ० जगमोहन सिंह सम्मिलित थे। भारतेन्दु जी 1873 में 'तदीय समाज ' की स्थापना किये।

भारतेन्दु जी का झुकाव कृष्ण लीला के गान की ओर था, फिर भी किसी प्रकार की साम्प्रदायिक कट्टरता का उनमें लेश मात्र अभाव था। भक्ति और शृंगार भावना का समन्वय उनके काव्य में पाया जाता है। हास्य व्यंग्य का छिटपुट समावेश उनके काव्य की विशेषता है। भारतेन्दु की अधिकांश कविता ब्रजभाषा में तथा कुछ कविताएँ खड़ी बोली में है। उर्दू में वे 'रसा' नाम से लिखते थे। वे कविता के छेत्र में नवयुग के अग्रदूत थे। उन्होंने अंग्रेजों की शोषण नीति का पुरजोर विरोध किया था।

भीतर–भीतर सब रस चुसे, हँसि–हँसि के तन–मन धन मुसे।
जाहिर बातन में अति तेज ,क्यों सखि सज्जन! नहिं अंगरेज।।

रचनाएँ

उनकी काव्य कृतियों की संख्या लगभग सत्तर है, जिनमें प्रेम–मालिका, प्रेम–सरोवर, गीत–गोविंदानंद, वर्षा विनोद, विनय प्रेम–पचासा, प्रेम–फुलवारी, वेदु–गीति आदि विशेष उल्लेखनीय है। दशरथ विलाप, फूलों का गुच्छा खड़ी बोली की रचना है।

इस प्रकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र साहित्य के सेवा करते–करते मात्र पैंतीस वर्ष की अवस्था में सन 1885 ई. में स्वर्ग सिधार गये।

1.6 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

परिचय

छायावाद के स्तंभ कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल में सन् 1896 ई० में हुआ तथा निधन 15 अक्टूबर सन् 1961 ई० को इलाहाबाद(प्रयागराज) में हुआ। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके पिता पं० रामसहाय उन्नाव जिले के निवासी थे, किंतु महिषादल में नौकरी करते थे। इनकी औपचारिक शिक्षा महिषादल में हुई। उन्होंने स्वाध्याय से संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया तथा संगीत व दर्शनशास्त्र के पठन में भी इनकी रुचि थी। निराला के ऊपर रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद की विचार धाराओं का विशेष प्रभाव था।

इनका पारिवारिक जीवन अनेक अभावों एवं विपत्तियों से पीड़ित था किंतु विषम परिस्थितियों के सम्मुख ये कभी भी झुके नहीं।

रचनाएँ

निराला की प्रमुख रचनाएँ हैं–
अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता नये पत्ते, राम की शक्तिपूजा,

1.7 मैथिलीशरण गुप्त

परिचय

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 1886 ई० में चिरगाँव जिला झाँसी में हुआ। ये द्विवेदी युग के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि के रूप में विख्यात थे। इनके पिता का नाम रामचरण था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में हुई तथा घर पर हिन्दी, संस्कृत, बांगला, मराठी, और अंग्रेजी के अच्छे ज्ञान प्राप्त किए। काव्य रचना की प्रेरणा गुप्त जी को महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्राप्त हुयी। मैथिली शरण गुप्त महावीर प्रसाद द्विवेदी को अपना गुरु स्वीकार किए हैं। गुप्त जी अपने जीवन काल में ही 'राष्ट्रकवि' के रूप में विख्यात हो गए थे।

गुप्त जी रामभक्त कवि हैं। अपने जीवन के आदर्श इन्होंने राम, बुद्ध और गाँधी से प्राप्त किया था। ये हमारे देश और युग के प्रतिनिधि कवि हैं। इन्होंने भारतीय जीवन को समग्रता में समझने और प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया है।

गुप्त जी की काव्य की भाषा विशुद्ध खड़ी बोली है। उनकी भाषा पर संस्कृत का प्रभाव स्पष्ट है।

गुप्त जी के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें अश्लीलता का अभाव है तथा हिंदू–सभ्यता और संस्कृति को उन्होंने अत्यंत उज्ज्वल रूप में संसार के सामने रखा है। नारी की गरिमा को वे कभी भी विस्मृत नहीं करते।

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखो में पानी।।

साहित्य के साधक तथा राष्ट्रभक्त कवि मैथिली शरण गुप्त का देहांत 1964 ई० में हुआ।

रचनाएँ

इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं–
साकेत महाकाव्य, भारत–भारती, जयद्रथ वध, पंचवटी, झंकार, यशोधरा, द्वापर, विष्णुप्रिया आदि।

1.8 हरिवंश राय बच्चन

परिचय

हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवम्बर 1907 ई० को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू में हुई। इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम०ए० किया। तत्पश्चात काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से बी०टी० का प्रमाण–पत्र प्राप्त किया। 'बच्चन' नाम इनके माता–पिता पुकारने के लिए प्रयोग करते थे किन्तु बाद में बच्चन जी ने अपना उपनाम बना लिया। बच्चन कुछ समय तक विश्वविद्यालय में प्राध्यापक पद पर प्रतिष्ठित थे, तत्पश्चात् भारतीय विदेश सेवा में चले गए। इन्होंने विभिन्न देशों का भ्रमण किया। बच्चन काव्य पाठ के लिए विख्यात कवि हैं। इनकी कविताएँ सहज और संवेदनशील हैं। इनकी कविता मे व्यक्ति–वेदना, राष्ट्र चेतना तथा जीवन दर्शन के स्वर मिलते हैं जो मानव को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। इन्होंने आत्मविश्लेषण पूर्ण काव्य की रचना की। सामाजिक असमानता, और कुरीतियों, राजनैतिक जीवन के ढोंग पर इन्होंने व्यंग्य किया है। कविता के अतिरिक्त बच्चन ने आत्मकथा भी लिखी है जो हिन्दी गद्य साहित्य की अमूल्य कृति है।

बच्चन की प्रतिभा मूलतः गीतात्मक है, इन्होंने खड़ी बोली में रचना की। बच्चन 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार, 'सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार' और 'सरस्वती सम्मान' से सम्मानित थे। इनका परलोकवास सन् 2003 में हुआ।

रचनाएँ

आत्मकथा– क्या भूलूं क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर–फिर
काव्य संग्रह– मधुशाला, मधुबाला और मधुकलश

1.9 कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

परिचय

प्रसिद्ध रिपोर्ताज लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई 1906 ई० को देवबन्द, सहारनपुर में एक साधारण ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वे मृदु स्वभाव के थे। उन्होंने अपने एक संस्मरण में अपने माता–पिता के स्वभावगत विशेषताओं को बताते हुए लिखा है– **"पिताजी दूध मिश्री थे, तो माँ लाल मिर्च।"** परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उनकी स्कूली शिक्षा–दीक्षा भली–भाँति नहीं हो पायी। उन्होंने स्वाध्याय से ही संस्कृत, अंग्रेजी आदि विषयों का गहन अध्ययन किया।

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जब 'खुर्जा संस्कृत विद्यालय' के छात्र बने, तब राष्ट्र नेता मौलाना आसिफ अली के भाषण से प्रभावित होकर परीक्षा त्याग दी और स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और उन्होंने अपना पूरा जीवन देश सेवा को समर्पित कर दिया। इस दृष्टि से पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका योगदान उल्लेखनीय है। 9 मई 1955 में इनका देहांत हो गया।

रचनाएँ

ललित निबंध– बाजे पायलिया के घुंघरू, क्षण बोले कण मुस्काएँ
संस्मरण– दीप जले शंख बजे।
रेखाचित्र– माटी हो गयी सोना, नई पीढ़ी के विचार, भूले बिसरे चेहरे
लघुकथा– धरती के फूल, आकाश के तारे
सम्पादन– नवजीवन, विकास, ज्ञानदेव

1.10 महाश्वेता देवी

परिचय

पत्रकार, लेखिका, साहित्यकार और आंदोलनकारी के रूप में पहचानी जाने वाली महाश्वेता देवी का जन्म सन 1926 को ढाका (बांग्लादेश) में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा ढाका और कोलकाता में हुई। महाश्वेता देवी के पिता मनीष घटक एक कवि और उपन्यासकार थे। उनकी माँ धारित्री देवी भी एक लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता थीं। यही कारण है कि बचपन से ही साहित्य का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे मूलतः बांग्ला भाषा की लेखिका रही हैं, बावजूद इसके उन्हें बांग्ला के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी विशेष सम्मान प्राप्त हुआ।

महाश्वेता देवी ने विश्वभारती विश्वविद्यालय शांति निकेतन से अंग्रेजी विषय के साथ बी०ए० पास किया। फिर उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम०ए० अंग्रेजी में ही किया। इसके पश्चात एक शिक्षक, पत्रकार के रूप में अपना जीवन प्रारंभ किया। बाद में कलकत्ता विश्वविद्यालय में अंग्रेजी व्याख्याता के पद पर नियुक्त हो गयीं।

महाश्वेता देवी अपने लेखन के साथ ही स्त्री अधिकारों, दलितों और आदिवासियों के हितों के लिए संघर्ष करती रहीं। महाश्वेता देवी ने सामाजिक बदलाव के लिए हथियार के रूप में अपनी लेखनी का प्रयोग किया। मुख्यतः बिहार, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के आदिवासियों के हितों के लिए संघर्षशील रहीं। महाश्वेता देवी को उनकी साहित्यिक और सामाजिक सेवाओं के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें साहित्य अकादमी, ज्ञानपीठ, रेमन मैग्सेसे, पद्मश्री आदि प्रमुख हैं।

रचनाएँ

इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं–
झाँसी की रानी, नटी, जली थी अग्निशिखा, जँगल के दावेदार, हजार चौरासी की माँ, चोट्टी मुंडा और उसका तीर, अग्नि गर्म, अक्लाँत कौरव, दौलति और अमृत संचय।

1.11 सुदर्शन

परिचय

सुदर्शन का वास्तविक नाम बद्रीनाथ भट्ट था। इनका जन्म सन 1895 ई० में पंजाब स्थित सियालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था। मुंशी प्रेमचन्द और उपेन्द्रनाथ अश्क की तरह सुदर्शन ने भी हिन्दी और उर्दू में अपनी लेखनी चलाई। प्रेमचन्द की ही भांति ये भी उर्दू से हिन्दी में आए थे। इनका नाम भी प्रेमचन्द संस्थान के लेखकों विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक', राजा राधिका रमण सिंह, भगवती प्रसाद बाजपेई के साथ लिया जाता है। कक्षा छह में ही उन्होंने अपनी पहली कहानी लिखी थी। कहानी के अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास, नाटक, जीवन, बाल साहित्य, धार्मिक साहित्य, गीत आदि भी लिखे हैं। इन्होने सामान्यतया अपनी सभी प्रमुख कहानियों में समस्याओं का आदर्शवादी समाधान प्रस्तुत किया है। इन्होने 'जाट गजट' का सम्पादन भी किया है। ये आर्य समाज से भी जुड़े थे क्योंकि आर्य समाज के केन्द्र में भी समाज सुधारवादी दृष्टिकोण ही प्रमुख था।

सुदर्शन की भाषा सरल, स्वाभाविक, प्रभावोत्पादक और मुहावरेदार है। लाहौर से प्रकाशित होने वाली उर्दू पत्रिका 'हजार दास्ताँ' में इनकी कई कहानियाँ छपीं। इनकी पहली कहानी 'हार की जीत' सरस्वती पत्रिका में 1920 में प्रकाशित हुई थी। साहित्य सृजन के साथ ही कई फिल्मों के गीत और पटकथा लेखन के साथ ही फिल्म निर्देशन का काम भी किया। 1967 में इनका देहावसान हो गया था।

रचनाएँ

इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—
पुष्पलता, सुप्रभात, परिवर्तन, पनघट, नगीना, भागवन्ती आदि।

1.12 प्रेमचन्द

परिचय

कहानी और उपन्यास के सम्राट धनपत राय श्रीवास्तव जो 'प्रेमचन्द' के नाम से जाने जाते हैं। इनका जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के लमही नामक गाँव में हुआ था। माता का नाम आनन्दी देवी तथा पिता का नाम मुंशी अजबराय था। जब ये आठ वर्ष के थे तब माताजी का स्वर्गवास हो गया। पन्द्रह वर्ष की आयु में पिताजी ने इनका विवाह करा दिया। साहित्य के धनी इस व्यक्तित्व को गरीबी, अभाव, शोषण तथा उत्पीड़न जैसी प्रतिकूल परिस्थितियाँ इनका साहित्य के प्रति लगाव को कम न कर सकीं। प्रारम्भ में इनके उपन्यास उर्दू में लिखे गए जिनका बाद में हिन्दी में अनुवाद हुआ। अतः इनकी भाषा में उर्दू का प्रयोग मिलता है।

प्रेमचन्द जी ने लगभग दर्जनों उपन्यास तथा तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं हैं। समाज सुधार तथा राष्ट्रीयता उनके रचनाओं के प्रमुख विषय रहे हैं। इस महान साहित्यकार, उपन्यास सम्राट की मृत्यु लंबी बीमारी के कारण 8 अक्टूबर 1936 को हुई थी।

रचनाएँ

इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—
दो बैलों की कथा, ईदगाह, कफन, गृह–डाह, मन्त्र, पूस की रात, आदि।

1.13 डॉ० हरिकृष्ण देवसरे

परिचय

डॉ० हरिकृष्ण देवसरे बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'पराग' के सम्पादक रहे हैं। देवसरे जी को बाल साहित्यकार के रूप में जाना जाता है। इन्होने बाल साहित्य के प्रत्येक विधा में कार्य किया। इनका जन्म मध्य प्रदेश के नागोद (सतना) में 9 मार्च 1940 को हुआ तथा इनकी मृत्यु 14 नवम्बर 2013 को हुई।

डॉ० हरिकृष्ण देवसरे सन् 1960 ई० से सन् 1984 ई० तक आकाशवाणी में रहे। इसके बाद इन्होनें स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ग्रहण करके सन् 1984 ई० से सन् 1991 ई० तक पराग मासिक पत्रिका के सम्पादक के रूप में कार्य किया। इनका शोध '**हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन**' बाल साहित्य पर आधारित प्रथम शोध प्रबन्ध है।

रचनाएँ

इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—
डाकू का बेटा, आल्हा ऊदल, शोहराब रुस्तम, महात्मा गाँधी, भगत सिंह, मील के पहले पत्थर, प्रथम दीपस्तम्भ, दूसरे ग्रहों के गुप्तचर, मंगल ग्रह में राजू, उडती तस्तरियाँ, आओ चंदा के देश चलें, स्वान यात्रा, लावेनी, घना जंगल, डॉट कॉम, खेल बच्चे का।

1.14 क्वेंटीन रेनाल्ड्स

परिचय

रेनाल्ड्स का जन्म 11 अप्रैल 1902 को द ब्रोक्स में न्यूयार्क नगर (संयुक्त राज्य अमेरिका) में हुआ था। इनकी पढ़ाई ब्रुकलिन और ब्राउन यूनिवर्सिटी मैनुअल ट्रेनिंग हाईस्कूल में हुई। 17 मार्च 1965 ई० को कैलीफोर्निया के फेयरफील्ड में ट्रेविस एयर फोर्स बेस अस्पताल में रेनाल्ड्स की कैंसर से मृत्यु हो गयी। यह एक लेखक और पत्रकार के रूप में ख्याति प्राप्त थे।

रचनाएँ

इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

द वाउन्डेड डोंट क्राई, लंदन डायरी, ड्रेस रिहर्सल और कोर्टरूम, वकील सैमुअल, लीबोविट्ज की जीवनी शामिल है।

स्व आकलन

(क) सत्य/असत्य का चयन कीजिए—

1. कबीर बहुत पढ़े—लिखे विद्वान थे। (सत्य/असत्य)
2. सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे। (सत्य/असत्य)
3. मधुशाला, मधुकलश रामधारी सिंह दिनकर की कविता है। (सत्य/असत्य)
4. मीरा कृष्ण—भक्त उपासिका थीं। (सत्य/असत्य)
5. बिहारी की भाषा ब्रज भाषा है। (सत्य/असत्य)
6. 'कविवचन सुधा' मैग्जीन के संपादक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं। (सत्य/असत्य)
7. निराला विद्रोह भाव के कवि हैं जिन्होंने कुकुरमुत्ता कविता लिखी है। (सत्य/असत्य)
8. मैथिली शरण गुप्त का जन्म काशी में हुआ। (सत्य/असत्य)
9. बच्चन की ''क्या भूलूँ क्या याद करूँ'' कविता संग्रह है। (सत्य/असत्य)

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(1) भारतेन्दु जी का जन्म तथा जन्म स्थान.................. (1850 काशी/1885 प्रयागराज)
(2) रामचरित मानस मे वर्णन है............................... (राम/कृष्ण/बुद्ध)
(3) 'साकेत' महाकाव्य में वर्णन है............................ (यशोधरा/उर्मिला)
(4) निर्गुण भक्त कवि...................................... (सूर/तुलसी/कबीर)

(ग) सुमेलित कीजिए—

रचना	रचनाकार
रामचरित मानस	बच्चन
बिहारी सतसई	निराला
मधुकलश	तुलसी दास
सूरसागर	बिहारी लाल
बीजक	कबीर दास
नरसी जी का मायरा	मैथिलीशरण गुप्त
राम की शक्ति पूजा	मीराबाई
भारत भारती	सूरदास

इकाई 2

गद्य, पद्य श्रुत सामग्री में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल प्रयोग

2.1- मुहावरा
2.2- लोकोक्ति
2.3- मुहावरों एवं लोकोक्तियों में अंतर

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु मुहावरों एवं लोकोक्तियों की समझ रखते हुए उनका वाक्य प्रयोग कर लेते हैं।
2. प्रशिक्षु मुहावरों और लोकोक्तियों में अंतर कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग आम बोलचाल की भाषा में करते हैं।
4. प्रशिक्षु बच्चों में मुहावरों और लोकोक्तियों का वाक्य में प्रयोग करने की क्षमता विकसित कर लेते हैं।

भाषा की आवश्यकता भावों एवं विचारों को संप्रेषित करने के लिए ही होती है। संसार के समस्त प्राणी अपने विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति के लिए किसी न किसी रूप में भाषा का प्रयोग करते हैं। प्रभावशील संप्रेषण भाषा की वह महत्वपूर्ण विशेषता है जो न केवल संप्रेषण को प्रभावशाली बनाती है, बल्कि भाषा प्रयोगकर्ता के व्यक्तित्व के बारे में भी जानकारी प्रदान करती है। बाल्मीकि कृत रामायण में राम, हनुमान के व्यक्तित्व के बारे में अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि– ''निश्चिय ही इन्होंने समूचे व्याकरण का कई बार स्वाध्याय किया है, क्योंकि बहुत सी बातें बोले जाने पर भी इनके मुँह से कोई अशुद्धि नहीं निकली। ये संस्कार से संपन्न, अद्भुत, अविलंबित तथा हृदय को आनंद प्रदान करने वाली कल्याणमयी वाणी का उच्चारण करते हैं। जिसके कार्य साधक दूत ऐसे उत्तम गुणों से युक्त हो, उस राजा के सभी मनोरथ दूतों की बातचीत से ही सिद्ध हो जाते हैं।''

उपर्युक्त कथन के आधार पर सहज ही समझा जा सकता है कि संप्रेषणीयता के गुणों से युक्त भाषा एवं कार्य सिद्धि में कितना सहज एवं सार्थक संबंध होता है। भाषा के इसी सम्प्रेषणीयता, प्रभावशीलता एवं सहजता को बढ़ाने वाले तत्वों के रूप में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का विशिष्ट स्थान माना जाता है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण विश्व की ऐसी कोई भाषा नहीं है, जिसमें किसी न किसी रूप में लोकोक्तियों और मुहावरों की उपस्थिति न दिखाई पड़ती हो। संस्कृत, पाली, ग्रीक, लैटिन, अरबी, फारसी सभी भाषाओं में इनकी उपस्थिति देखी जा सकती है। भले ही संस्कृत भाषा में मुहावरा अपने यथावत रूप में न पाया जाता हो, परंतु रूढ़ि, लक्षणा और अलंकार के अंतर्गत अनेक ऐसी अभिव्यक्तियाँ प्राप्त होती हैं, जिन्हें मुहावरों के रूप में देखा जा सकता है।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. वाक्य छोटे सरल और स्पष्ट होने चाहिए।
2. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ स्पष्ट एवं व्यवस्थित होने चाहिए ।
3. विराम चिह्नों का उचित प्रयोग हो।
4. भाषा का चयन सही होना चाहिए।
5. परिवेश से जुड़े मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग होना चाहिए।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षु को अत्यंत सरल और परिचित विषय पर ही चर्चा करनी चाहिए।
2. प्रशिक्षु को कक्षा–वर्ग के बच्चों के स्तर का ध्यान रखना चाहिए।
3. विषय रोचक, सरल, सरस एवं बोधगम्य होना चाहिए।
4. सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान करना चाहिए।

गतिविधि

> **गतिविधि का नाम : कहानी सुनिए, मुहावरे चुनिए**
> **समय :** 5–7 मिनट
> **सहायक सामग्री :** कहानी लिखा हुआ चार्ट
> **उद्देश्य:** विषय वस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

प्रशिक्षक चार्ट पर लिखी कहानी को प्रदर्शित करेंगे और प्रशिक्षुओं को कहानी पढ़ने के लिए कहेंगे।

काशीपुर गाँव में सोनू नाम का लड़का रहता था। सोनू पूरे परिवार के **आँख का तारा** था। वह अपने दादा के लिए मानो **नाक का बाल** ही था। वह बहुत शरारती था। वह सबकी **नाक में दम कर** देता था। एक बार वह स्कूल से घर आते समय सबकी **आँख बचाकर** **नौ दो ग्यारह हो** गया। सोनू के पिता उसको ढूंढने के लिए **दर–दर भटक** रहे थे।

उधर सोनू गांव से सटे जंगल में पहुँचा। शाम हो रही थी। भूख के मारे उसके **पेट में चूहे कूद** रहे थे। वह जंगल के सूने वातावरण को देख **डर से अधमरा** हो रहा था। वह **उलटे पैर** अपने घर की तरफ सरपट भागा और हाँफते–हाँफते घर पहुँचा। तब जाकर उसके **जान में जान** आयी। उसका परिवार उसे देखकर **भाव–विभोर हो** गया। उसको देखकर उसकी मां के आंख में **खुशी के आँसू आ** गए। माँ ने उसे **हृदय से लगा** लिया। पिता ने कहा चलो **अंत भला तो सब भला।**

कहानी पठन के बाद प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से कुछ प्रश्न पूछेंगे–

प्रशिक्षक– प्रस्तुत कहानी में कुछ वाक्य रेखांकित है। आप इन रेखांकित वाक्यों को क्या कहते हैं?

संभावित उत्तर– .... ।

इसके बाद प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को मुहावरों एवं लोकोक्तियों की पहचान एवं उनकी उपयोगिता के बारे में बताएँगे।

प्रस्तुतीकरण

2.1 मुहावरा

मुहावरा मूलतः अरबी का शब्द है और फारसी तथा उर्दू से होता हुआ हिन्दी में आया है। मुहावरों का भाषा–सौष्ठव की दृष्टि से बहुत महत्त्व है । मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सजीवता आती है। लाक्षणिक प्रयोगों के द्वारा भावों का प्रकाशन अधिक सुंदर तथा सांकेतिक हो जाता है। मुहावरे लाक्षणिक प्रयोग से युक्त होने के कारण भाषा में सौंदर्य, माधुर्य एवं विलक्षणता की सृष्टि करते हैं। अभिव्यक्ति कौशल को उन्नत एवं प्रभावी बनाने वाले इस अवयव के बारे में अनेक विद्वानों ने अपने–अपने विभिन्न मत व्यक्त किए हैं; जिनमें से कुछ प्रमुख मत निम्नवत हैं–

> "मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है बातचीत करना अथवा प्रश्न का उत्तर देना। परन्तु पारिभाषिक हो जाने के कारण मुहावरे का प्रयोग विलक्षण अर्थ में किया जाता है। मुहावरे का निर्माण किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा नहीं होता है। वाक्यांश होने के कारण मुहावरे में उद्देश्य और विधेय का अभाव रहता है।"
>
> **–श्री ब्रह्मस्वरूप दिनकर शर्मा**

''प्रायः शारीरिक चेष्टाओं, अस्पष्ट ध्वनियों, कहानी और कहावतों अथवा भाषा के कतिपय विलक्षण प्रयोगों के अनुकरण या आधार पर निर्मित और अभिधेयार्थ से भिन्न कोई विशेष अर्थ देने वाले किसी भाषा के गठे हुए रूढ़–वाक्य, वाक्यांश अथवा शब्द इत्यादि को मुहावरा कहते हैं।''

–डॉ० ओमप्रकाश गुप्त

मुहावरे की उपर्युक्त परिभाषाओं को ध्यान में रखते हुए सामान्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है और उसे सर्वसाधारण की स्वीकृति मिल जाती है तो उसे मुहावरा कहते हैं। सापेक्षसत्ता, अपरिवर्तनशीलता तथा लक्ष्यार्थ की प्रधानता मुहावरे की प्रमुख विशेषता होती है।

महत्वपूर्ण मुहावरे उनका अर्थ एवं प्रयोग

(अक्षरा कक्षा 6 के मुहावरे)

- **मुहावरा– वायु वेग से उड़ना**
  अर्थ– बहुत तेज चलना
  प्रयोग– बाबा भारती का घोड़ा वायु वेग से उड़ता था।
- **मुहावरा– आँखों में चमक आना**
  अर्थ– प्रसन्न हो जाना
  प्रयोग– घोड़े को देखकर बाबा भारती की आँखों में चमक आ गई।
- **मुहावरा– दिल टूट जाना**
  अर्थ– अत्यधिक निराश होना
  प्रयोग– खड्ग सिंह के द्वारा धोखा खाने के बाद बाबा भारती का दिल टूट गया।
- **मुहावरा– मुँह मोड़ना**
  अर्थ– तिरस्कार करना
  प्रयोग– कुसुम की चोरी की आदत से सबने उससे मुँह मोड़ लिया।
- **मुहावरा– लट्टू होना**
  अर्थ– प्रशंसक होना
  प्रयोग– मोर का नृत्य देखकर मेरा दिल लट्टू हो गया।
- **मुहावरा– लोभ का जागना**
  अर्थ –लालची होना
  प्रयोग– सोने का हार देखकर रूपा के मन में लोभ जाग गया।
- **मुहावरा– आँखें बंद करना**
  अर्थ– अनदेखा करना
  प्रयोग– चोर की पिटाई देखकर लोगों ने आँखें बंद कर ली।
- **मुहावरा– राई का पर्वत करना**
  अर्थ– छोटी बात को बड़ा बनाना
  प्रयोग– मेला जाने की छोटी सी बात को सोहन ने राई का पर्वत बना दिया।
- **मुहावरा–सिर मारना**
  अर्थ– माथापच्ची करना
  प्रयोग–राजू ने सोनू से कहा इस काम पर क्यों सिर मार रहे हो?

- **मुहावरा–मन भारी होना**
  अर्थ– दुःखी होना या विचलित होना
  प्रयोग– दादाजी अब नहीं रहे इतना सुनकर शिवा का मन भारी हो गया।
- **मुहावरा– सड़क छानना**
  अर्थ– दर–दर भटकना
  प्रयोग– घर छोड़कर भाग जाने पर राजू दिन–भर सड़क छानता रहा।

(दीक्षा कक्षा 7 के मुहावरे)

- **मुहावरा– दिन फिरना**
  अर्थ– दुःख के बाद सुख का समय आना।
  प्रयोग– रामू के पास कल तक कच्चा घर था, किंतु अब आलीशान महल में वह रह रहा है, यह सब दिन फिरने की बात है।

- **मुहावरा – किला टूटना**
  अर्थ– तबाह या बर्बाद हो जाना
  प्रयोग– अचानक मंदी आते ही व्यापारियों पर किला टूट गया।
- **मुहावरा– सिर मुड़ाते ओले पड़ना**
  अर्थ– काम की शुरुआत में ही बाधा आना
  प्रयोग– राहुल अपने विद्यालय में क्रिकेट मैच प्रतियोगिता खेलने से पहले ही बीमार पड़ गया, यह तो सिर मुड़ाते ओले पड़ गये।
- **मुहावरा – ईंट से ईंट बजाना**
  अर्थ– करारा जबाब देना या सब कुछ नष्ट कर देना।
  प्रयोग– 1971 में भारत ने पाकिस्तान की ईंट से ईंट बजा दी।
- **मुहावरा – छक्के छुड़ाना**
  अर्थ– बुरी तरह हराना।
  प्रयोग– रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए।
- **मुहावरा– अंगारों पर चलना**
  अर्थ– जान बूझ कर हानि का काम करना।
  प्रयोग– तुम स्वयं अंगारों पर मत चलो।
- **मुहावरा– खेत रह जाना**
  अर्थ– युद्ध में मारा जाना।
  प्रयोग– यूक्रेन और रूस के युद्ध में बहुत आदमी खेत रहे।
- **मुहावरा– टस से मस न होना**
  अर्थ– कहने का कुछ भी असर न होना।
  प्रयोग– राजू को चलने के लिए कहा गया पर वह टस से मस नहीं हुआ।
- **मुहावरा– अवसर की राह देखना**
  अर्थ– मौका देखना
  प्रयोग– मनुष्य को अवसर की राह देखते रहना चाहिए।
- **मुहावरा– मुँह फुलाना**
  अर्थ– गुस्सा होना या नाराज होना
  प्रयोग– रजनी को चॉकलेट न मिलने से उसका मुंह फूला है।

- **मुहावरा– हाथ बटाना**
  अर्थ– सहयोग करना
  प्रयोग– गीता अपनी माँ का हाथ बटाती है।
- **मुहावरा– पेट में चूहे कूदना**
  अर्थ– बहुत तेज भूख लगना
  प्रयोग– दोपहर होते–होते बच्चों के पेट में चूहे कूदने लगते हैं।

(प्रज्ञा कक्षा 8 के मुहावरे)

- **मुहावरा– कोहराम मचाना**
  अर्थ– खूब रोना पीटना
  प्रयोग– रमेश की मौत की खबर आते ही उसके घर में कोहराम मच गया।
- **मुहावरा– हृदय का खिलना**
  अर्थ– बहुत अधिक प्रसन्नता से भर जाना
  प्रयोग– परीक्षा में उत्तीर्ण होने की खबर सुनकर अमित का हृदय खिल उठा।
- **मुहावरा– चिंता का मारा होना**
  अर्थ– परेशानी में होना
  प्रयोग– पिताजी की तबीयत खराब हो जाने के कारण श्याम चिंता के मारे सो नहीं पा रहा है।
- **मुहावरा– रहस्य खोलना**
  अर्थ– भेद बता देना
  प्रयोग– बल प्रयोग करते ही अपराधी ने पुलिस के सामने अपने सारे रहस्य खोल दिए।
- **मुहावरा– हतबुद्धि होना**
  अर्थ– कुछ समझ में न आना
  प्रयोग– 1971 के युद्ध में भारतीय सैनिकों के आक्रमण के आगे पाकिस्तानी सैनिक हतबुद्धि हो गए।
- **मुहावरा– डर से अधमरा होना**
  अर्थ– अधिक डर जाना
  प्रयोग– जंगल में अचानक शेर के आ जाने से सीमा डर से अधमरी हो गई।
- **मुहावरा– छाती ठोक कर आगे बढ़ना**
  अर्थ– हिम्मत दिखाना
  प्रयोग– अचानक घर में लगी आग को बुझाने के लिए रमेश छाती ठोक कर आगे बढ़ा।
- **मुहावरा– रास्ता साफ होना**
  अर्थ– रुकावट न होना
  प्रयोग– अमित की नौकरी लगते ही उसकी शादी में आने वाली रुकावटें दूर हो गई अर्थात् रास्ता साफ हो गया।
- **मुहावरा– रंग चढ़ना**
  अर्थ– असर होना
  प्रयोग– देश भक्तों पर महात्मा गाँधी का ऐसा रंग चढ़ा कि उन्होंने हिंसा का रास्ता छोड़ दिया।
- **मुहावरा– दिल को बाँध देना**
  अर्थ– दिल काबू कर लेना
  प्रयोग– रमेश अपने व्यवहार से सब का दिल बाँध लेता है।

गतिविधि–1

❖ प्रशिक्षक कक्षा के सभी प्रशिक्षुओं को दो समूहों में बाँटकर लोकोक्तियों/मुहावरों वाले कार्ड एवं उनके अर्थ लिखे कार्ड को दोनों समूहों में बाँट देंगे।

❖ अब क्रमशः एक–एक प्रशिक्षु को बुलाकर उनके कार्ड पर लिखे शब्द/मुहावरा/लोकोक्ति को पूछेंगे तथा कक्षा के सभी प्रशिक्षुओं को उसका अर्थ बताते हुए अर्थ वाले कार्ड के प्रशिक्षु के साथ जोड़ी बनाने को कहेंगे–

गतिविधि का नाम : कहानी सुनिए, मुहावरे चुनिए

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : लोकोक्तियों/मुहावरों एवं उनका अर्थ लिखे कार्ड

उद्देश्य: विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

कलेजा ठंडा होना → मन में शांति होना

एक पंथ दो काज → एक साथ दो लाभ

नाक में दम करना → परेशान करना

दूर का ढोल सुहावना → दूर से किसी चीज का अच्छा लगना

हमारे परिवेश में कुछ ऐसे मुहावरे भी प्रचलन में हैं जिनमें मानव अंगों का प्रयोग किया गया है। ऐसे कुछ मुहावरे निम्नलिखित हैं–

➢ **अँगूठा**

1. अँगूठा चूमना– मिथ्या प्रशंसा करना
2. अँगूठा दिखाना– देने से अस्वीकार करना या मना करना।

➢ **आँसू**

1. आँसू पोंछना– धीरज बधाना
2. आँसू पी जाना– दुःख को छिपा लेना

➢ **आँख**

1. आँखें चार होना– देखा देखी होना/प्रेम होना
2. आँखों में गड़ना– अत्यंत अप्रिय होना

➢ **उँगली**

1. कानों में उँगली देना– किसी बात को सुनने की चेष्टा ना करना
2. पाँचो उँगलियाँ घी में होना– सब प्रकार से लाभ–ही–लाभ

➢ **ओठ**

1. ओठ चबाना– क्रोध करना
2. ओठ सूखना– प्यास लगना

➢ **कलेजा**

1. कलेजे से लगाना– प्यार करना
2. कलेजा ठंडा होना– संतोष होना

➢ **कान**

1. कान खोलना– सावधान करना
2. कानों में तेल डालकर बैठ जाना– बात सुनकर भी ध्यान न देना

➢ **खून**

1. खून खौलना– गुस्सा चढ़ना/क्रोधित हो जाना
2. खून सफेद हो जाना– बहुत डर जाना।

➢ **गाल**

1. गाल फुलाना– रूठना
2. गाल बजाना– डींग मारना

➢ **गर्दन**

1. गर्दन उठाना– प्रतिवाद करना
2. गर्दन पर छुरी फेरना– अत्याचार करना

➢ **दाँत**

1. दाँतो तले उँगली दबाना– दंग रह जाना
2. दाँत खट्टे करना– पस्त करना

➢ **नाक**

1. नाक कटना– इज्जत जाना/प्रतिष्ठा हनन
2. नाक में दम करना– तंग करना

➢ **हाथ**

1. हाथ फैलाना– याचना करना
2. हाथ धो कर पीछे पड़ना– जी जान से लग जाना

2.2 लोकोक्ति

लोकोक्ति शब्द मूलतः दो शब्दों से मिलकर बना है– लोक+उक्ति। लोक से तात्पर्य जनसाधारण से होता है तथा उक्ति से तात्पर्य कथन से है। इस प्रकार लोकोक्ति का अर्थ जन सामान्य में व्याप्त एवं स्वीकृत कथन से है। लोकोक्तियों में मनुष्य एवं समाज का अनुभव सिद्ध ज्ञान अभिव्यक्त हुआ है। इन लोकोक्तियों को ही विद्वानों ने मानवीय ज्ञान का सूत्र भी कहा है। इनमें अभिव्यक्त हुए इसी व्यावहारिक ज्ञान के कारण जन सामान्य द्वारा इनका व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। लोकोक्तियों को परिभाषित करते हुए कुछ प्रमुख विद्वानों के मत निम्नवत् हैं–

> "ऐसी अवसरोचित टिप्पणी को लोकोक्ति कहते हैं– जो बँधे हुए शब्दों में किसी वांछित या अवांछित स्थिति के संबंध में समाज के चिर संचित अनुभव, ज्ञान या दृष्टिकोण की परिचायक हो।"
>
> **–बदरीनाथ कपूर**

"लोकोक्तियाँ मानवीय ज्ञान के चोखे और चुभते हुए सूत्र हैं। अनंत काल तक धातुओं को तपाकर सूर्य राशि नाना प्रकार के रत्न–उपरत्नों का निर्माण करती है, जिनका आलोक सदा छिटकता रहता है, उसी प्रकार लोकोक्तियाँ मानवीय ज्ञान के घनीभूत पुंज हैं, जिनसे बुद्धि और अनुभव की किरणों से फूटने वाली ज्योति प्राप्त होती है।"

–डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल

लोकोक्ति के संबंध में व्यक्त की गई उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर सामान्य रूप से हम कह सकते हैं कि लोकोक्तियाँ लोक सामान्य में स्वीकृत पूर्ण अर्थ प्रदान करने वाली वे कथन होती हैं जो कि पौराणिक, ऐतिहासिक अथवा सामाजिक क्रिया–कलापों पर आधारित होती हैं तथा समाज को करणीय–अकरणीय का उपदेश प्रदान करने वाली होती हैं।

अभिव्यक्ति की दृष्टि से पूर्णता, चुटीलापन, संक्षिप्तता, अपरिवर्तनशीलता, तथा सामासिकता लोकोक्तियों की प्रमुख विशेषता होती है।

प्रमुख लोकोक्तियाँ

- **लोकोक्ति–** अधजल गगरी छलकत जाए
  अर्थ– थोड़ी विद्या, धन या बल होने पर इतराना।
- **लोकोक्ति–** अपनी–अपनी डफली, अपना–अपना राग
  अर्थ– परस्पर संगठन या मेल न रखना
- **लोकोक्ति–** आगे नाथ न पीछे पगहा
  अर्थ– अपना कोई न होना या घर का अकेला होना।
- **लोकोक्ति–** आप भला तो जग भला
  अर्थ– स्वयं अच्छे तो संसार अच्छा।
- **लोकोक्ति–** इतनी–सी जान, गज भर की जुबान
  अर्थ– छोटा होना पर बढ़–बढ़कर बोलना।
- **लोकोक्ति–** ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया
  अर्थ– कहीं सुख, कहीं दुःख।
- **लोकोक्ति–** उलटा चोर कोतवाल को डाँटे
  अर्थ– अपराधी ही पकड़ने वाले को डाँट लगाए।
- **लोकोक्ति–** ऊपर–ऊपर बाबा जी, भीतर दगाबाजी
  अर्थ– बाहर से अच्छा भीतर से बुरा।
- **लोकोक्ति–**एक पंथ दो काज
  अर्थ– एक कार्य करते समय दूसरा कार्य भी हो जाना।
- **लोकोक्ति–** एक तो करेला,दूजे नीम चढ़ा
  अर्थ– बुरे व्यक्ति का और भी बुरे व्यक्ति से संग होना।
- **लोकोक्ति–** ओछे की प्रीत बालू की भीत
  अर्थ– ओछे अर्थात् नीच व्यक्ति का प्रेम रेत की दीवार की भाँति क्षणिक (अस्थाई) होता है।
- **लोकोक्ति–** ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती
  अर्थ– अधिक कंजूसी से काम नहीं चलता।
- **लोकोक्ति–** कहे खेत की, सुने खलिहान की
  अर्थ– कहा कुछ जाए और समझा कुछ जाए।
- **लोकोक्ति–** खोदा पहाड़ निकली चुहिया
  अर्थ– कठिन परिश्रम का थोड़ा लाभ।

- **लोकोक्ति–** बगल में छोरा नगर में ढिंढोरा
  अर्थ– पास की वस्तु को दूर जाकर ढूँढना।
- **लोकोक्ति–** घर पर फूस नहीं, नाम धनपत
  अर्थ– गुण कुछ नहीं पर गुणी कहलाना।
- **लोकोक्ति–** घी का लड्डू टेढ़ा भला
  अर्थ– स्वाद का महत्व है बनावट का नहीं।
- **लोकोक्ति–** चोर की दाढ़ी में तिनका
  अर्थ– जो दोषी होता है वह खुद डरता रहता है।
- **लोकोक्ति–** तुम डाल–डाल तो हम पात–पात
  अर्थ– किसी की चाल को समझते हुए उससे बेहतर चाल चलना।
- **लोकोक्ति–** दूर का ढोल सुहावना
  अर्थ– दूर से कोई चीज अच्छी लगती है।
- **लोकोक्ति–** नौ की लकड़ी, नब्बे खर्च
  अर्थ– काम साधारण खर्च अधिक।
- **लोकोक्ति–** नाचे कूदे तोड़े तान ताको दुनिया राखे मान
  अर्थ– आडंबर दिखाने वाला मान पाता है।
- **लोकोक्ति–** बिल्ली के भाग्य से छींका (सिकहर) टूटा
  अर्थ– संयोग से अच्छा हो जाना।
- **लोकोक्ति–** भागते भूत की लँगोटी ही सही
  अर्थ–जाते हुए वस्तु में से जो मिल जाए वही बहुत है।
- **लोकोक्ति–** मानो तो देव नहीं तो पत्थर
  अर्थ– विश्वास ही फल दायक
- **लोकोक्ति–** रस्सी जल गई ऐंठन न गयी
  अर्थ– बुरी हालत में पड़कर भी अभिमान न त्यागना।
- **लोकोक्ति–** सब धान बाईस पसेरी
  अर्थ– अच्छे बुरे सबको एक समझना
- **लोकोक्ति–** साँप मरे पर लाठी न टूटे
  अर्थ– अपना काम हो जाए पर कोई हानि भी न हो।
- **लोकोक्ति–** हाथ कंगन को आरसी क्या
  अर्थ– प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता।
- **लोकोक्ति–** हाथी के दाँत दिखाने के और, खाने के और
  अर्थ– बोलना कुछ, करना कुछ।

गतिविधि

- ❖ प्रशिक्षक लोकोक्तियाँ लिखे हुए चार्ट को कक्षा में प्रस्तुत करेंगे और प्रशिक्षुओं को चार समूहों में बाँट देंगे।
- ❖ प्रशिक्षक प्रत्येक समूह को चार्ट पर लिखे लोकोक्तियों का प्रयोग करते हुए एक–एक कहानी लिखकर कक्षा में सुनाने के लिए कहेंगे। कहानी 200 शब्दों से अधिक ना हो।

गतिविधि का नाम : कहानी सुनिए, लोकोक्तियाँ चुनिए

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : लोकोक्तियाँ लिखा हुआ चार्ट

उद्देश्य: विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

2.3 मुहावरों एवं लोकोक्तियों में अंतर

मुहावरे और लोकोक्तियाँ अभिव्यक्ति के ऐसे मिलते–जुलते रूप हैं कि कई बार उनके एक होने का भ्रम उत्पन्न हो जाता है। इन दोनों का ही विकास लोक–जीवन के बीच होता है। दोनों का ही प्रयोग अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है, तथापि दोनों में कुछ अंतर भी होते हैं, जो कि निम्नलिखित हैं:–

मुहावरा	लोकोक्ति
1. मुहावरा वाक्यांश होता है, तथा वाक्य में प्रयुक्त होकर ही पूरा अर्थ देता है।	1. लोकोक्ति वाक्य होते हैं तथा अपना पूर्ण अर्थ रखते हैं। अपना अर्थ व्यक्त करने के लिए वाक्य में प्रयोग होने की अपेक्षा नहीं रखती हैं परंतु आवश्यकता के अनुसार वाक्य में प्रयोग की जा सकती हैं।
2. मुहावरे का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।	2. लोकोक्ति का स्वतंत्र प्रयोग होता है।
3. मुहावरे के अंत में प्रायः 'ना' प्रत्यय लगा रहता है, जैसे– होश उड़ना, बात बनाना, नौ दो ग्यारह होना आदि। मुहावरे का अंतिम पद अनिवार्य रूप से क्रियापद होता है।	3. लोकोक्ति के पीछे कोई घटना या कहानी छिपी होती है। लोकोक्ति के अंत में 'ना' प्रत्यय का लगा होना आवश्यक नहीं है।
4. मुहावरा पूरी तरह लक्ष्यार्थ पर आधारित होता है अर्थात् मुहावरे में शब्द अपना मूल अर्थ (वाच्यार्थ या अभिधार्थ) छोड़कर लक्ष्यार्थ का पोषक बन जाता है।	4. लोकोक्ति में अभिधार्थ एवं व्यंग्यार्थ दोनों होता है।
5. मुहावरा प्रायः अतिशयोक्ति पूर्ण कथन पर आधारित होता है। जैसे – अंगारों पर लोटना, छाती पर पत्थर रखना आदि।	5. लोकोक्ति स्वाभाविक कथन पर आधारित है। जैसे– कर भला तो हो भला, सबसे भली चुप आदि।
6. मुहावरा सामान्यतया नागर– जन द्वारा निर्मित होता है एवं प्रयोग किया जाता है।	6. लोकोक्ति ग्रामीण जन से संबंधित होती है।
7. सामान्यतः मुहावरा अधिक चुभने वाला नहीं होता है।	7. लोकोक्ति अधिक चुभती हुई होती है। जैसे– नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली चली हज को।
8. अनेक मुहावरे एकाधिक अर्थों में प्रयुक्त होते हैं।	8. लोकोक्तियाँ केवल एक अर्थ की व्यंजना करती हैं।
9. मुहावरे का लोकोक्ति के रूप में प्रयुक्त होना संभव नहीं है।	9. लोकोक्तियों का मुहावरों के रूप में प्रयुक्त होना संभव है। जैसे– 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' लोकोक्ति का प्रयोग मुहावरे के रूप में आचार्य रामचंद्र शुक्ल, चिंतामणि– भाग 1, पृष्ठ संख्या– 27 में लिखते हैं– जिस पर लोगों की अश्रद्धा होती है, उसके लिए व्यवहार के सब सीधे और सुगम मार्ग बंद हो जाते हैं– उसे या तो काँटों पर या ढ़ाई कोस नौ दिन में चलना पड़ता है।
10. वाक्य में प्रयुक्त होने पर बहुत बार मुहावरों में रूपांतर होता है।	10. लोकोक्ति में ऐसे किसी भी रूपांतर की संभावना नहीं होती है।

बोध परीक्षण

1. मुहावरों से आप क्या समझते हैं?
2. मुहावरों का भाषा में क्या महत्व है?
3. लोकोक्तियों से आप क्या समझते हैं?
4. लोकोक्तियों का भाषा में क्या महत्व है?
5. लोकोक्ति एवं मुहावरों में क्या अंतर है?

समेकन

मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को व्यक्त करने के लिए किसी न किसी भाषा का प्रयोग अनिवार्य रूप से करता आया है चाहे वह भाषा मौखिक हो या लिखित। भाषा के माध्यम से ही हम अपने भावों और विचारों को दूसरों से साझा करते हैं तथा दूसरों के भावों को समझते भी हैं। इन्हीं भावों एवं विचारों को प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग प्राचीन काल से ही होता रहा है। मुहावरे और लोकोक्तियाँ लोक जीवन के अनुभवजन्य ज्ञान का संचित कोश हैं। भाषा शिक्षण के अंतर्गत मुहावरे एवं लोकोक्तियों को जन श्रुत सामग्री या श्रुत सामग्री के नाम से जाना जाता है। प्रायः मुहावरे एवं लोकोक्तियों का ज्ञान हम श्रुत सामग्री के द्वारा ही प्राप्त करते हैं; जो हमारे शब्द भंडार को समृद्ध करने के साथ ही हमारी वाणी को अधिक प्रभावशाली भी बनाते हैं।

सामान्यतया हम कह सकते हैं कि मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भाषा में रोचकता एवं प्रभावशीलता उत्पन्न करने या लाने के लिए किया जाता रहा है। हमेशा से ही मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग वाक्य को पुष्ट करने के लिए अथवा वाक्य की उपयोगिता को सिद्ध करने के लिए जन–सामान्य द्वारा किया जाता रहा है।

स्व आकलन

1. सही मिलान कीजिए–

निर्दोष होना	प्रतिष्ठा बढ़ाना
कान भरना	मुसीबत में थोड़ी सहायता ही बहुत है
पेट में चूहे दौड़ना	भाग जाना
नौ दो ग्यारह होना	आश्चर्यचकित होना
चार चाँद लगाना	शिकायत/चुगली करना
डूबते को तिनके का सहारा	बहुत भूख लगना
आँखों में चमक आना	दूध का धुला

2. निम्नलिखित लोकोक्तियों को पूरा कीजिए–

(क) खोदा ....निकली..................

(ख) आमदनी.....................खर्चा........................

(ग) ऊँची.........................फीका.......................

(घ) इतनी सी...................गजभर की.................

(च) ....के ब्याह पर...................का गीत

3. मुहावरों एवं लोकोक्तियों की पहचान करते हुए उनकी अलग–अलग सूची बनाइए–

- आँख का तारा होना
- आम के आम गुठलियों के दाम
- ऊँट के मुँह में जीरा
- एक और एक ग्यारह होना
- बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद
- मगरमच्छ के आँसू बहाना
- भैंस के आगे बीन बजाना
- ईंट से ईंट बजाना
- सूर्य को दीपक दिखाना
- नौ दो ग्यारह होना

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आग बबूला होना का क्या अर्थ है?
(क) जलना (ख) क्रोधित होना
(ग) धोखा देना (घ) मार डालना
2. 'आँखों का तारा होना' मुहावरे का सही अर्थ क्या है?
(क) दुश्मन होना (ख) मित्र होना
(ग) प्रिय होना (घ) मित्र नहीं होना
3. ऊँट के मुँह में. ....।
(क) जीरा (ख) सौंफ
(ग) चीनी (घ) राई
4. 'छाती पर साँप लोटना' मुहावरा किस अर्थ में आता है?
(क) क्रुद्ध होना (ख) ईर्ष्या करना
(ग) संकट में पड़ना (घ) भयभीत होना।
5. 'हार जाना' यह अर्थ किस मुहावरा से संबंधित है?
(क) पीठ दिखाना (ख) अंधों में काना राजा
(ग) घाट लगाना (घ) कमर कसना
6. एक हाथ से ताली नहीं बजती का क्या अर्थ है।
(क) झगड़ा दोनों ओर से होता है।
(ख) एक आदमी से काम नहीं चलता।
(ग) दोस्ती दोनों ओर से होती है।
(घ) कोई नहीं।
7. मुँह में राम बगल में. ....।
(क) चाकू (ख) कटारी
(ग) छूरी (घ) भाला
8. 'लोकोक्ति' किन शब्दों के मेल से बनी है ?
(क) लो़+कोक्ति (ख) लोको़ + क्ति
(ख) लोक + उक्ति (घ) ल + ओकोक्ति

9. एक मछली सारे तालाब को ....।
   (क) अच्छा करती है (ख) गंदा करती है
   (ग) सुखा देती है (घ) साफ करती है।
10. 'मात्र दिखावा' अर्थ को व्यक्त करने वाले 'लोकोक्ति' को चुनिए।
   (क) ऊँची दुकान, फीके पकवान
   (ख) आगे कुआँ, पीछे खाई ।
   (ग) अंगूर खट्टे हैं।
   (घ) चिराग तले अंधेरा।
11. 'आँख की किरकिरी होने' का अर्थ है–
   (क) अप्रिय लगना (ख) बहुत प्रिय होना
   (ग) कष्टदायक होना (घ) धोखा देना
12. 'आँख एक नहीं कजरौटा दस–दस' लोकोक्ति का क्या अर्थ है?
   (क) व्यर्थ आडंबर (ख) आंख में काजल लगाना
   (ग) आंख की देखभाल करना (घ) लाइलाज बीमारी
13. 'अग्नि परीक्षा देना' का अर्थ है–
   (क) कठोर तप करना (ख) साहसपूर्वक सामना करना
   (ग) दृढ़ निश्चय करना (घ) कठिन परिस्थिति में पड़ना
14. 'कच्चे घड़े पानी भरना' का अर्थ है–
   (क) कमजोर से मदद की अपेक्षा करना (ख) ठीक ढंग से कम न करना
   (ग) कठिन काम करना (घ) मूर्खतापूर्ण काम करना
15. 'उन्नीस–बीस होना' का अर्थ है –
   (क) बहुत कम अंतर होना (ख) बहुत अंतर होना
   (ग) हिसाब जोड़ना (घ) भाग जाना

विचार विश्लेषण

1. मुहावरों एवं लोकोक्तियों के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. 'आकाश से तारे तोड़ लेना' मुहावरे का अर्थ बताते हुए आप अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए।
3. 'खाने के दाँत और दिखाने के और' कहावत को स्पष्ट करते हुए वाक्य प्रयोग कीजिए।
4. 'पूरी तरह से मना कर देना' इसके लिए सटीक मुहावरा है–
   (क) अंधे की लकड़ी
   (ख) अक्ल का दुश्मन होना
   (ग) अँगूठा दिखाना
   (घ) अक्ल पर पत्थर पड़ना
5. 'औंधी खोपड़ी' मुहावरे का अर्थ लिखिए।

प्रोजेक्ट कार्य

1. मुहावरे एवं लोकोक्ति का प्रयोग करते हुए कहानी लिखिए।
2. चित्रों का प्रयोग करते हुए मुहावरों/लोकोक्तियों को लिखिए।
3. अपने स्थानीय लोकोक्तियों/मुहावरों का 10–10 का संकलन तैयार कीजिए।

इकाई 3

राष्ट्रीय पर्वों, मेला, त्योहार जैसे विषयों पर अपने शब्दों में गद्य अथवा पद्य में स्वतंत्र लेखन

3.1- राष्ट्रीय पर्व पर स्वतंत्र लेखन
3.2- गणतंत्र दिवस
3.3- होली
3.4- दीपावली
3.5- कुम्भ मेला

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु राष्ट्रीय पर्वों, मेलों, एवं त्योहारों से परिचित होते हैं।
2. प्रशिक्षु राष्ट्रीय पर्वों एवं त्योहारों में अंतर कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु राष्ट्रीय पर्वों, मेलों एवं त्योहारों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व को व्यक्त करते हैं।
4. प्रशिक्षु अपने सांस्कृतिक एवं सामाजिक वातावरण को समझते हैं।
5. प्रशिक्षु राष्ट्रीय पर्वों, त्योहारों एवं मेलों से संबंधित विषय पर निबंध लेखन कर लेते हैं।

मनुष्य अपनी भावाभिव्यक्ति मुख्यतया– बोलकर एवं लिखकर करता है। वाणी की तरह ही लेखन भी मनुष्य के व्यक्तित्व को उद्घाटित करता है। लेखन में मौलिक अभिव्यक्ति के लिए विषय की स्पष्ट समझ होना आवश्यक है। जब बच्चे अपने देश की सांस्कृतिक विरासत से परिचित होंगे, तभी उनके मन में, अपने मेलों, त्योहारों एवं राष्ट्रीय पर्वों के विषय को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न होगी। विषयवस्तु की संपूर्ण जानकारी के साथ उसके सामाजिक कारणों को समझते हुए निष्पक्ष ढंग से मौलिक अभिव्यक्ति ही स्वतंत्र लेखन कहलाता है। हमारे राष्ट्रीय पर्वों में प्रमुख– 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस), 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) एवं 2 अक्टूबर (गाँधी जयंती) आदि। जबकि धर्म के आधार पर हिंदुओं के प्रमुख त्योहारों में होली, दशहरा, एवं दीपावली तथा मुस्लिमों के प्रमुख त्योहारों में ईद, एवं बकरीद का स्थान है। वहीं ईसाइयों का बड़ा दिन (क्रिसमस डे) एवं सिखों का लोहड़ी का त्योहार प्रमुखता से मनाया जाता है।

इन त्योहारों को क्यों मनाया जाता है? इन त्योहारों के मनाये जाने का कारण क्या है? इन प्रश्नों का उत्तर जाने बिना इन विषयों पर लेखन नहीं किया जा सकता है। इन त्योहारों, पर्वों और मेलों के विषय की तथ्यात्मक जानकारी के बाद प्रस्तुतीकरण का ढंग ही महत्वपूर्ण होता है । प्रस्तुतीकरण का ढंग ही लेखन की स्वतंत्र अभिव्यक्ति को दर्शाता है। जैसे– यदि कुंभ मेले का वर्णन करना है तो कुंभ मेला कहाँ–कहाँ लगता है? उन स्थानों का उल्लेख करने के बाद, कुंभ मेला क्यों लगता है ? कुंभ मेले में स्नान का क्या महत्व है? भारतवर्ष में कुंभ मेले की परंपरा कब से प्रारंभ हुई? कुंभ मेले में दान–धर्म की परंपरा महाराज हर्षवर्धन से लेकर आज तक चलती आ रही है। कुंभ मेले में स्नान के बाद दान पुण्य का क्या महत्व है? इत्यादि प्रश्नों पर विचार करके इस विषय वस्तु पर स्वतंत्र लेखन किया जा सकता है। फिर मेले का वर्णन करना है तो शीर्षक का निर्धारण आवश्यक है। इससे सम्बन्धित शीर्षक अग्रलिखित हो सकते हैं– आँखों देखा कुंभ, मेरी कुंभ मेला यात्रा, कुंभ मेले के बहाने प्रयाग दर्शन, कुंभ और त्रिवेणी दर्शन, अर्द्ध कुंभ मेला, महाकुंभ मेला आदि।

इस प्रकार राष्ट्रीय पर्व, मेला तथा त्योहार जैसे विषयों पर अपने शब्दों में मौलिक अभिव्यक्ति या स्वतंत्र लेखन के लिए उस विषयवस्तु की तथ्यात्मक जानकारी के साथ–साथ तटस्थता, प्रश्नानुकूलता, निष्पक्षता का गुण होना आवश्यक है। उपर्युक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखकर ही विषय वस्तु का प्रभावशाली वर्णन हो सकेगा।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. वाक्य रचना में छोटे, सरल एवं स्पष्ट शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।

2. प्रकरण की शुरूआत स्थानीय मेले और त्योहारों से करनी चाहिए।
3. विराम चिह्नों का उचित प्रयोग हो।
4. भाषा का चयन सही होना चाहिए।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षु को अत्यंत सरल और परिचित विषय पर ही चर्चा करनी चाहिए।
2. प्रशिक्षु को बच्चों के स्तर का ध्यान रखना चाहिए।
3. विषय रोचक, सरल, सरस एवं बोधगम्य होना चाहिए।
4. सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान करना चाहिए।

भारतीय संस्कृति के मूल में उत्सव प्रियता के भाव समाहित हैं। हमारी संस्कृति अनेक रीति रिवाज एवं संस्कारों से संचालित है। हमारे संस्कार पीढ़ी–दर–पीढ़ी, जिन माध्यमों से आगे बढ़ते हैं, उनमें राष्ट्रीय पर्व, मेला तथा त्योहारों का विशिष्ट स्थान है। इन निबंधात्मक विषयों के स्वतंत्र लेखन में निम्न बातों पर ध्यान देना आवश्यक है–

- बुद्धि कौशल के प्रयोग द्वारा बुनियादी एवं रचनात्मक लेखन में प्रवीणता।
- संक्षिप्त लेखन शैली।
- विषय केंद्रित लेखन।
- व्यर्थ की बातें न आने पाए।
- वाक्यों में परस्पर घनिष्ठ संबंध हो।
- प्रथम और अंतिम वाक्य सारगर्भित और प्रभावोत्पादक हो।
- प्रथम वाक्य का वैशिष्ट्य ऐसा हो जिससे पाठक का कौतूहल जागृत हो।
- भाषा शुद्ध एवं शब्द चयन सार्थक हो।
- प्रसंगानुकूल कविताएं, लोकोक्ति एवं मुहावरों का प्रयोग।
- शब्द सीमा का ध्यान रखते हुए लेखन।

यदि भारत के राष्ट्रीय पर्व पर स्वतंत्र लेखन गद्य अथवा पद्य में करना है, तो निम्नलिखित विचार बिंदु पर हम लेखन केंद्रित करेंगे; जैसे–

- पर्व और उनके रूप।
- मनाने का ढंग।
- इन पर्वों का संदेश।

इसी प्रकार गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) पर स्वतंत्र लेखन करते समय निम्नलिखित विचार बिंदु पर ध्यान देना चाहिए–

- गणतंत्र क्या है?
- गणतंत्र दिवस का महत्त्व
- सरकारी कार्यक्रम।
- राजधानी में कार्यक्रम।
- परेड का भव्य दृश्य।
- राष्ट्रीय भावना का संचार।

यदि भारतीय त्योहारों पर स्वतंत्र लेखन करना है, तो निम्नलिखित विचार बिंदुओं के अंतर्गत वर्णन कर सकते हैं –

- भारत उत्सव का देश है।
- दशहरा
- दीपावली
- होली
- राष्ट्रीय उत्सव
- ईद
- अन्य उत्सव

इसी प्रकार होली एवं दीपावली विषय पर स्वतंत्र लेखन करते समय निम्नलिखित विचार बिंदुओं का प्रयोग किया जा सकता है–

होली

- आनंद एवं मस्ती का त्योहार होली
- प्रहलाद और होलिका प्रसंग
- होली मनाने का ढंग
- गुलाल और रंगों का खेल
- मस्ती ही मस्ती
- पकवान
- दोष

दीपावली

- भूमिका
- दीपावली मनाने का समय
- दीपावली मनाने का कारण
- व्यापार में वृद्धि
- गणेश–लक्ष्मी पूजन
- दोष

मेला(कुंभ मेला)

- कुंभ मेला क्या है?
- कुंभ मेले का महत्त्व।
- कब मनाया जाता है?
- कहाँ मनाया जाता है?
- कैसे मनाया जाता है?श्रद्धा–भक्ति का पर्व
- स्नान का महत्त्व

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक राष्ट्रीय पर्वों (स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस एवं गांधी जयंती) एवं मेला से संबंधित चित्र/स्लाइड/वीडियो को प्रशिक्षुओं को दिखाएँगे एवं पूछेंगे कि चित्र/वीडियो/स्लाइड में क्या दिख रहा है? लोग क्या कह रहे हैं? चित्र किस आयोजन/पर्व से संबंधित है इत्यादि। इसके बाद प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से उन चित्रों से संबंधित कुछ वाक्य लिखने को कहेंगे।

गतिविधि का नाम : कहानी सुनिए, मुहावरे चुनिए

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : कहानी लिखा हुआ चार्ट।

उद्देश्य– विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

पद्य में स्वतंत्र लेखन के लिए बच्चों को राष्ट्रीय पर्व, त्योहार एवं मेले से संबंधित कुछ शब्द एवं संकेत बिंदु दिए जा सकते हैं, जिनकी सहायता से बच्चे अपनी कल्पनाशक्ति के द्वारा शब्द संयोजन कर कविता का निर्माण कर सकें। कविता में लय, तुक, ताल का ध्यान रखते हुए मूल विषय वस्तु की सारी विशेषताएँ काव्य पंक्तियों में लक्षित होनी चाहिए; जैसे– दशहरा को कविता के माध्यम से प्रस्तुत करना है तो कुछ शब्द– राम, रावण, दस सिर, धनुष–बाण, धर्म, अधर्म, सत्य, असत्य, झांकी, रथ, रोशनी इत्यादि बच्चों को दे सकते हैं। इन शब्दों के प्रयोग को एक क्रम संयोजन देने पर निम्नलिखित कविता बन सकती है–

"बीस हाथ का बाण,
कटे सर सारे के सारे,
असत्य हुआ पराजित,
हुई सत्य की जीत,
अधर्म पर धर्म की,
ऐसे हुई जीत,
राम की जीत में, रावण के घर में,
दशहरा मनाते हैं रात के अंधियार में,
रथ पे झांकी और हाथी पर राम जी,
रंग–बिरंगी रोशनी में, सजती पंडालों में दुर्गाजी,
घूम–घूम, टहल–टहल, दशहरा मनाते हैं,
हम अपने मन में सत्य का दीप जलाते हैं।"

उपर्युक्त ढंग से पद्य में भी स्वतंत्र लेखन करने में बच्चे सक्षम होंगे यदि उनको कुछ संकेत सूत्र के रूप में शब्द या तथ्यात्मक जानकारी प्रदान कर दी जाए। इस प्रकार बच्चे क्रमबद्ध ढंग से सोचकर कि कैसे उन्होंने दशहरा, दीपावली, होली, ईद, क्रिसमस और राष्ट्रीय पर्व मनाए थे, बिना किसी दबाव और पक्षपात के इन विषयों पर स्वतंत्र लेखन का प्रयास कर सकेंगे और एकाधिक प्रयासों के बाद बच्चे राष्ट्रीय पर्व त्योहार एवं मेले पर गद्य अथवा पद्य दोनों में स्वतंत्र ढंग से लेखन करने में सक्षम होंगे। स्वतंत्र लेखन में कुशलता कई अभ्यास के बाद ही आएगी परन्तु संकेत बिंदु एवं संबंधित तथ्यात्मक जानकारी के बाद ही बालक स्वतंत्र लेखन की योग्यता को धारण कर सकेगा।

3.1 राष्ट्रीय पर्व पर स्वतंत्र लेखन

पर्व, किसी भी सभ्य समाज में उत्साह, ऊर्जा तथा मनोरंजन भरने का कार्य करता है। इस मनोरंजन उत्साह के वशीभूत होकर ही मनुष्य अपनी सभ्यता व संस्कृति का पोषण करता है। प्रत्येक देश की संस्कृति के अनुरूप ही पर्व, उत्सव आदि का निर्धारण होता है। हमारे देश में कुछ त्योहार जैसे– दशहरा, दीपावली, होली पौराणिक घटनाओं और मिथकों पर आधारित है। दशहरा, दीपावली, होली तो कुछ ऐतिहासिक साक्ष्यों पर तथा कुछ पर्व सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए करने के लिए बड़े हर्षोल्लास से समाज में मनाया जाता है; जैसे– रक्षाबंधन, भैया दूज आदि।

भारतवर्ष एक धर्मनिरपेक्ष देश है। इसी धर्म निरपेक्षता की भावना से हम प्रेरित होकर जो पर्व मनाते हैं, उसे हम राष्ट्रीय पर्व कहते हैं; जैसे– गणतंत्र दिवस (26 जनवरी), स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त), गाँधी जयंती (2 अक्टूबर) आदि।

3.2 गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस भारत का लोकप्रिय राष्ट्रीय पर्व है। इस दिन स्वतंत्र भारत का संविधान लागू हुआ था। इस राष्ट्रीय पर्व को देश के प्रत्येक नागरिक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। यह त्योहार भारतीय नागरिकों की सोई आत्मा को जागृत करने का कार्य करता है। यही कारण है कि युवाओं का यह प्रिय त्योहार है। समूचे भारत में इस दिन सरकारी तथा गैर–सरकारी संस्थानों पर तिरंगा फहराया जाता है। राष्ट्रपति ध्वज फहराते हैं। इस राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर राष्ट्र की ताकत एवं समृद्धि को प्रदर्शित करने हेतु राजपथ पर भव्य समारोह का आयोजन किया जाता है। नयी दिल्ली के विजय चौक से प्रातः परेड का शुभारंभ होता है, राष्ट्रगान गाया जाता है। तत्पश्चात् जल, थल तथा नभ तीनों सेनाओं द्वारा परेड तथा सलामी का कार्य किया जाता है। हवाई जहाजों द्वारा फूलों की वर्षा की जाती है। माननीय राष्ट्रपति महोदय गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर देश को संबोधित करते हैं। हमारे देश के विभिन्न प्रदेश अपनी झांकी प्रस्तुत करते हैं।

विद्यालयों में भी ध्वज फहराया जाता है। स्थानीय पदाधिकारी अथवा अन्य सम्मानित जन को विद्यालय में ध्वज फहराने के लिए आमंत्रित किया जाता है। बच्चे अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार गणतंत्र दिवस मना कर हम संवैधानिक, लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति अपना सम्मान भाव व्यक्त करते हैं।

3.3 होली

भारत त्योहारों का देश है। होली भी भारत का विशिष्ट त्योहार है। होली में विभिन्न रंगों का प्रयोग किया जाता है, इसलिए इसे रंगों का उत्सव भी कहा जाता है। यह पर्व पूरे भारतवर्ष में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस पर्व पर सभी लोग चाहे वह छोटा हो या बड़ा, अमीर–गरीब सभी भेदभाव को भुलाकर एक–दूसरे को गुलाल लगाकर गले लगते हैं। पुराणों में होलिका दहन के संदर्भ में नारायण भक्त प्रहलाद की कथा का वर्णन मिलता है। कथा में हिरण्यकश्यपु के पुत्र प्रहलाद और हिरण्यकश्यपु की बहन होलिका की कहानी का वर्णन है। हिरण्यकश्यपु की बहन होलिका को वरदान प्राप्त था कि वह आग में जल नहीं सकती। हिरण्यकश्यपु ने आदेश दिया कि होलिका प्रहलाद को गोद में लेकर आग में बैठे। आग में बैठने पर होलिका तो जल गई पर प्रहलाद बच गये। ईश्वर भक्त प्रहलाद की याद में इस दिन होली मनाई जाती है। इसी दिन एक सच्चे भक्त की विजय हुई और राक्षस की पराजय हुई। होली के दिन सभी लोग एक–दूसरे के घर जाकर प्रेमपूर्वक एक–दूसरे को गुलाल लगाकर आपस में गले लगते हैं, जो एक प्रेम और सौहार्द का संदेश देता है। इस दिन गली और मोहल्ले में ढोल और मजीरा लेकर नाच–गाना करते हैं। बच्चे, युवा और बूढ़े, सभी रंगों की होली खेलते है। इसीलिए इसे रंगों का त्योहार भी कहा जाता है।

3.4 दीपावली

भारत के प्रमुख त्योहारों में दीपावली भी हिंदुओं का एक प्रमुख त्योहार है। इसका प्राचीन नाम दीपमाला था जिसका अर्थ है ''दीपकों की माला'' अर्थात इस दिन दीपकों को एक पंक्ति में रखकर एक साथ जलाया जाता था। एक पंक्ति में दीपक के जलने से वह दीपों की माला जैसा प्रतीत होता था। इसलिए इसका नाम दीपमाला पड़ा। इसी को नाम दीपावली भी कहते हैं। यह त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या की रात्रि में मनाया जाता है। इस दिन पूरे भारतवर्ष में लोग अपने घरों में दीपक जलाते हैं और पूरा भारत दीपों के उजाले से जगमगा उठता है। प्राचीन कथानुसार इसी दिन श्री रामचंद्र जी रावण का संहार करने के पश्चात वापस अयोध्या लौटे थे। श्री रामचंद्र जी के वापस लौटने की खुशी

में लोगों ने घी के दीपक जलाए थे, जिसे आज हम दीपावली के रूप में मनाते हैं। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। इस दिन धन–संपदा और समृद्धि का आशीर्वाद पाने के लिए लोग माँ लक्ष्मी जी की पूजा भी करते है।

इस पर्व पर हमें मिट्टी से बनी सामग्री; जैसे– मिट्टी के दीपक, मिट्टी के बने खिलौने आदि भी बहुतायत मात्रा में देखने को मिलते हैं। अब धीरे–धीरे मिट्टी के बने दिए और मिट्टी के खिलौने का प्रचलन कम होता जा रहा है। अब ज्यादातर लोग अपने घरों में इलेक्ट्रॉनिक लाइटों का प्रयोग कर रहे हैं। जो आनंद मिट्टी के बने दीपकों और खिलौनों में था, वह आनंद अब इन लाइटों में नहीं रह गया है। अतः हमें मिट्टी से बने दीपकों और खिलौनो का अधिकतम प्रयोग करना चाहिए। पटाखों आदि का प्रयोग न कर, प्रदूषण मुक्त दीपावली मनानी चाहिए।

3.5 कुंभ मेला

उत्तर प्रदेश के मध्य–दक्षिण भाग में अति प्राचीन नगर प्रयाग स्थित है। जिसके उत्तर में गंगा और दक्षिण में यमुना नदी प्रवाहित हो रही है। पुराणों में वर्णित है कि यहां पर सरस्वती नदी की एक अदृश्य धारा भी प्रवाहित हो रही है। शहर के पूर्वी हिस्से में तीनों नदियों का सुंदर संगम होता है। इसलिए इस स्थान को 'त्रिवेणी या त्रिवेणी संगम' के नाम से जाना जाता है। संगम तट पर, प्रत्येक बारह वर्ष में कुंभ मेला लगता है।

श्रीमद् भागवत पुराण में समुद्र मंथन की एक प्रसिद्ध कथा है। कथा के अनुसार, सत्युग में देवताओं और दानवों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था। इस मंथन से समुद्र से चौदह रत्न निकले। इन रत्नों में धनवंतरी भी एक रत्न थे जो हाथों में स्वर्ण कलश लेकर उत्पन्न हुए थे। इस स्वर्ण कलश में अमृत था। भगवान विष्णु के आदेश पर उनके वाहन गरुड़ ने वह अमृत कलश छीन लिया। तब राक्षसों ने अमृत प्राप्त करने के लिए गरुड़ का पीछा किया। गरुड़ ने अपने पीछे आ रहे राक्षसों को पीछे हटने के लिए चार स्थानों पर राक्षसों से युद्ध किया। उस युद्ध में गरुड़ के हाथ में पकड़े अमृत कलश से अमृत की कुछ बूंदे चार स्थानों पर गिरीं। ये चार स्थान है– हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन। कालान्तर में इन चारों स्थानों पर कुम्भ मेलें का आयोजन होने लगा।

हालांकि लोग माघ माह में जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, एक महीने के कल्पवास के लिए संगम के तट पर आते हैं। इसे लोग माघ मेला के रूप में जानते हैं। जबकि प्रति बारह वर्ष पर कुंभ और प्रति छह वर्ष पर अर्द्ध कुंभ के रूप में मनाया जाता है।

कुंभ मेले में लाखों लोग आते हैं और हजारों की संख्या में भक्त, गृहस्थ, साधक, और संन्यासी एक महीने कल्पवास करते हुए, यहां रहते हैं। सरकार इन सभी लोगों को आवास और अन्य सभी प्रकार की सार्वजनिक सुविधाएं प्रदान करती है। मेले की समुचित व्यवस्था के लिए राज्यसरकारों द्वारा मेला प्राधिकरण विभाग स्थापित किया गया है।

गतिविधि

- प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को आवश्यकता अनुसार कई समूहों में बाँट देंगे। प्रत्येक समूह को अलग–अलग पर्व/राष्ट्रीय पर्व/मेला लिखी पर्चियाँ बाँट देंगे।
- प्रत्येक समूह को आवंटित त्योहार अन्य समूहों से गोपनीय रखा जाएगा। अब बारी–बारी से प्रत्येक समूह अपने पर्व, मेला इत्यादि से संबंधित एक–एक लघु नाटिका प्रस्तुत करेगा।

गतिविधि का नाम : कहानी सुनिए, मुहावरे चुनिए

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : अलग–अलग पर्व/राष्ट्रीय पर्व/मेला लिखी पर्चियाँ

उद्देश्यः विषय वस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

यहाँ ध्यान देना है कि लघु नाटिका का शीर्षक या उसका मूल कथ्य (थीम) नहीं बताना है। लघु नाटिका की समाप्ति के बाद अन्य समूह नाटिका से संबंधित पर्व या मेला का नाम बताएंगे; जैसे– यदि कोई समूह दीपावली से संबंधित लघु नाटिका का प्रदर्शन करता है तो वह नाटिका में दीपक जलाएगा, तो अन्य समूह स्वयं जान जाएँगे कि यह दीपावली के दृश्य का मंचन है। प्रस्तुतकर्ता को नहीं बताना है कि हम दीपावली पर नाटिका प्रदर्शित करेंगे। शिक्षक चाहे तो लघु नाटिका की जगह मूक नाटिका का भी मंचन करवा सकते हैं।

बोध परीक्षण

1. स्वतंत्र लेखन क्या है?
2. दीपावली क्यों मनायी जाती है?
3. मेले में कौन–कौन सी दुकानें लगी रहती हैं?
4. असत्य पर सत्य की जीत के रूप में हम किस त्योहार को मानते हैं?
5. स्वतंत्रता दिवस हम क्यों मनाते हैं?
6. क्रिसमस–डे किस दिन मनाया जाता है?
7. होली का त्योहार किस मास में मनाया जाता है?

समेकन

लेखन के बुनियादी और रचनात्मक, दोनों कौशलों पर साधिकार प्रयोग करने वाले को हम स्वतंत्र लेखक कह सकते हैं। इस स्तर पर बच्चे अपने किसी अनुभव, दृश्य, घटना या परिचित वस्तुओं, भावों एवं विचारों इत्यादि के बारे में स्वतंत्र लेखन कर पाते हैं। राष्ट्रीय पर्व, त्योहार एवं मेला इत्यादि का अनुभव प्रत्येक बालक को होता है। बालक पर्व, त्योहार एवं मेले के अपने अनुभव को जब किताबों में पढ़ता या किसी के निर्देशित वक्तव्य के आधार पर लिपिबद्ध करता है, तो इसे स्वतंत्र लेखन नहीं कहा जाएगा।

गद्य में विचार की प्रधानता होती है। बौद्धिक कौशल के रचनात्मक प्रयोग से गद्य की अनेक विधाएँ– निबंध, नाटक, कहानी, इत्यादि लिखी जाती है। जबकि पद्य में भाव की प्रधानता होती है। मन के भावों का प्रस्फुटन जब लय, तुक, छंद, अलंकार एवं रस इत्यादि के संयोजन से लेखन में होता है, तो ऐसी रचना पद्य अथवा वाक्य के अंतर्गत आती है। पद्य में कविता, प्रबंध काव्य, खंडकाव्य, गजल, शायरी, मुक्तक इत्यादि विविध रूप आते हैं।

स्व आकलन

1. निबंध से आप क्या समझते हैं?
2. हमारे देश में राष्ट्रीय पर्व कब–कब मनाए जाते हैं?
3. कुंभ मेला कहाँ–कहाँ लगता है?
4. भारत के दो क्रांतिकारी नेताओं के नाम लिखिए जिनकी जयंती प्रतिवर्ष मनाई जाती है।
5. हम स्वतंत्रता दिवस कब मनाते हैं?
6. भारत में गणतंत्र दिवस कब मनाया जाता है?
7. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, इनकी मदद से आप कविता बनाइए–
   सत्य, दीपक, स्वच्छता, लक्ष्मी, गणेश, पटाखे, फुलझड़ियाँ, राष्ट्रीय, नए वस्त्र, गोवर्धन पूजा, लड्डू, भैया–दूज, पढ़ाई, किताब, साफ–सफाई।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हमारा राष्ट्रीय पर्व है–
   (क) 15 अगस्त (ख) 26 जनवरी
   (ग) 2 अक्टूबर (घ) सभी
2. कुंभ मेला कहाँ लगता है?
   (क) वाराणसी (ख) लखनऊ
   (ग) प्रयागराज (घ) कानपुर
3. दशहरे पर किसका दहन किया जाता है?
   (क) महिषासुर (ख) दुर्योधन
   (ग) रावण (घ) हिरण्यकश्यपु
4. विश्व का प्रसिद्ध मेला कौन–सा है?
   (क) स्थानीय मेला (ख) कुंभ मेला
   (ग) गांव का मेला (घ) दशहरा मेला
5. हमारा देश कब स्वतंत्र हुआ?
   (क) 26 जनवरी 1950 (ख) 2 अक्टूबर 1869
   (ग) 15 अगस्त 1947 (घ) 30 जनवरी 1948
6. दीपावली कब मनाई जाती है?
   (क) सावन माह में (ख) कार्तिक माह में
   (ग) माघ माह में (घ) फाल्गुन माह में
7. ईसा मसीह के पुनर्जीवित होने की स्मृति में मनाया जाने वाला त्योहार है–
   (क) क्रिसमस (ख) ईस्टर मंडे
   (ग) गुड फ्राईडे (घ) इनमें से कोई नहीं
8. एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला कहाँ लगता है?
   (क) नालंदा (ख) सोनपुर
   (ग) प्रयागराज (घ) गोरखपुर
9. निम्नलिखित में से राष्ट्रीय पर्व नहीं है–
   (क) स्वतंत्रता दिवस (ख) गणतंत्र दिवस
   (ग) गांधी जयंती (घ) दीपावली
10. महाकुंभ मेले का आयोजन कितने वर्ष बाद होता है?
   (क) पाँच वर्ष बाद (ख) दस वर्ष बाद
   (ग) बारह वर्ष बाद (घ) पन्द्रह वर्ष बाद

विचार विश्लेषण

1. स्वतंत्र लेखन से क्या तात्पर्य है?
2. स्वतंत्र लेखन के क्या उद्देश्य हैं?
3. स्वतंत्र लेखन से कौन–कौन से लाभ हैं?
4. स्वतंत्र लेखन में किन–किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?
5. लेखन और स्वतंत्र लेखन में कोई दो अंतर बताइए?
6. दीपावली त्योहार पर हम अपने घरों में कौन–कौन सा कार्य करते हैं?
7. स्वतंत्र लेखन का अभ्यास कराते समय किन–किन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए?
8. किसी एक त्योहार पर अपने शब्दों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति प्रस्तुत कीजिए।

9. हमारे देश में कौन–कौन से राष्ट्रीय पर्व हैं?
10. किसी एक राष्ट्रीय पर्व पर लघु निबंध लिखिए।

प्रोजेक्ट कार्य

1. निम्नलिखित चित्रों को ध्यान पूर्वक देखिए–

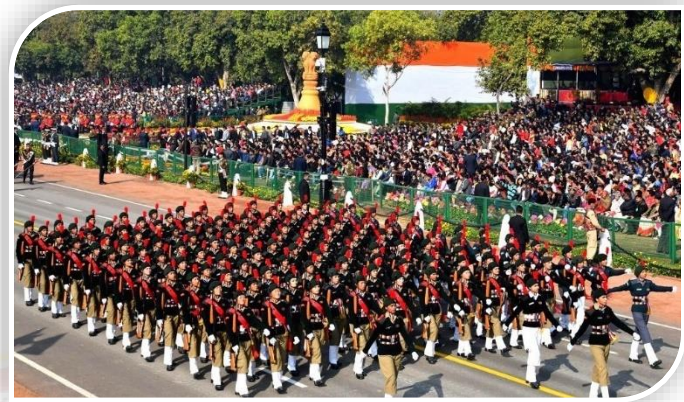

उपर्युक्त चित्र के विषय में अपनी जानकारी को स्वतंत्र एवं मौलिक ढंग से अभिव्यक्त कीजिए।

इकाई 4

कर्ता, कर्म के अनुसार क्रिया में परिवर्तन, तत्सम, तद्भव, देशज, रूपों का परिचय, सरल, संयुक्त व मिश्रित वाक्य, वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग।

4.1- कर्ता
4.2- कर्म
4.3- क्रिया
4.4- शब्द (तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्द)
4.5- वाक्य (सरल, संयुक्त व मिश्रित)
4.6- वाक्यांश के लिए एक शब्द

प्रशिक्षण संप्राप्ति

- प्रशिक्षु कर्ता, कर्म की मूल अवधारणा को बेहतर ढंग से समझते हैं तथा कर्ता, कर्म और क्रिया में आधारभूत अंतर कर लेते हैं।
- प्रशिक्षु कर्ता, कर्म के अनुसार क्रिया में होने वाले परिवर्तनों को पहचान लेते हैं।
- प्रशिक्षु शब्द, शब्द निर्माण व शब्द उत्पत्ति की मूल अवधारणा के साथ—साथ तत्सम, तद्भव शब्दों में अंतर कर लेते हैं।
- प्रशिक्षु वाक्य, वाक्य की संरचना, वाक्य के आधारभूत भेद आदि को समझ लेते हैं तथा उनमें अंतर कर लेते हैं।
- प्रशिक्षु वाक्यांश के लिए एक शब्द की अवधारणा समझते हैं तथा इसका वाक्य में प्रयोग करते हैं।

भाषा की लघुतम सार्थक इकाई को शब्द कहते हैं। वैयाकरणों ने शब्द को बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। शब्द को ब्रह्म तक कहा गया है। शब्द को व्याकरणिक दृष्टि से देखें तो यह कई दायित्वों का निर्वाह करता है। व्युत्पत्ति के आधार पर जहाँ शब्द की तत्सम ,तद्भव, देशज और विदेशज शब्द जैसी कोटियाँ होती हैं, वहीं वाक्य में शब्द कर्ता, कर्म, क्रिया के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। कहीं—कहीं पर शब्द व्यापक अर्थ को धारण करता है, जैसे— वाक्यांश के लिए एक शब्द। इस इकाई में शब्द के विविध कोटि पर विचार करते हुए भाषा में शब्द की भूमिका को स्पष्ट किया गया है।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

प्रशिक्षक निम्नांकित पोस्टर/अनुच्छेद पहले से तैयार करें—

1. शब्दों से संबंधित विविध प्रकार के पोस्टर।
2. कर्ता, कर्म और क्रिया से संबंधित अनुच्छेद।
3. वाक्य के विविध प्रकारों से संबंधित अनुच्छेद।
4. वाक्यांश के लिए एक शब्द हेतु पोस्टर।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

प्रशिक्षु अग्रांकित कार्यों को सम्पादित करेंगे—

1. असंगत वर्णों के संगत मेल से सार्थक शब्द बनाना।
2. विविध वाक्यों के प्रयोग द्वारा कर्ता, कर्म और क्रिया की पहचान करना।
3. अपठित अनुच्छेद पढ़कर सरल, मिश्रित और संयुक्त वाक्य की पहचान करना।
4. दिए गए शब्दों के अर्थ को एक वाक्य में लिखना तथा दिए गए वाक्य के अर्थ को एक शब्द में लिखना।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं के समक्ष कुछ वाक्य लिखा हुआ एक चार्ट प्रस्तुत करेंगे–

- रमेश दौड़ता है।
- सीमा नाचती है।
- रीता विद्यालय में पढ़ने जाती है।
- राजू अखबार पढ़ता है।
- नीता गाना गाती है।
- सुरेश घर जाता है।

गतिविधि का नाम : कहानी सुनिए, मुहावरे चुनिए

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : कहानी लिखा हुआ चार्ट।

उद्देश्य: विषय वस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक चार्ट पढ़वाने के बाद प्रशिक्षुओं से कर्ता, कर्म और क्रिया से संबंधित कुछ प्रश्न पूछकर उनकी अवधारणा को स्पष्ट करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

4.1 कर्ता

"कार्य करने वाले को कर्ता कहते हैं।" उपर्युक्त उदाहरण में रमेश, सीमा और रीता के द्वारा कार्य किया जा रहा है। रमेश के दौड़ने का कार्य कर रहा है, सीमा नाचने का कार्य कर रही है। अतः यहाँ रमेश और सुमन कर्ता हैं।

4.2 कर्म

"कर्ता के कार्य का प्रभाव जिस पर पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं।" जैसे– रीता (कर्ता) विद्यालय (कर्म) में पढ़ने जाती (क्रिया) है।

अथवा

क्रियाजन्य फल का आश्रय कर्म होता है। कहने का तात्पर्य क्रिया का फल या परिणाम कर्म पर पड़ता है।

4.3 क्रिया

"कर्ता द्वारा जो कार्य किया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं।"

- रमेश (कर्ता) द्वारा दौड़ने (क्रिया) का कार्य जैसे– रमेश **दौड़ता** है।
- सीमा (कर्ता) द्वारा नाचने (क्रिया) का कार्य जैसे– सीमा **नाचती** है।
- रीता (कर्ता) द्वारा पढ़ने जाने (क्रिया का कार्य) किया गया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जिस शब्द से किसी काम का करना या होना इंगित हो, उसे क्रिया कहते हैं; जैसे– चलना, दौड़ना, नाचना, पढ़ना, इत्यादि।

4.4 धातु

क्रिया का मूल रूप 'धातु' है। धातु से तात्पर्य है कि जिन मूल अक्षरों से क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें 'धातु' कहते हैं; जैसे– पढ़ना शब्द को यदि ले तो इसमें 'पठ' धातु है और ना प्रत्यय है। इसी तरह खाना में 'खा' धातु है और 'ना' प्रत्यय है ।

धातु के भेद

व्युत्पत्ति अथवा शब्द निर्माण की दृष्टि से धातुएँ दो प्रकार की होती हैं–

1. मूल धातु
2. यौगिक धातु

- मूल धातु स्वतंत्र होती है; जैसे– खा, देख, पी इत्यादि।
- यौगिक धातु किसी प्रत्यय के योग से बनती है; जैसे– खाना से खिला, पढ़ना से पढ़ा। यह मुख्यतः तीन प्रकार से बनती है–
  - धातु में प्रत्यय लगाने से, अकर्मक से सकर्मक और प्रेरणार्थक धातु बनती है।
  - कई धातुओं को संयुक्त करने से संयुक्त धातु बनती है।
  - संज्ञा या विशेषण से नामधातु बनती है।

कर्म के आधार पर क्रिया भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित भेद होते हैं–

- सकर्मक क्रिया
- अकर्मक क्रिया
- द्विकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया– जिन क्रियाओं का प्रभाव कर्ता पर नहीं बल्कि कर्म पर पड़ता है, वे 'सकर्मक क्रियाएँ' कहलाती हैं। इन क्रियाओं में कर्म की अपेक्षा या संभावना आवश्यक है। उदाहरण– मैं लेख लिखता हूँ। मीरा फल खाती है। भौंरा फूलों का रस पीता है।

अकर्मक क्रिया– जिन क्रियाओं का व्यापार और फल स्वयं कर्ता पर पड़े, वे अकर्मक क्रिया कहलाती हैं। उदाहरण– राकेश रोता है। बस चलती है।

द्विकर्मक क्रिया – जिन क्रियाओं के दो कर्म होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। उदाहरण– मैंने राम को पुस्तक दी। श्याम ने राम को रुपए दिए। उपर्युक्त वाक्यों में देना क्रिया के दो कर्म हैं। अतः 'देना' द्विकर्मक क्रिया है।

प्रयोग के आधार पर क्रिया भेद

- प्रेरणार्थक क्रिया
- पूर्वकालिक क्रिया
- यौगिक क्रिया
- संयुक्त क्रिया
- नामधातु

- क्रियार्थक संज्ञा
- सहायक क्रिया

प्रेरणार्थक क्रिया– जिन क्रियाओं से इस बात का बोध हो कि कर्ता स्वयं कार्य न कर, किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वे 'प्रेरणार्थक' क्रियाएं कहलाती हैं; जैसे–

- काटना से कटवाना
- करना से कराना या करवाना
- अन्य उदाहरण– मोहन रमेश से पत्र लिखवाता है। इस वाक्य में मोहन (कर्ता) स्वयं पत्र न लिखकर, रमेश को पत्र लिखने की प्रेरणा देता है।

पूर्वकालिक क्रिया– जब कर्ता एक क्रिया समाप्त कर, उसी क्षण दूसरी क्रिया में प्रवृत्त होता है, तब पहली क्रिया 'पूर्वकालिक क्रिया' कहलाती है; जैसे– उसने नहा कर भोजन किया। इसमें नहा कर पूर्वकालिक क्रिया है क्योंकि इसमें नहाने की क्रिया की समाप्ति के साथ ही भोजन करने की क्रिया का बोध होता है।

यौगिक क्रिया– दो या दो से अधिक धातुओं और शब्दों के संयोग से या धातु में प्रत्यय लगाने से जो क्रिया बनती है उसे 'यौगिक क्रिया' कहा जाता है; जैसे–रोना–धोना, चलना–फिरना।

संयुक्त क्रिया– जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, उसे 'संयुक्त क्रिया' कहते हैं। जैसे–घनश्याम **रो चुका**। किशोर **रोने लगा**। इन वाक्यों में रो चुका, रोने लगा संयुक्त क्रियाएँ हैं।

नाम धातु– जो धातु, संज्ञा या विशेषण से बनती है, उसे 'नाम धातु' कहते हैं; जैसे– बात से बतियाना, हाथ से हथियाना, ठंड से ठंडाना।

क्रियार्थक संज्ञा–जब क्रिया, संज्ञा की तरह व्यवहार में आए तब वह 'क्रियार्थक संज्ञा' कहलाती है। जैसे– टहलना, स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।

सहायक क्रिया– सहायक क्रियाएँ मुख्य क्रिया के रूप में, अर्थ को स्पष्ट और पूरा करने में सहायक होती हैं। कभी एक क्रिया, कभी एक से अधिक क्रिया, सहायक क्रिया होती है। हिन्दी में इन क्रियाओं का व्यापक प्रयोग होता है। इनके हेर–फेर से क्रिया का रूप बदल जाता है; जैसे–

- वह खाता है ।
- मैंने पढ़ा था ।
- तुम जगे हुए थे ।
- वे सुन रहे थे।

इनमें खाना, पढ़ना, जगना और सुनना मुख्य क्रियाएँ हैं क्योंकि यहाँ क्रियाओं के अर्थ की प्रधानता है। शेष क्रियाएँ जैसे हैं, था, हुए थे, रहे थे सहायक क्रियाएँ हैं। यह मुख्य अर्थ को स्पष्ट और पूर्ण करती है।

गतिविधि

❖ इस गतिविधि के तहत प्रशिक्षक कम से कम 5 प्रशिक्षुओं को बुलाकर बिना बोले किसी क्रिया को प्रदर्शित करने को कहेंगे। अन्य प्रशिक्षुओं को क्रिया पहचानते हुए उसके सकर्मक या अकर्मक होने की पहचान करने को कहेंगे। प्रशिक्षुओं के उत्तरों को क्रिया के नाम सहित श्यामपट्ट पर लिखने व उस पर चर्चा करने को कहेंगे कि यह क्यों सकर्मक या अकर्मक है।

गतिविधि का नाम : कहानी सुनिए, मुहावरे चुनिए

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : कहानी लिखा हुआ चार्ट।

उद्देश्यः विषय वस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

क्रिया में परिवर्तन

क्रिया एक विकारी शब्द है। प्रायः वाक्य में क्रिया का लिंग, वचन एवं पुरुष कभी कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होता है तो कभी कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार, लेकिन कभी–कभी वाक्य की क्रिया, कर्ता तथा कर्म के अनुसार न होकर एकवचन, पुलिंग तथा अन्यपुरुष होती है। ये परिवर्तन तीन प्रकार के होते हैं–

1. कर्ता प्रयोग
2. कर्म प्रयोग
3. भाव प्रयोग।

कर्ता प्रयोग– जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों तब कर्ता प्रयोग होता है; जैसे–

- मोहन अच्छी पुस्तकें पढ़ता है।
- लड़का खाता है।
- मैंने पुस्तक पढ़ी।

कर्म प्रयोग– जब वाक्य क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हो तब कर्म प्रयोग होता है; जैसे–

- सीता ने पत्र लिखा।
- आम खाया जाता है।
- पुस्तक पढ़ी जाती है।

भाव प्रयोग– जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष, कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार न होकर एकवचन, पुंलिंग तथा अन्य पुरुष हों तब भाव प्रयोग होता है; जैसे–

- मुझसे बैठा नहीं जाता।
- धूप में चला नहीं जाता।
- मुझसे चला नहीं जाता।

4.5 शब्द (तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्द)

शब्द की अवधारणा

"सोनारी एक छोटा–सा गाँव है– अहोम राजाओं की पुरानी राजधानी शिवसागर से कोई 18 मील दूर है। बरसात के दिन थे। रास्ता खराब था। एक दिन सवेरे घूमने निकला, तो देखा कि नदी बढ़कर सड़क के बराबर आ गई है।"

जब हम उपर्युक्त पंक्तियों को पढ़ते हैं तो हमारे मस्तिष्क में चित्र उभरते हैं और उससे संबंधित दृश्य हमारी कल्पना में आने लगते हैं परंतु इसी को यदि ऐसे लिखा या पढ़ा जाए– 'लमी ईको बाराख तासरा तसारब' तो कुछ समझ नहीं आएगा और ना किसी प्रकार का चित्र अथवा कल्पना ही हमारे मन में उभरेगी।

अतः हम कह सकते हैं कि ध्वनियों अथवा वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहा जाता है; जैसे–

न् + अ + य् + अ + न् + अ = नयन
श् + ओ + र् + अ = शोर
क् + अ + म् + अ + ल् + अ = कमल

उपर्युक्त 'नयन', 'शोर' और 'कमल' जैसे सार्थक शब्द कई वर्णों से मिलकर बने हैं।

शब्दों को हम दो रूपों में पाते हैं। पहला तो इनका अपना रूप है, जिसे प्रकृति या प्रतिपादक कहते हैं तथा दूसरा वह है, जो कारक, लिंग, वचन, पुरुष तथा काल बताने वाले अंश को आगे–पीछे लगाकर बनाया जाता है, जिसे पद कहते हैं। स्पष्ट है कि शब्द, वाक्य में प्रयुक्त होने पर पद कहलाते हैं; जैसे– राम, पुस्तक, पढ़े। इन तीनों शब्दों से एक वाक्य बनता है– राम पुस्तक पढ़े। राम– संज्ञा, पुस्तक– कर्मपद, पढ़े– क्रियापद है।

हिन्दी में शब्द अनेक प्रकार के हैं। अतः शब्दों का विभाजन निम्नांकित आधारों से किया जाता है–

1. स्रोत या उत्पत्ति के आधार पर
- तत्सम
- तद्भव
- देशज
- विदेशज
- मिश्रित या संकर

2. अर्थ के आधार पर
- समानार्थक शब्द
- एकार्थक शब्द
- अनेकार्थक शब्द
- विपरीतार्थक शब्द

3. प्रयोग या रूपांतर के आधार पर
- विकारी शब्द
- अविकारी शब्द

4. रचना या बनावट के आधार पर
- रूढ़ शब्द
- यौगिक शब्द
- योगरूढ़ शब्द

5. शब्द शक्ति के आधार पर
- वाचक शब्द
- लक्षक शब्द
- व्यंजक शब्द

स्रोत या उत्पत्ति के आधार पर

तत्सम शब्द

किसी भाषा के मूल शब्द को 'तत्सम शब्द' कहते हैं। तत्सम शब्द, संस्कृत के दो शब्दों तत् + सम से मिलकर बना है। तत् का अर्थ है 'उसके' तथा सम का अर्थ है 'समान' अर्थात् ज्यों का त्यों अर्थात जिन शब्दों को संस्कृत से बिना किसी परिवर्तन के ले लिया जाता है, उन्हें 'तत्सम' शब्द कहते हैं। इनका प्रयोग हिन्दी में भी उसी रूप में किया जाता है, जिस रूप में संस्कृत में किया जाता है; जैसे– प्रातः, चंद्र, सूर्य, ऊष्ट्र, सौभाग्य, श्रावण, वर्षा, मक्षिका, भ्रमण, रात्रि, द्वार, वर आदि।

तद्भव शब्द

ऐसे शब्द, जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर हिन्दी में आए हैं, तद्भव कहे जाते हैं। तद्भव का अर्थ है– 'उससे उत्पन्न'। ये शब्द संस्कृत से सीधे न आकर पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी में आए हैं। सभी तद्भव शब्द संस्कृत से आए हैं परंतु कुछ शब्द देश–काल के प्रभाव से ऐसे विकृत हो गए हैं कि उनके मूल शब्द का पता ही नहीं चलता। तद्भव शब्द दो प्रकार के होते हैं –

- संस्कृत से आने वाले।
- सीधे प्राकृत से आने वाले।

संस्कृत	प्राकृत	हिन्दी तद्भव
अग्नि	अग्गि	आग
पुष्प	पुष्फ	फूल
चतुर्थ	चउट्ठ	चौथा
मयूर	मऊर	मोर
नव	नअ	नौ
वत्स	वच्छ	बच्चा

तत्सम और तद्भव शब्दों के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं; जैसे–

तत्सम	तद्भव
ओष्ठ	ओंठ, होंठ
कर्म	काम
त्वरित	तुरंत
सूचिका	सुई
शत	सौ
हरिद्रा	हल्दी
पर्यंक	पलंग

देशज शब्द

ऐसे शब्द, जिनकी मूल उत्पत्ति का पता नहीं लगता। ये शब्द अपने ही देश में बोलचाल से बने हैं, इसलिए इन्हें देशज अर्थात देश से उत्पन्न शब्द कहा जाता है; जैसे– खिड़की, डिबिया, डोंगा, बक–बक, धक्का, खुसुर–फुसुर, लचक, ठक–ठक, गड़बड़ इत्यादि।

विदेशज शब्द

ऐसे शब्द जो अन्य भाषाओं से हिन्दी में आए हैं, विदेशज कहलाते हैं। इनमें अंग्रेजी, फारसी, अरबी, तुर्की, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं को हिन्दी ने अपने उच्चारण के अनुरूप या अपभ्रंश रूप में ढाल लिया है। हिन्दी में उनके कुछ हेर–फेर इस प्रकार हुए हैं–

- क़, ख़, ग़, फ़ जैसे 'नुक्तेदार' उच्चारण और लिखावट को हिन्दी में साधारणतया 'बेनुक्तेदार' उच्चारित किया और लिखा जाता है; जैसे–

  क़ीमत (अरबी) = कीमत (हिन्दी)
  ख़ूब (फारसी) = खूब (हिन्दी)
  आ़गा (तुर्की) = आगा (हिन्दी)
  फ़ैसला (अरबी) = फैसला (हिन्दी)

❖ शब्दों के अंतिम 'विसर्ग'(:) की जगह हिन्दी में 'आकार' की मात्रा लगाकर लिखा या बोला जाता है; जैसे– आईनः और कमीनः (फारसी) = आईना और कमीना (हिन्दी)
  हैज (अरबी) = हैजा (हिन्दी)
  चम्चः (तुर्की) = चमचा (हिन्दी)

❖ शब्दों के अंतिम 'हकार' की जगह हिन्दी में 'आकार' की मात्रा कर दी जाती है; जैसे–
  अल्लाह (अरबी) = अल्ला (हिन्दी)

❖ शब्दों के अंतिम 'आकार' की मात्रा को हिन्दी में 'हकार' कर दिया जाता है; जैसे–
  परवा (फारसी) = परवाह (हिन्दी)

❖ शब्दों के अंतिम 'अनुनासिक' आकार को 'आन'कर दिया जाता है; जैसे–
  दुकाँ (फारसी) = दुकान (हिन्दी)
  ईमाँ (अरबी) = ईमान (हिन्दी)

❖ बीच के 'ई' को 'य' कर दिया जाता है; जैसे–
  काइदः (अरबी)=कायदा (हिन्दी)

❖ बीच के आधे अक्षर को लुप्त कर दिया जाता है; जैसे–
  नश्शः (अरबी) = नशा (हिन्दी)

❖ बीच के आधे अक्षर को पूरा कर दिया जाता है; जैसे–
  अफ्सोस, गर्म, किश्मिश, बेर्हम (फारसी) = अफसोस, गरम, किशमिश, बेरहम (हिन्दी)
  तर्फ, नह्र, कस्त्रत (अरबी) = तरफ, नहर, कसरत (हिन्दी)
  चम्चः, तग्गा (तुर्की) = चमचा, तमगा (हिन्दी)

❖ बीच की मात्रा लुप्त कर दी जाती है; जैसे–
  आबोदानः (फारसी) = आबदाना (हिन्दी)
  जवाहिर, मौसिम, वापिस (अरबी) = जवाहर, मौसम, वापस (हिन्दी)
  चुगुल (तुर्की) = चुगल (हिन्दी)

❖ बीच में कोई ह्रस्व मात्रा (खासकर 'इ' की मात्रा) दे दी जाती है; जैसे–
  आतशबाजी (फारसी) = आतिशबाजी (हिन्दी)
  दुन्या, तक्यः (अरबी) = दुनिया, तकिया (हिन्दी)

❖ अक्षर में सवर्गीय परिवर्तन भी कर दिया जाता है; जैसे–
  बालाई (फारसी) = मलाई (हिन्दी) ('ब' के स्थान पर उसी वर्ग का वर्ण 'म')

हिन्दी के उच्चारण और लेखन के अनुसार हिन्दी भाषा में घुले–मिले कुछ विदेशज शब्द आगे दिए गए हैं–

➢ **फारसी शब्द**– आवाज, आईना, मरहम, याद, रंग, दवा, मलाई, लेकिन ,दरबार, दंगल, सरकार आदि।
➢ **अरबी शब्द**– अदा, अक्ल, अल्ला, आखिर, औलाद, कातिल, गरीब, जिस्म आदि।
➢ **तुर्की शब्द**– आका, कालीन, कज्जाक, कुली, चेचक, तोप, तलाश, मुगल, सुराग, आदि।
➢ **अंग्रेजी शब्द**– स्कूल, ट्रेन, स्टेशन, पेन ,पेपर आदि।
➢ **संकर अथवा मिश्रित शब्द**– हिन्दी में प्रचलित ऐसे शब्द जो दो अलग–अलग भाषाओं के शब्दों को मिलाकर बनाए गए हैं, उन्हें संकर शब्द कहते हैं। जैसे–
➢ **संस्कृत और हिन्दी से बने शब्द**– माँगपत्र, जाँचकर्ता (इनमें क्रमशः 'पत्र' और 'कर्ता' शब्द संस्कृत के हैं। 'माँग' और 'जाँच हिन्दी के हैं।)

- **हिन्दी और अरबी फारसी से बने शब्द**— घड़ीसाज, किताबघर, फूलदान (घड़ीसाज़, किताब़ घर, फूल़दान)
- **हिन्दी और अंग्रेजी से बने शब्द**— रेलगाड़ी, टिकटघर ('रेल' और 'टिकट' शब्द अंग्रेजी के हैं तथा 'गाड़ी' और 'घर' हिन्दी के हैं।)
- **संस्कृत और ऊर्दू से बने शब्द**— कोषागार, कारागार आदि।

नोट— विस्तृत जानकारी के लिए राज्य हिन्दी संस्थान उत्तर प्रदेश वाराणसी द्वारा प्रकाशित उच्च प्राथमिक स्तरीय हिन्दी व्याकरण माड्यूल का अवलोकन करें।

क्यूआर कोड

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को समूह में बैठाकर उनके बीच कुछ तत्सम ,तद्भव ,देशज तथा विदेशज शब्द लिखे हुए फ्लैश कार्ड वितरित करेंगे तथा उनको तत्सम, तद्भव, देशी तथा विदेशी नाम की चार पंक्ति बनाने को कहेंगे। जिस प्रशिक्षु के पास जिस शब्द का कार्ड होगा, वह उसी पंक्ति में जाकर खड़ा होगा।

गतिविधि का नाम : शब्द पढ़ो, पंक्ति बनाओ।

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : तत्सम ,तद्भव ,देशज तथा विदेशज शब्द लिखे हुए फ्लैश कार्ड

उद्देश्य: विषय वस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

खिड़की	प्रातः	आवाज	फूल
चंद्र	डिबिया	आईना	आग

4.5 वाक्य (सरल, संयुक्त व मिश्रित)

(क)

- लडकियाँ खेल रही हैं।
- मोहन चित्र बना रहा है।
- वह हंसकर बोला।
- मैं घर पर हूँ।
- वह पढ़ रहा है।

उपर्युक्त उदाहरणों को पढ़ने से स्पष्ट होता है कि 'शब्दों के सार्थक मेल को वाक्य कहते हैं।' जिसका पूरा–पूरा अर्थ निकलता है। यहाँ यह भी स्पष्ट करना है कि वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का एक व्यवस्थित क्रम भी होता है, जैसे– 'सत्य कड़वा होता है।' यह एक पूरा वाक्य है क्योंकि इसका पूरा–पूरा अर्थ निकल रहा है। यदि इसी वाक्य के शब्दों को व्यवस्थित क्रम में न लिखकर इस प्रकार लिखें– 'सत्य होता है कड़वा' अब यह वाक्य नहीं कहलाएगा क्योंकि इसका सहजता से अर्थ नहीं निकल रहा है।

अतः वाक्य की परिभाषा के रूप में यह कह सकते हैं कि 'सार्थक शब्दों का वह व्यवस्थित समूह जिनके माध्यम से मन के भाव–विचार प्रकट किए जाते हैं, वाक्य कहते हैं।'

(ख) प्रशिक्षक श्यामपट्ट पर कुछ सार्थक शब्दों को अव्यवस्थित क्रम में अलग–अलग बॉक्स में लिखेंगे और प्रशिक्षुओं से वाक्य बनाने को कहेंगे।

चमक है तुम्हारा रहा तेज	नहीं मैंने रोटी थी लपकी	विवेकशील था ब्रह्मदत्त राजा
मैं डॉक्टर मेरी बड़ी इच्छा थी बनूं	पगडंडी जाने आगे पर मिल गई	

वाक्य के गुण

वाक्य में निम्नलिखित गुण होते हैं

- **सार्थकता–** वाक्य के शब्द सार्थक होने चाहिए।
- **योग्यता–** योग्यता से तात्पर्य है कि शब्दों में परस्पर में संगति हो। शब्दों में प्रसन्नता अनुकूल भाव का बोध स्पष्ट हो। जैसे– 'वह पेड़ को पत्थर से सींचता है।' वाक्य में शब्द तो सार्थक है किंतु पत्थर से सींचना नहीं होता है। इसलिए शब्दों की परस्पर योग्यता की कमी है।
- **आकांक्षा–** वाक्य में एक पद को सुनकर दूसरे पद को सुनने या जानने की जो स्वाभाविक उत्कंठा जागती है उसे ही आकांक्षा कहते हैं। जैसे– 'वाराणसी जाता है।' इस वाक्य को सुनकर सहज ही मन में उत्कंठा जागती है कि कौन वाराणसी जाता है। जब राम, श्याम अथवा मोहन जैसे संज्ञार्थक उत्तर मिल जाते हैं तो इसे ही हम 'आकांक्षा' कहेंगे।
- **सन्निधि–** सन्निधि का अर्थ है समीपता। वाक्य के शब्द समीप होने चाहिए। उपर्युक्त सभी बातों के रहने पर भी यदि एक शब्द आज कहा जाए दूसरा कल और तीसरा परसों तो उसे वाक्य नहीं कहा जायेगा। जैसे– वक्ता कहता है **'लड़के को'** फिर कुछ समय बाद **'पुस्तक'** और फिर कुछ समय बाद **'पढ़नी चाहिए'**। इससे वाक्य स्पष्ट नहीं होगा, बल्कि सही वाक्य होगा **'लड़के को पुस्तक पढ़नी चाहिए।'**
- **अन्विति–** अन्विति का अर्थ है व्याकरण दृष्टि से एकरूपता। यह समरूपता प्रयास वचन, कारक, लिंग और पुरुष आदि की दृष्टि से होती है। हिन्दी में क्रिया लिंग, वचन, पुरुष में कर्ता के अनुकूल होती है; जैसे–
  - श्याम जा रही है।
  - सीमा सो गए।

दोनों ही वाक्य ठीक नहीं है क्योंकि सीमा और गए, श्याम और जा रही है में अन्विति नहीं है। अन्विति आकांक्षा और योग्यता के विधान को पूर्णता प्रदान करती है। यहां **'श्याम जा रहा है'** तथा **'सीमा सो गई'** शब्दों में अन्विति होगी।

वाक्य की विशेषताएँ

वाक्य की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

- वाक्य भाषा की सहज इकाई है।
- वाक्य में एक शब्द भी हो सकता है और एक से अधिक।
- वाक्य व्याकरण दृष्टि से पूर्ण होता है।
- वाक्य की पूर्णता कभी–कभी संदर्भ पर भी निर्भर करती है।

वाक्य का संरचनात्मक विश्लेषण–

संरचना की दृष्टि से वाक्य के दो भेद होते हैं–

उद्देश्य– किसी भी वाक्य में कर्ता ही उद्देश्य होता है अर्थात् वाक्य में जिसके संबंध में कहा जाता है; उसे 'उद्देश्य' कहते हैं। **उददेश्य = कर्ता + कर्ता का विस्तार**

जैसे– 1. राम बाग में जाता है।
2. अच्छा बालक रोज पढ़ता है।
3. मेरी बहन गीता आज विदेश जाएगी।

रेखांकित अंश कर्ता एवं कर्ता का विस्तार है। इन्हें ही वाक्य में 'उददेश्य' कहते हैं।

विधेय– वाक्य में क्रिया के संबंध में जो कुछ भी कहा जाता है; उसे 'विधेय' कहते हैं।

जैसे– 1. आज तो अच्छा हुआ।
2. राम ने रावण को मारा।
3. मेरा भाई नरेश तो रात–दिन मेहनत करता है।

रेखांकित वाक्य में क्रिया एवं क्रिया का विस्तार है। अतः इन्हें ही वाक्य में 'विधेय' कहते हैं।

वाक्य के भेद

वाक्य का वर्गीकरण मुख्यतः दो दृष्टियों से होता है–
1. रचना की दृष्टि से
2. अर्थ की दृष्टि से

रचना की दृष्टि से– वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–
1. सरल या साधारण वाक्य
2. मिश्र वाक्य
3. संयुक्त वाक्य

सरल या साधारण वाक्य–

सरल वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है। जैसे–
1. बच्चा सो गया।
2. सीता घर गई।
3. सीमा ने दरवाजा खोला। (पंखुड़ी कक्षा तीन पृष्ठ 3)
4. रमेश कक्षा 7 में पढ़ता है। स्वतंत्र भारत के परमवीर (दीक्षा पृष्ठ 60)
5. तुलतुल खुशी के मारे झूम उठी। भविष्य का भय (दीक्षा पृष्ठ 72)

मिश्रित वाक्य–

वाक्य में एक प्रधान वाक्य और उसके अधीन एक या एक से अधिक वाक्य रहते हैं। वाक्य कि, जो, वह, जितना, उतना, जैसे, वैसे, जब, तब, जहाँ, वहाँ, जिधर–उधर, अगर, यदि आदि से जुड़े होते हैं। जैसे– हरीश ने बताया कि वह कम्प्यूटर सीख रहा है। यहाँ 'हरीश ने बताया' प्रधान वाक्य है, 'वह कम्प्यूटर सीख रहा है' अधीन/आश्रित वाक्य है और 'कि' से यह जुड़ा हुआ है।
1. विजय वहीं होती है जहां पवित्रता और प्रेम है। (सच्ची वीरता प्रज्ञा 8 पृष्ठ संख्या 21)
2. वह ऐसे व्यक्ति को ढूँढता था जो उसके दोषों को बता सके। (राजधर्म दीक्षा 7 पृष्ठ 15)
3. बापू जहाँ प्रेम और सहानुभूति की मूर्ति थे वहीं बड़े परीक्षक भी थे। (आप भले तो जग भला, मंजरी 6 पृष्ठ संख्या 19)

संयुक्त वाक्य–

संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्यों का योग रहता है। एक दूसरे के आश्रित न होने के कारण संयुक्त वाक्य के उपवाक्यों को समानाधिकरण वाक्य कहते हैं। जैसे– सभी छात्र अब अध्ययन की ओर ध्यान देने लगे हैं और अब अशांति की स्थिति दूर हो गई है।

ऐसे वाक्य योजक शब्द, और, तथा, एवं, या, अथवा, इसलिए, अतः, फिर भी, तो, किंतु, परंतु, लेकिन, पर आदि से संयुक्त किए जाते हैं।

1. राजा प्रसन्न हुआ और तोते को महल में ले आया। (पंखुड़ी पृष्ठ 28)
2. धूप के कारण बुरा हाल था पर आज आकाश में बादल थे। (प्रज्ञा 8 पृष्ठ 86)
3. चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं। (मंजरी 6 पृष्ठ 59)

नोट– कभी–कभी संयुक्त वाक्य में समुच्चय बोधक अव्यय चिह्नों का भी लोप कर दिया जाता है। जैसे–
1. रहने वाले रहेंगे जाने वाले चले जाएंगे। (और का लोप)
2. क्या सोचा था क्या हो गया। (पर का लोप)
3. किया है मजदूरी तो माँगूंगा ही। (इसलिए का लोप)

अर्थ की दृष्टि से भेद

अर्थ के आधार पर वाक्य के सामान्यतः आठ भेद होते हैं–
1. **विधिवाचक वाक्य–** जिस वाक्य में किसी बात के होने का बोध हो। जैसे– तुम लिखते हो।
2. **निषेधवाचक वाक्य–** जिस वाक्य में किसी बात के न होने का बोध हो। जैसे– तुम नहीं लिखते हो।
3. **आज्ञावाचक वाक्य–** जिस वाक्य में किसी तरह की आज्ञा का बोध हो। जैसे– तुम लिखो।
4. **प्रश्नवाचक वाक्य–** जिस वाक्य में किसी प्रकार के प्रश्न किए जाने का बोध हो।जैसे– क्या तुम लिखोगे?
5. **विस्मयवाचक वाक्य–** जिस वाक्य में आश्चर्य, सुख–दुःख, हर्ष–विषाद का बोध हो। जैसे– तुमने इतना अच्छा लिखा!
6. **संदेहवाचक वाक्य–** जिस वाक्य में किसी बात का संदेह हो। जैसे– शायद आज बारिश हो।
7. **इच्छावाचक वाक्य–** जिस वाक्य में किसी इच्छा या शुभकामना का बोध हो। जैसे– ईश्वर आपका भला करे।
8. **संकेतवाचक वाक्य–** जिसमें एक वाक्य दूसरे की संभावना पर निर्भर हो। जैसे– यदि तुम लिखते तो अच्छा होता।

4.6 वाक्यांश के लिए एक शब्द

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक निम्नलिखित वाक्यांश को प्रशिक्षुओं को पढ़ने के लिए कहेंगे–

सुरेश एक निडर बालक था। उसके अंदर लाजवाब प्रतिभाएं थीं। वह एक दिन जंगल गया। उस जंगल में एक शेर रहता था। वह शेर बहुत खतरनाक था। वह अजेय था। जंगल में वनरक्षक ने सुरेश को वापस लौट जाने को कहा।

गतिविधि का नाम : अनुच्छेद पढ़ो, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द बनाओ।

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : चॉर्ट पर लिखा वाक्यांश

उद्देश्य: विषय वस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

अब प्रशिक्षुओं से रेखांकित शब्दों पर चर्चा करें।

वाक्यांश के लिए एक शब्द

जिसे डर ना हो– निडर
जिसका जवाब ना हो– लाजवाब
जिसको जीत ना जा सके– अजेय
वन की रक्षा करने वाला– वनरक्षक

उपर्युक्त रेखांकित वाक्य के सामने दिए गए शब्द रेखांकित भावों को पूरी तरह से स्पष्ट कर रहे हैं।

परिभाषा–अपनी भाषा को गंभीर प्रभावशाली और आकर्षक बनाने के लिए हम ऐसे शब्द का प्रयोग करते हैं जो स्वयं में किसी एक वाक्य के अर्थ को समेटे रहते हैं। हम ऐसे ही शब्दों को 'वाक्यांश के लिए एक शब्द'कहते हैं। एक कहावत भी है–'गागर में सागर भरना' जो इसके लिए सर्वथा उचित है। वाक्यांश के लिए एक शब्द के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं–

वाक्यांश	शब्द
1– नृत्य करने वाला।	नर्तक (कक्षा 6 अक्षरा)
2– चिकित्सा करने वाला	चिकित्सक ''
3– जिसने अपराध किया हो।	अपराधी ''
4– जिसे सहा ना जा सके।	असहनीय ''
5– भक्षण करने वाला।	भक्षक ''
6– किसी बात की परवाह न करने वाला	लापरवाह (कक्षा 7 दीक्षा)
7– कम ज्ञान रखने वाला	अल्पज्ञ (अन्य उदाहरण)
8– आंखों के सामने होने वाला	प्रत्यक्ष
9– प्रशंसा के योग्य	प्रशंसनीय
10– जो सभी लोगों को प्रिय हो	लोकप्रिय
11– जो क्षमा करने योग्य न हो	अक्षम्य
12– सेवा करने वाला	सेवक
13– लिखने वाला	लेखक
14– जिसका कोई आधार ना हो	निराधार
15– जहां जाया न जा सके	अगम्य
16– जो किसी का पक्ष न ले	तटस्थ
17– जो प्रमाण द्वारा सिद्ध हो	प्रामाणिक
18– सौ वर्ष का समय	शताब्दी
19– जिसके आर–पार दिखाई दे	पारदर्शी
20– जिस पर उपकार किया गया हो	उपकृत

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि जब अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द के द्वारा अर्थ को स्पष्ट कर दिया जाता है तो उसे 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहते हैं।

उपयोगिता

1. वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग करने से भाषा का सौंदर्य बढ़ जाता है।
2. कम शब्दों में अधिकतम भावाभिव्यक्ति कर सकते हैं।
3. दैनिक व्यवहार में इसका प्रयोग कर सकते हैं।
4. रचनात्मक अभिव्यक्ति जैसे कहानी, नाटक, कविता आदि लेखन हेतु इसका प्रयोग किया जा सकता है।
5. लेखन में इसके प्रयोग से समय की भी बचत होती है।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : ....

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : ....

उद्देश्य: विषय वस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं को निर्देश देंगे कि श्यामपट्ट पर बने बॉक्स तक पहुँचने के लिए आपको कुछ वाक्यांश दिए जा रहे हैं इस वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए और एक सीढ़ी ऊपर चढ़िए।

वाक्यांश	शब्द
1– प्रतिदिन होने वाला	
2– जहां घोड़े रखे जाते हैं	
3– पढ़ने वाला	
4– पर्यटन करने वाला	
5– जिसमें सब शक्तियाँ हो	
6– आकाश को चूमने वाला	
7– जो पढ़ा लिखा हो	
दैनिक, अस्तबल, पाठक, पर्यटक, सर्वशक्तिमान, गगनचुंबी, साक्षर	

प्रशिक्षु इस गतिविधि को करने के पश्चात 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' की अवधारणा को समझ सकेंगे।

बोध परीक्षण

1. कर्ता और कर्म में अंतर बताइए।
2. क्रिया किसे कहते हैं? क्रिया के प्रमुख भेद बताइए।
3. पूर्वकालिक क्रिया से आप क्या समझते हैं।
4. दो प्रेरणार्थक क्रियाएँ बताइए।
5. शब्दों का वर्गीकरण किन–किन आधारों पर किया जाता है?
6. दिए गए तत्सम शब्दों का तद्भव लिखिए–प्रस्तर, पक्षी, चंद्र, मयूर।
7. कुछ देशज शब्दों को लिखिए।
8. दैनिक जीवन के कुछ विदेशज शब्दों को लिखिए।

9. वाक्य किसे कहते हैं?
10. वाक्य के भेद बताइए।
11. उद्देश्य और विधेय में अंतर बताइए।
12. सरल वाक्य किसे कहते हैं?
13. मिश्रित वाक्य का एक उदाहरण बताइए।
14. "सब कुछ जानने वाला" के लिए एक शब्द बताइए?
15. वाक्यांश के लिए एक शब्द किसे कहते हैं ?

समेकन

इस प्रकार स्पष्ट है कि व्याकरण में शब्द की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। शब्द भंडार किसी भी भाषा की समृद्धि का मुख्य आधार है। शब्द जहाँ तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी के रूप में भाषा में अपनी समृद्धि विकसित करते हैं ,वहीं वाक्य में सम्मिलित होते हुए पद के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। शब्दों के सार्थक संयोजन से जहाँ विविध प्रकार के वाक्य निर्मित होते हैं वहीं वाक्यांश में शब्द व्यापक अर्थ को धारण करते हुए भाषा को समृद्ध करते हैं।

स्व आकलन

1. तत्सम शब्दों का तद्भव शब्दों से सही मिलान कीजिए–

तत्सम	**तद्भव**
पुष्प	आग
हस्त	मोर
अग्नि	हाथ
मयूर	फूल
शत	काम
कर्म	सौ

2. दिए गए तत्सम शब्दों के तद्भव शब्दों को लिखिए–
   प्रस्तर, आम्र, गृह, ऊष्ट्र, सूर्य, भ्रमण, श्रावण
3. दिए गए तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–
   नौ, सुई, हल्दी, ओंठ, दूध, पानी, बच्चा
4. निम्नलिखित वाक्यों को व्यवस्थित क्रम में लिखिए–
   (क) आयी माँ इसके बाद ही।
   (ख) लगाकर मन चाहिए हमें पढ़ना।
   (ग) बोलना चाहिए सत्य सदैव।
   (घ) भाई बहुत था उसका चतुर।
5. दो–दो सरल संयुक्त एवं मिश्र वाक्य उदाहरण सहित लिखिए।
6. वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखें।
   (क) जिसे गोद लिया गया हो।
   (ख) जो दिखाई ना दे।
   (ग) दूर की बात सोचने वाला।
   (घ) बढ़ा–चढ़ा कर कही गयी बात

विचार विश्लेषण

1. मिश्रित वाक्य को उदाहरण सहित समझाइए।
2. संयुक्त वाक्य किसे कहते हैं उदाहरण सहित लिखिए।
3. क्रिया किसे कहते है? इसके दो उदाहरण लिखिए।
4. प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं?
5. सावन तथा किसान शब्दों का तत्सम रूप लिखिए।
6. जिसका जन्म पहले हुआ है, इसके लिए एक शब्द बताइए।
7. पूरब और उत्तर के बीच की दिशा क्या कहलाती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं वह क्या कहे जाते हैं?
   (क) तद्भव (ख) तत्सम (ग) संकर (घ) देशज

2. निम्नलिखित में विधिवाचक वाक्य चुनिए–
   (क) बालको को माता–पिता का कहना मानना चाहिए।
   (ख) यदि वह आता तो मैं घूमने जाता।
   (ग) मैंने स्नान नहीं किया।
   (घ) कहाँ गए थे?

3. शायद धूप निकले, अर्थ के आधार पर वाक्य भेद है–
   (क) विधान वाचक
   (ख) संदेह वाचक
   (ग) विस्मय वाचक
   (घ) प्रश्नवाचक

4. अरे! यह क्या हुआ? वाक्य अर्थ की दृष्टि से है–
   (क) संदेह सूचक
   (ख) विस्मय वाचक
   (ग) प्रश्न वाचक
   (घ) निषेध वाचक

5. वाक्य के घटक होते हैं –
   (क) उद्देश्य और विधेय
   (ख) कर्ता और क्रिया
   (ग) कर्म और क्रिया
   (घ) कर्म और विशेषण

6. निम्नांकित वाक्यों में से मिश्र वाक्य कौन सा है–
   (क) चोर को देखकर सिपाही पकड़ने दौड़ा।
   (ख) सेठ जानता है कि नौकर ईमानदार है।
   (ग) नेताजी भाषण देकर चले गए।
   (घ) बिजली नहीं थी इसलिए अँधेरा था।

7. वह कौन सा व्यक्ति, है जिसने जवाहर लाल नेहरू का नाम न सुना हो' वाक्य है–
   (क) संयुक्त वाक्य
   (ख) मिश्र वाक्य
   (ग) सरल वाक्य
   (घ) इनमें से कोई नहीं
8. उसने कहा कि मैं घर जाऊँगा। वाक्य है–
   (क) प्रश्नवाचक वाक्य
   (ख) मिश्र वाक्य
   (ग) सरल वाक्य
   (घ) संयुक्त वाक्य

9. मोक्ष की इच्छा रखने वाला– मुमुक्षु
10. जिसकी आशा न की गई हो– अप्रत्याशित
11. प्राचीन आदर्शो पर चलने वाला– गतानुगतिक
12. जो कुछ भी न जानता हो– अज्ञ
13. जो इन्द्रियों से परे हो– अगोचर
14. शीघ्र प्रसन्न होने वाला– आशुतोष

प्रोजेक्ट कार्य

- शब्द उत्पत्ति से संबंधित माडल।
- कर्ता, क्रिया और कर्म से संबंधित दस वाक्य।
- वाक्य के विविध प्रकारों से संबंधित चार्ट।
- दस वाक्यांशों के लिए एक शब्द सूची।

इकाई 5

पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को पढ़ कर समझना।

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को पढकर पाठ्य वस्तु से संबंधित समझ को विकसित कर लेते हैं साथ ही इसका दैनिक जीवन में प्रयोग करने में सक्षम हो जाते हैं।
2. प्रशिक्षु, अन्य पाठ्य वस्तु जैसे पत्र–पत्रिका, समाचार पत्र कॉमिक्स, बिग–बुक, चित्र, पोस्टर, अन्य साहित्य, ब्लॉग इण्टरनेट इत्यादि का प्रयोग कर बच्चों को रुचिकर और सहज ढंग से विषय का ज्ञान करा लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, पाठ्यवस्तु से इतर अन्य पाठय सामग्रियों को पढ़ने की आदत विकसित कर लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ् वस्तुओं में भाषा, प्रयोगधर्मिता निहित रचनाशीलता एवं प्रयुक्त सृजनात्मकता की समझ विकसित कर लेते हैं।

भूमिका

प्रत्येक कक्षा के लिए औपचारिक रूप से निर्धारित पाठ्य क्रम हेतु विविध शैक्षिक सामग्रियों के संकलित रूप को पाठ्यपुस्तक कहते हैं। इन्हीं पाठ्य पुस्तकों को शिक्षक कक्षाओं में औपचारिक रूप से पढ़ाते हैं, इनके माध्यम से विद्यार्थियों में विषय के प्रति निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप अवबोध विकसित किया जाता है।

इस प्रकार पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु के अन्तर्गत जिन साधनों का प्रयोग हम करते हैं उनमें समाचार पत्र, बाल पत्रिकाएँ, कॉमिक्स, चित्र, पोस्टर, बिग बुक, अन्य साहित्य, इण्टरनेट पर उपलब्ध अन्य पाठ्य सामग्रियाँ एवं ब्लॉग इत्यादि आते हैं।

प्रस्तुतीकरण

समाचार पत्र

बाल पत्रिकाएँ

कॉमिक्स

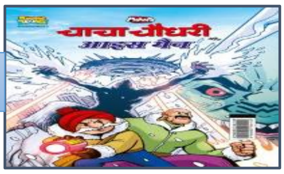

स्वतंत्र आलेख

बिग बुक

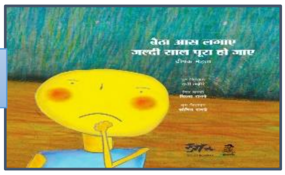

अन्य साहित्य

गतिविधि

❖ प्रशिक्षु कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों को चार समूहों में विभाजित करेंगे। प्रथम समूह को समाचार पत्र में प्रकाशित पर्यावरण से संबंधित खबर को पढ़ने का निर्देश देंगे।

❖ द्वितीय समूह को चंदा मामा/चंपक/नंदन आदि बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित जंगल के जानवरों से सम्बन्धित कहानी पढ़ने का निर्देश देंगे।

❖ तृतीय समूह को इण्टरनेट पर उपलब्ध स्वास्थ्य से सम्बन्धित ब्लॉग पढ़ने को निर्देशित करेंगे। चतुर्थ समूह को पोस्टर पर लिखित कविता को पढ़ने का निर्देश देंगे।

गतिविधि का नाम : ....

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : ....

उद्देश्यः ....

उपर्युक्त गतिविधियाँ पूर्ण हो जाने पर यही गतिविधियाँ बारी–बारी से अन्य समूहों से भी करवाएँगे। इसके बाद प्रशिक्षु यह बताएँगे कि जो गतिविधियाँ अभी आपने की वह आपके पाठ्य पुस्तक में सम्मिलित नहीं है परन्तु आपके पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित पाठों की समझ विकसित में करने में सहायक हैं। इन्हें अन्य पाठ्यवस्तु के रूप में जाना जाता है।

प्रस्तुतीकरण

भाषा शिक्षण में पठन का विशेष महत्त्व है। समझ के साथ पढ़ना और पढ़कर अपने विचार व्यक्त करना ही वास्तविक पठन कहलाता है। पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त पठन सामग्री स्वतंत्र पठन को बढ़ावा देती है जिससे अधिगमकर्ता, विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए अपने आप को तैयार कर पाता है और उसके मानसिक एवं चिंतन क्षमता में वृद्धि होती है।

कक्षा शिक्षण के पाठ्यक्रम का निर्माण एक निर्धारित लक्ष्य और उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाता है, जबकि पाठ्येत्तर शिक्षण सामग्री अधिगमकर्ता को विविध विषयों से अवगत कराती है।

इस प्रकार की सामग्री द्वारा बालक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं परिवेशीय घटनाओं से परिचित हो पाता है तथा इसके प्रति जिज्ञासु होता है। बालक के अंदर अपने परिवेश एवं वातावरण में घटित होने वाली घटनाओं के प्रति समझ विकसित होती है।

अतः किसी बालक के अंदर चिंतनशीलता, सामाजिक सरोकार इत्यादि को विस्तार देने के लिए पाठ्य पुस्तक के साथ–साथ अन्य पाठ्यवस्तु से संबंधित विषय आधारित गतिविधियों, क्रियाकलापों को कराना चाहिए, जिससे बालक की समझ विकसित हो सके, चिंतन कर सके तथा उसका दैनिक जीवन में प्रयोग कर सके।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षु कक्षा–कक्ष में बच्चों से तेनालीराम की 'दूध न पीने वाली बिल्ली' कहानी का सस्वर वाचन कराएँगे। कहानी का प्रारूप निम्नवत् है–

गतिविधि का नाम : ....

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : ....

उद्देश्यः ....

कॉमिक्स 'दूध न पीने बालो बिल्ली' (तेनाली राम की कहानी)

एक बार महाराज कृष्णदेव राय ने सुना कि उनके नगर में चूहों ने आतंक फैला रखा है। चूहों से छुटकारा पाने के लिए महाराज ने एक हजार बिल्लियाँ पालने का निर्णय लिया। महाराज का आदेश आते ही एक हजार बिल्लियाँ मँगवाई गयीं। उन बिल्लियों को नगर में बाँटा जाना था। जिसे बिल्ली दी गयी उसके हाथ में एक गाय भी दी गयी ताकि उसका दूध पिलाकर बिल्ली को पाला जा सके।

जब बिल्लियाँ बाँटी जा रही थीं इस अवसर पर लोगों के साथ तेनालीराम भी एक कतार में खड़ा हो गया उसे भी एक बिल्ली और एक गाय दी गयी। बिल्ली को घर ले जाकर उसने गरमा–गरम एक कटोरा दूध उसे पीने को दिया। बिल्लीभूखी थी। बेचारी ने जैसे ही कटोरे में मुँह डाला गर्म दूध से उसका मुँह जल गया। गाय का सारा दूध अब तेनालीराम और उसके घर के सदस्य पीते थे। अब तेनालीराम की बिल्ली बहुत कमजोर हो गयी।

3 माह बाद महाराज ने जब बिल्लियों की जाँच करवाई। गाय का दूध पीकर सबकी बिल्लियाँ मोंटी–तगड़ी हो गयीं परन्तु तेनालीराम की बिल्ली सूखकर काँटा हो चुकी थी। महाराज ने तेनालीराम से पूछा 'तुमने बिल्ली का क्या हाल बना दिया, क्या तुम इसे दूध नहीं पिलाते?

तेनालीरामः– महाराज! मैं तो रोज इसके सामने दूध भरा कटोरा रखता हूँ , अब वह दूध पीती ही नहीं है तो इसमें मेरा क्या दोष है? ऐसा सुनकर महाराज ने तुरंत एक कटोरा दूध मँगाया। महाराज ने तेनालीराम की बिल्ली को गोंद में ऊठाया। बिल्ली ने जैसे ही कटोरे में रखा दूध देखकर वह म्याऊँ–म्याऊँ करती हुई वहाँ से भाग निकली। महाराज ने बिल्ली को अच्छी तरह देखने पर पाया कि उसके मुँह पर जले का निशान था।

महाराज ने तेनालीराम को देखते हुए कहा "अरे निर्दयी! तुमने इसे जानबूझकर गर्म दूध पिलाया ताकि वह दूध न पी सके।" तेनालीराम ने उत्तर दिया, "महाराज यह देखना तो राजा का कर्तव्य है कि उसके राज्य में बिल्लियों से पहले मनुष्य के बच्चों को दूध मिलना चाहिए।"

इस बात पर महाराज ने तेनालीराम को पुरस्कृत किया और कहा "भविष्य में तुम बेजुबान जानवरों से साथ क्रूरता नहीं करोगे।"

अन्य पाठ्यवस्तु के रूप में उपर्युक्त कहानी का मौन वाचन भी कराएँगे। ताकि वे विषयवस्तु के संदर्भ विशिष्ट भावबोध को तार्किकता, निष्पक्षता एवं वस्तुनिष्ठता ग्रहण कर सकें। इसके बाद विद्यार्थियों से प्रश्न करेंगे जिससे यह समझ में आ जाए कि विद्यार्थियों को अन्य पाठ्यवस्तु के रूप में यह कहानी समझ में आ गयी है। इस क्रम में प्रशिक्षु बच्चों से प्रश्न करेंगे–

(क) राजा ने बिल्लियाँ क्यों मंगवाई?
बच्चों का उत्तर– चूहों के आतंक से छुटकारा पाने के लिए।
(ख) राजा ने जो बिल्लियाँ बाँटी उनके लिए दूध की क्या व्यवस्था की?
बच्चों का उत्तर– जिन लोगों को बिल्लियाँ दी गईं उनको साथ में एक गाय भी दी गयी।
(ग) तेनालीराम ने बिल्ली को गर्म दूध क्यों पिलाया?
बच्चों का उत्तर– ताकि बिल्ली डर जाए एवं दूध न पिए क्योंकि दूध पीने से फिर से उसका मुँह जल जाएगा।
(घ) यदि आपको खौलता गर्म दूध पीने के दिया जाए तो आप क्या करेंगे?
बच्चों का उत्तर– खौलता गर्म दूध नहीं पियेंगे।
(ड.) तेनालीराम ने बिल्ली को गर्म दूध क्यों पिलाया?
बच्चों का उत्तर– क्योंकि उसके राज्य के गरीब बच्चों को दूध उपलब्ध नहीं है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि अन्य पाठ्यवस्तु के रूप में प्रस्तुत कहानी को पढ़कर बच्चे इसे पूर्णतयः समझ भी लेते है। चूंकि अन्य पाठ्यवस्तु के पठन से बच्चों में निम्न गुणों का विकास होता है।

1. भाषा का ज्ञान एवं पठन कौशल का विकास।
2. बच्चों में विषयेत्तर अन्य पाठ्यवस्तु के अध्ययन में रुचि का उत्पन्न होना।
3. तार्किकता, चिंतनशीलता व कल्पनाशीलता का विकास।
4. बहुपठनीयता के साथ ज्ञान के विविध स्रोतों तक पहुँच कर सूचनाओं के सत्यापित कर सकने की शक्ति का विकास।
5. पठन के द्वारा समझ का विकास।
6. सहयोगी सामग्री के रूप में अन्य पाठ्यवस्तुओं की अध्ययनशीलता का विकास।
7. सकारत्मक अभिवृत्ति, नैतिकता, एवं व्यक्तित्व का विकास।

अर्थग्रहण के साथ धारा प्रवाह पठन के द्वारा ही हम अन्य पाठ्यवस्तुओं को समझकर पढ़ सकते है। इसके लिए जो पढ़ा जा रहा है, उस भाषा का ज्ञान एवं उसमें निहित अर्थों की समझ का होना पाठक के लिए आवश्यक है। अन्य पाठ्यवस्तु को समझकर पढ़ने से ही बच्चों में कलपनाशीलता एवं सृजनात्मकता जैसे गुणों का विकास होता है।

बोध प्रश्न

1. पाठ्यपुस्तक से क्या तात्पर्य है?
2. अन्य पाठ्यवस्तुओ के स्रोत में क्या–क्या आते है?
3. समझकर पढ़ने से क्या आशय है?
4. अन्य पाठ्यवस्तुओं का क्या महत्त्व है?
5. पाठ्यपुस्तक से अतिरिक्त सामग्रियों को समझ के पढ़ने का विद्यार्थियों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

समेकन

शिक्षा का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। सीखना अनवरत चलने बाती प्रक्रिया है। विद्यालयी शिक्षा का पाठयक्रम और समय निर्धारित एंव औपचारिक होता है। परीक्षा पास करना ही इसका मुख्य उद्देश्य होता है। जबकि बालक विद्यालयी शिक्षा के समय विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक गतिविधियों से घिरा रहता है। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि बालक को विद्यालयी शिक्षा के दौरान पाठ्येत्तर विषयों को पढ़ने के लिए उचित वातावरण व अवसर प्रदान किया जाये जिससे बालक परिस्थितियों से अवगत होने हेतु अपनी चिंतन एव बौद्धिक क्षमता का विकास कर सकें।

स्व आकलन

(1) सुमेलित कीजिए–

अन्य साहित्य	चाचा चौधरी
कॉमिक्स	हितोपदेश
बाल पत्रिकाएँ	समाचार पत्र
दैनिक जागरण	चंपक

(2) सही वाक्य के सामने (✓) एवं गलत वाक्य के सामने (✗) का चिहन लगाएँ–

(क) कक्षा के लिए औपचारिक रूप से निर्धारित विषय सामग्री पाठ्यक्रम कहलाती है। ( )
(ख) पाठ्य पुस्तकें शिक्षण के अनौपचारिक माध्यम हैं। ( )
(ग) समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, कॉमिक्स, बिगबुक, व स्वतंत्र आलेख पाठ्येत्तर सामग्री हैं। ( )
(घ) पंचतंत्र में हितोपदेश की कथाएँ हैं। ( )
(ड.) पाठ्येत्तर सामग्रियाँ बच्चों के स्वतंत्र चिन्तन को अवरुद्ध करती हैं। ( )

इकाई 6

औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों के अनुरूप उपयुक्त भाषा का प्रयोग।

6.1- औपचारिक भाषा
6.2- अनौपचारिक भाषा
6.3- औपचारिक और अनौपचारिक भाषा में अन्तर

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु औपचारिक तथा अनौपचारिक भाषा में अंतर कर लेते हैं।
2. प्रशिक्षु विभिन्न परिस्थितियों में अपने विचार व्यक्त करने के लिए उपयुक्त भाषा का चयन कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु पठित/अपठित गद्य–पद्य में प्रयुक्त शब्दों में निहित भावार्थ को समझकर व्यक्त कर लेते हैं।
4. प्रशिक्षु संप्रेषण में मातृभाषा का प्रयोग कर लेते हैं।
5. प्रशिक्षु नुक्कड. नाटकों में औपचारिक तथा अनौपचारिक शब्दों का प्रयोग कर लेते हैं।

भूमिका

भाषा में अद्भुत, अदृश्य शक्ति होती है। इसका स्वरूप सामाजिक संदर्भों के साथ बदलता रहता है। हम जिस समाज में रहते हैं उसी के अनुरुप भाषा का प्रयोग करते है। इसलिए ऐसी भाषा का चयन करते है जिसको वक्ता और श्रोता दोनों समझते हैं तथा अपने भावों एवं विचारों को एक–दूसरे से साझा करते हैं। **भोलानाथ तिवारी के शब्दों में** "भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित, यादृच्छिक ध्वनि–प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।" इस प्रकार हम कह सकते है कि भाषा भाव एवं विचार संप्रेषण का माध्यम है।

भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा के विविध रुपों का प्रयोग किया जाता है। इसमें मौखिक, लिखित एवं सांकेतिक भाषा प्रमुख है। मानव जन्म से ही मौखिक एवं सांकेतिक भाषा का प्रयोग करना सीखता है, जबकि लिखित भाषा का प्रयोग औपचारिक शिक्षा के दौरान सीखता है। मौखिक भाषा का प्रयोग रूढ़ एवं योगरूढ़ शब्दों/अर्थों की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है जबकि सांकेतिक भाषा का प्रयोग विशेष अर्थ एवं उद्देश्य के लिए किया जाता है। परिस्थितियों के अनुसार भाषा मुख्यतः दो प्रकार की होती है–औपचारिक एवं अनौपचारिक। ध्वनि चिह्नों के सर्वमान्य एवं व्याकरणिक व्यवस्था के अनुरुप शब्दों का लेखन, वाचन औपचारिक भाषा कहलाती है, तथा मातृभाषा, लोक भाषा एवं सामान्य बोल–चाल की भाषा, अनौपचारिक भाषा कहलाती है। पत्र लेखन ,पुस्तक लेखन, कार्यालयी व्यवहार, स्कूल–कालेज के व्याख्यान औपचारिक भाषा में होती है जबकि खेल–कूद, मौज–मस्ती, हँसी–ठहाके आदि में अनौपचारिक भाषा होती है।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : ....

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : ....

उद्देश्यः ....

❖ शिक्षक बच्चों के समक्ष निम्नांकित दो गद्यांश प्रस्तुत करेगा–

प्रथम गद्यांश–

गौरव– श्रीमान्! क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?
प्रधानाचार्य– जी हाँ, आ जाइए।
गौरव– प्रणाम सर।
प्रधानाचार्य– प्रसन्न रहो।

गौरव– श्रीमान्! मुझे अवकाश की आवश्यकता है।
प्रधानाचार्य– आप, प्रार्थना–पत्र लिखकर अपने कक्षा अध्यापक को दे दीजिए।

द्वितीय गद्यांश

मोहन– अरे! सोहन तुम कब आए?
सोहन– अरे यार! अभी कल ही आया हूँ।
मोहन– और बता तेरी पढ़ाई लिखाई कैसी चल रही है?
सोहन– ठीक चल रही है। तू अपना बता।

प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं को उपर्युक्त गद्यांशों में अंतर को रेखांकित करते हुए एक–एक वाक्य बोलने को कहेंगे तथा उन्हें औपचारिक व अनौपचारिक भाषा के प्रयोग से जोड़ेंगे।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : ....

समय : 5–7 मिनट

सहायक सामग्री : ....

उद्देश्यः ....

❖ इस गतिविधि के अंतर्गत प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं का आवश्कतानुसार समूह बनाएँगे। प्रशिक्षक विभिन्न विषयों से संबंधित औपचारिक व अनौपचारिक वार्तालाप की पर्चियाँ लिखकर एक बॉक्स में रख देंगे; जैसे– डॉक्टर–मरीज, छात्र–शिक्षक, भाई–बहन, दोस्त–मित्र आदि के बीच संवाद।

❖ अब शिक्षक प्रत्येक समूह को क्रमशः एक–एक पर्ची निकालने को कहेगे। प्रत्येक समूह पर्ची पर लिखा युग्म का अभिनय करते हुए संवाद करेंगे; जैसे–यदि किसी समूह को डॉक्टर–मरीज के बीच संवाद की पर्ची मिली तो उनसे एक डॉक्टर व दूसरा मरीज का अभिनय करेगा। यह संवाद 3 से 5 मिनट का होगा।

संवाद की समाप्ति के उपरांत प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से औपचारिक एवं अनौपचारिक शब्दों को पहचानने को कहेंगे। गतिविधि कराने के उपरांत प्रशिक्षक औपचारिक एवं अनौपचारिक शब्दों को व्याख्यान के द्वारा स्पष्ट करायेंगे।

6.1 औपचारिक भाषा

सरकारी कार्यालयों, न्यायालयों, विधायिका आदि में मानक एवं औपचारिक भाषा का व्यवहार किया जाता है। सामान्यतः कार्यालयी भाषा को औपचारिक भाषा कहा जाता है। औपचारिक भाषा में शब्दावली के कोशगत अर्थ में एकरूपता रहती है। व्यक्ति सरकारी काम–काज के समय औपचारिक भाषा का ही प्रयोग करता है। औपचारिक भाषा के प्रयोग में भाषा के मानक स्वरूप पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसमें कलापक्ष की प्रधानता होती है। इसमें भाषा के व्याकरण आदि नियमों का विशेष ध्यान दिया जाता है।

6.2 अनौपचारिक भाषा

औपचारिक भाषा से इतर जहाँ परिस्थितियों तथा अवसर आदि के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे अनौपचारिक भाषा कहते हैं। अनौपचारिक भाषा के प्रयोग में भाषा के मानक स्वरूप पर विशेष ध्यान नही दिया जाता है। इसमें भावपक्ष की प्रधानता होती हैं। इसमें भाषा के व्याकरण आदि नियमों का विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। अनौपचारिक भाषा घर, परिवार, में प्रयोग किया जाता है। इस भाषा में बोल–चाल की भाषा का प्रयोग होता है।

6.3 औपचारिक और अनौपचारिक भाषा में अंतर

औपचारिक भाषा	अनौपचारिक भाषा
1. सरकारी कार्यालयों, न्यायालयों, विधायिका आदि में प्रयोग किया जाता है।	1. इसमें अवसर या स्थान के अनुरूप व्यवहार करना जरूरी नहीं होता है।
2. औपचारिक भाषा के प्रयोग में भाषा के मानक स्वरूप पर विशेष ध्यान दिया जाता है।	2. अनौपचारिक भाषा के प्रयोग में भाषा के मानक स्वरूप पर विशेष ध्यान नही दिया जाता है।
3. इसमें कलापक्ष की प्रधानता होती है।	3. इसमें भावपक्ष की प्रधानता होती हैं।
4. इसमें भाषा के व्याकरण आदि नियमों का विशेष ध्यान दिया जाता है।	4. इसमें भाषा के व्याकरण आदि नियमों का विशेष ध्यान नही दिया जाता है।
5. सार्वजनिक स्थानों पर प्रयोग किया जाता है।	5. घर, परिवार आदि में प्रयोग किया जाता है।
6. मानक–भाषा का प्रयोग होता है।	6. बोल–चाल की भाषा का प्रयोग होता है।

बोध परीक्षण

1. औपचारिक भाषा किसे कहते है?
2. अनौपचारिक भाषा किसे कहते है?
3. अपने घर परिवार में हम किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं?
4. औपचारिक तथा अनौपचारिक भाषा में क्या अंतर है।
5. कक्षा–कक्ष में हम अपने शिक्षक के साथ किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं?
6. औपचारिक और अनौपचारिक परिस्थितियों में बात करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

समेकन

हमारे दैनिक जीवन में विभिन्न परिस्थितियाँ आती हैं जिसमें हमें भावाभिव्यक्ति करनी होती है। परिस्थितियों के अनुरुप भाषा का चयन करना पड़ता है। कहीं हम स्वच्छंद होकर सहजता और सरसता के साथ अपनी अभिव्यक्ति करते हैं तो कहीं हम सोच–विचार कर स्थितियों को ध्यान में रखते हुए मानक भाषा में अपने भाव व विचार व्यक्त करते हैं। अपने मित्रों के साथ अनौपचारिक शैली में बात करते हैं; जैसे–क्या कर रहे हो? तो वहीं अपने शिक्षक से कक्षा–कक्ष में बात करते समय अथवा सार्वजनिक जगहों पर हम औपचारिक भाषा का प्रयोग करते हैं; जैसे–महोदय! क्या मैं अंदर आ सकता हूँ? कई बार औपचारिक और अनौपचारिक संदर्भों के अनुसार भाषा का प्रयोग कठिन हो जाता है।

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. औपचारिक और अनौपचारिक परिस्थितियों में प्रयुक्त भाषा प्रयोग को समझाइए।
2. औपचारिक और अनौपचारिक भाषा में अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. अनौपचारिक भाषा से आप क्या समझते हैं?
4. सम्मानसूचक शब्द से क्या आशय है?
5. हम निम्नांकित परिस्थितियों में औपचारिक या अनौपचारिक व्यवहार करेंगे–

(क) दोस्तों से बात करने में।
(ख) अपने विद्यालय में शिक्षक से बात करते समय।
(ग) बैंक में धन निकासी एवं जमा करते समय।

6. औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों के अनुरूप भाषा प्रयोग पर अपने विचार लिखिए।

स्व–आकलन

1. अनौपचारिक कथन क्या है?
2. औपचारिक भाषा का प्रयोग कब किया जाता है?
3. अनौपचारिक भाषा का प्रयोग किसके लिए किया जाता है?
4. विद्यालय में शिक्षक–छात्र के बीच संवाद के लिए किस भाषा का प्रयोग होता है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. किस स्थान पर भाषा का स्वरूप अनिश्चित होता है?
   (क) घर (ख) बैंक (ग) विद्यालय (घ) डाकघर
2. किस स्थान पर भाषा का स्वरूप निश्चित होता है?
   (क) डाकघर (ख) विद्यालय (ग) बैंक (घ) उपर्युक्त सभी
3. अनौपचारिक शब्द में उपसर्ग है।
   (क) अ (ख) अन् (ग) अन (घ) उपचार
4. 'अनौपचारिक' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है।
   (क) अ (ख) अन् (ग) उपचार (घ) इक
5. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के आधार पर रिक्त स्थानों को भरिए–
   (औपचारिक, अनौपचारिक, घर–परिवार, सार्वजनिक स्थल, बोलचाल, मानक भाषा)
   (क) दोस्तों से बात करते समय हम..भाषा का प्रयोग करते हैं।
   (ख) अनौपचारिक भाषा का प्रयोग हम..में करते हैं।
   (ग) औपचारिक कथनों में..भाषा का प्रयोग होता है।
   (घ) औपचारिक कथन का प्रयोग हम...पर करते है।
   (च) अनौपचारिक परिस्थितियों में हम...................................... भाषा का प्रयोग करते हैं।

विषय विस्तार

- औपचारिक और अनौपचारिक परिस्थितियों में प्रयुक्त भाषा प्रयोग को समझाइए।
- औपचारिक और अनौपचारिक भाषा में अंतर स्पष्ट कीजिए।
- अनौपचारिक भाषा से आप क्या समझते हैं?
- सम्मानसूचक शब्द से क्या आशय है?
- हम निम्नांकित परिस्थितियों में औपचारिक या अनौपचारिक व्यवहार करेंगे–
  (क) दोस्तों से बात करने में।
  (ख) अपने विद्यालय में शिक्षक से बात करते समय।
  (ग) बैंक में धन निकासी एवं जमा करते समय।
- औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों के अनुरूप भाषा प्रयोग पर अपने विचार लिखिए।

प्रोजेक्ट वर्क

1. अपने गांव की कच्ची सड़क को शहर के मुख्य मार्ग से जोड़ने के लिए जिलाधिकारी महोदय को प्रार्थना पत्र लिखिए।
2. अपने विद्यालय में किसी विशेष घटना का उल्लेख करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

इकाई 7

अधिगम प्रतिफल का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन।

7.1- अधिगम
7.2- अधिगम प्रतिफल
7.3- मापन
7.4- मूल्यांकन
7.5- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1– प्रशिक्षु, अधिगम की अवधारणा व्यक्त कर लेते हैं।
2– प्रशिक्षु, अधिगम प्रतिफल की अवधारणा स्पष्ट करते हैं।
3– प्रशिक्षु, अधिगम एवं अधिगम प्रतिफल में अंतर कर लेते हैं।
4– प्रशिक्षु, बच्चों के अधिगम प्रतिफल का मापन कर लेते हैं।
5– प्रशिक्षु बच्चों के अधिगम प्रतिफल का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कर लेते हैं।
6– प्रशिक्षु, बच्चों के सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण कर, आवश्यकतानुसार अपनी शिक्षण प्रविधि में परिवर्तन एवं बच्चों का उपचारात्मक शिक्षण कर लेते हैं।
7– प्रशिक्षु, बच्चों का गतिविधियों के द्वारा मूल्यांकन कर लेते हैं।

भूमिका

मानव जीवन पर्यंत कुछ न कुछ सीखता रहता है। आयु के अनुरूप अधिगम (सीखने) के विभिन्न स्तर निर्धारित हैं इन स्तरों का निर्धारण विभिन्न मनोवैज्ञानिक व शिक्षण शास्त्रीय पद्धतियों द्वारा किया गया है। कोई भी बालक अधिगम के अपेक्षित स्तर को प्राप्त कर लिया है या नहीं? यह जानने के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता पड़ती है। मूल्यांकन शिक्षण–प्रक्रिया का महत्वपूर्ण घटक है।

इस अध्याय के अन्तर्गत हम अधिगम, अधिगम प्रतिफल, मापन, मूल्यांकन तथा व्यापक एवं सतत् मूल्यांकन पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

गतिविधि–(विषय वस्तु के उन्मुखीकरण हेतु)

इस गतिविधि के अन्तर्गत प्रशिक्षक हिन्दी वर्णमाला (अल्पप्राण, महाप्राण, सघोष व उच्चारण स्थान) से सम्बन्धित 10 बहुविकल्पीय प्रश्नों का एक गूगल फॉर्म विकसित करेंगे। गूगल फार्म का लिंक प्रशिक्षुओं के whatsapp group में साझा करते हुए उसे 10 मिनट में हल करने को कहेंगे। फिर सभी प्राप्त प्रतिक्रियाओं (Responces) से Excel Sheet व पाई डायग्राम generate कर उसका प्रदर्शन Power Point से करते हुए चर्चा करेंगे कि अलग–अलग व्यक्तियों के अधिगम स्तर अलग–अलग हैं व इसकी जानकारी हमें जिस प्रक्रिया के माध्यम से मिल रही है, उसे कहते है – मूल्यांकन।

अधिगम प्रतिफल का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करना

7.1 अधिगम (Learning)

अभिगम की साधारण अर्थ होता है–सीखना। सीखना, अनुभव, अध्ययन, शिक्षण एवं अभ्यास के द्वारा व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना है। यह परिवर्तन क्षणिक न होकर अपेक्षाकृत स्थायी होता है। जैसे– यदि किसी घर में TV अचानक खराब हो जाती है और कोई व्यक्ति उसे 2–4 बार ठोंक–पीट दे और TV चलने लगे तो इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है के अमुक व्यक्ति ने TV की मरम्मत करना

सीख लिया। यदि वह व्यक्ति बार–बार खराब हुई TV की मरम्मत कर लेता है तभी माना जाएगा उसने TV की मरम्मत करना सीख लिया।

इसीलिए व्यवहार में हुए स्थायी परिवर्तन को ही सीखना माना जाता है किन्तु यह स्थायित्व अभ्यास पर भी निर्भर करता है।

सारटेन, नॉर्थ, स्ट्रेण एवं चैपमैन के अनुसार ''सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुभव या अभ्यास के फलस्वरुप व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है।

गेट्स एवं अन्य के शब्दों में ''अनुभव एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यवहार में रूपान्तर लाना ही अधिगम है।

7.2 अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)

अधिगम संप्राप्ति मापन योग्य कौशलों, क्षमताओं ज्ञान व मूल्यों को रेखांकित करने वाले वे प्रतिमान हैं, जिनकी अपेक्षा प्रकरण के पूर्ण होने के उपरान्त बच्चों से की जाती है। यह शिक्षक केन्द्रित न होकर छात्र केन्द्रित होता है, जिसमें इसका उल्लेख किया जाता है कि बच्चे क्या कर सकेंगे, न कि शिक्षक क्या सिखाएगा?

किसी भी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के द्वारा बच्चों के व्यवहार में जिन परिवर्तनों की प्रत्याशा की जाती है, उन्हें अधिगम संप्राप्ति कहते हैं।

उदाहरणार्थ– यदि किसी कक्षा में बच्चों को 'हिन्दी वर्णमाला के वर्णों का शुद्ध उच्चारण'' का अध्यापन किया जाता है तो निश्चित रूप से उसका उद्देश्य बच्चों से के वर्ण उच्चारण को परिमार्जित कर उनके उच्चारण सम्बन्धी व्यवहार में परिवर्तन लाना है।

विद्यार्थियों के व्यवहार में इस वांछित परिवर्तन की प्रत्याशा हेतु जो मापन योग्य मानक निर्धारित किये जाते हैं, वे अधिगम प्रतिफल कहलाते हैं।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन की अवधारणा को समझने हेतु मापन (Measurement) की अवधारणा को समझना अपरिहार्य है।

7.3 मापन (Measurement)

किसी मूर्त एवं अमूर्त वस्तु की विशेषता गुण–धर्म अथवा परिमाण को आंकिक रूप में व्यक्त करना ही मापन कहलाता है। जैसे– किसी कपड़े के आमाप (Size) का मीटर या सेंटीमीटर के अंको में व्यक्त करना, किसी बच्चे की बुद्धि को बुद्धि लब्धि के आंकिक मान (100, 110,120 इत्यादि) में व्यक्त करना।

स्टीवेंस के अनुसार– ''मापन की किन्हीं स्वीकृत नियमों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया है।''

7.4 मूल्यांकन (Evaluation)

किसी निश्चित लक्ष्य (अधिगम प्रतिफल) के सापेक्ष मापन से प्राप्त अंकों का मूल्य निर्धारण ही मूल्यांकन कहलाता है।

दूसरे शब्दों में– मापन के द्वारा प्राप्त किसी वस्तु के आंकिक मान की निर्धारित लक्ष्य के प्रति अनुरूपता का परीक्षण ही मूल्यांकन है।

मूल्यांकन = मापन + मूल्य निर्धारण

जैसे– किसी कपड़े के आमाप (Size) को यदि आंकिक मान प्रदान किया जाए कि वह 100 सेंटीमीटर है तो यह मापन है, लेकिन उसके लक्ष्य (जैसे– पैंट सिलवाना है या दस्ताना) के सापेक्ष इसकी अनुरूपता का निर्धारण ही मूल्यांकन है। हो सकता है कि वह कपड़ा 4 दस्तानों के लिए पर्याप्त किन्तु 1 पैण्ट के लिए पर्याप्त न हो।

क्विलिन एवं हन्ना के अनुसार ''छात्रों के व्यवहार में विद्यालय द्वारा लाए गए परिवर्तनों के विषय में प्रमाणों के संकलन एवं उसकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन कहलाती है।''

NCERT ने मूल्यांकन के संदर्भ कहा है कि मूल्यांकन प्रक्रिया देखती है कि–

- निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है?
- कक्षा में दिए गए अधिगम अनुभव कितने प्रभावशाली रहे?
- शिक्षा के उद्देश्य कितने अच्छे ढंग से पूर्ण हो रहे हैं?

मूल्यांकन की प्रक्रिया

मूल्यांकन की प्रक्रिया के मुख्यत: 3 घटक हैं–

1. शिक्षण उद्देश्य
2. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया
3. व्यवहार में परिवर्तन

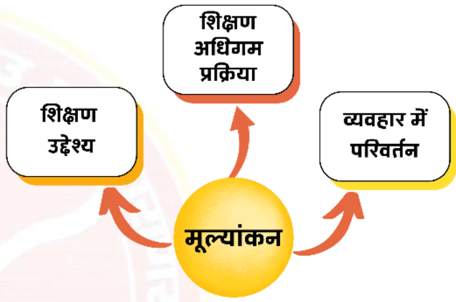

इस प्रकार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के उपरान्त शिक्षण उद्देश्यों के प्राप्ति की स्थिति जानना ही मूल्यांकन है।

7.5 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (Continous and comprehensive Evaluation)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, कोठारी आयोग एवं शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 ने बच्चों की शैक्षिक प्रगति जाँचने के लिए समय–समय पर मूल्यांकन करने का सुझाव दिया है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 में यह उल्लेख किया गया है कि मूल्यांकन एक सतत् एवं व्यापक प्रक्रिया है।

मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चों का स्तरीकरण करना नहीं अपितु अपनी शिक्षण प्रक्रिया की सार्थकता व दिशा तय करना है। साथ ही बच्चों की आवश्यकता समझना भी इसका एक महत्त्वपूर्ण घटक है।

'सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन' मूलतः 3 शब्द चर्चा योग्य है–

(1) सतत् (2) व्यापक (3) मूल्यांकन

चूँकि मूल्यांकन की चर्चा पहले हो चुकी है। अतः यहां केवल सतत् एवं व्यापक पर ही चर्चा की जायेगी।

1. सतत्

सतत् का शाब्दिक अर्थ है– लगातार या निरंतर। पुरानी मूल्यांकन प्रणाली में जहाँ पूरे वर्ष के अध्यापन के उपरांत अंत में बच्चों की परीक्षा होती थी वहीं इस प्रणाली मे पूरे सत्र में नियत अवधि पर कई बार परीक्षा आयोजित की जाती है। सत्रांत में परीक्षा आयोजित करने से बच्चों के प्रदर्शन एवं अपनी शिक्षण पद्धतियों में वांछित सुधार का अवसर नहीं मिल पाता था।

2. व्यापक

'व्यापक' का शाब्दिक अर्थ है 'विस्तृत'। इस प्रकार व्यापक शब्द का आशय है कि मूल्यांकन प्रक्रिया केवल अकादमिक ज्ञान तक ही सीमित नहीं होती, बल्कि छात्रों के समग्र एवं सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखती है। इसमें शैक्षिक कौशलों के साथ–साथ सह शैक्षिक गतिविधियाँ, खेल–कूद, कला, संगीत, नैतिकता, जीवन मूल्य, संवेदनशीलता, सामाजिक कौशल आदि का मूल्यांकन भी शामिल है। इसका उद्‌देश्य बच्चे के व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू की पहचान कर उसका यथोचित विकास करना है।

सतत् एवं मूल्यांकन के अन्तर्गत बच्चों के प्रदर्शन में शिक्षक की शिक्षण पद्धतियों एवं बच्चों की अधिगम संप्राप्ति जानने हेतु समय–समय पर मूल्यांकन किया जाता है. जो मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं–

(क) संरचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assesment)–

संरचनात्मक मूल्यांकन को सत्र के बीच–बीच में आयोजित किया जाता है ताकि यह ज्ञात किया जा सके कि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया सही दिशा में गतिमान है या नहीं? इससे पहले कि हम अपने गंतव्य के इतर अन्यत्र पहुँच जाएँ, हमें अपनी यात्रा के दिशा का ज्ञान कर लेना चाहिए। इसी के परीक्षण हेतु संरचनात्मक मूल्यांकन किया जाता है। इसका उद्‌देश्य समय रहते शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में वांछित सुधार लाना है।

(ख) योगात्मक मूल्यांकन (Summative Assessment)–

योगात्मक मूल्यांकन, वह मूल्यांकन है जिसमें सत्रांत में बच्चों की अधिगम सम्प्राप्ति का आकलन किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन का आयोजन कई संरचनात्मक मूल्यांकनों से प्राप्त परिणामों के अनुरूप सुधार को लागू करने के उपरांत किया जाता है।

हिन्दी शिक्षण में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्त्व

हिन्दी शिक्षण में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता व महत्त्व निम्नवत् है–

1. छात्रों की प्रगति का आकलन–

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के द्‌वारा बच्चों. की भाषा, व्याकरण एवं साहित्य के क्षेत्र में उनके अधिगम की प्रगति का आकलन किया जा सकता है।

2. शिक्षण प्रक्रिया में सुधार की आवश्यकता का ज्ञान–

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के परिणामों द्‌वारा ही यह ज्ञात होता है कि शिक्षण प्रक्रिया सही दिशा में गतिमान है या उसमें सुधार की आवश्यकता है।

3. पाठ्‌यक्रम का मूल्यांकन एवं विकास–

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के द्वारा ही पाठ्यक्रम की अनुकूलता का भी परीक्षण होता है। मूल्यांकन के द्वारा ही पता चलता कि पाठ्‌यक्रम बच्चों के स्तरानुकूल है कि नहीं।

4. प्रेरणा एवं स्वमूल्यांकन को प्रोत्साहन–

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के द्वारा शिक्षक के साथ–साथ छात्रों को भी अपनी स्थिति का ज्ञान हो पाता है। अच्छे प्रदर्शन करने वाले छात्रों में जहाँ आत्म विश्वास का संचार होता है वहीं अपेक्षाकृत न्यून प्रदर्शन करने वाले बच्चों को यह पता चलता हैं कि उन्हें किन बिन्दुओं पर अधिक परिश्रम की आवश्यकता है।

5. व्यक्तिगत ध्यान और उपचारात्मक शिक्षण–

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा प्राप्त परिणामों के विश्लेषण से न्यून प्रदर्शन वाले बच्चों को चिह्नित कर उनका उपचारात्मक शिक्षण किया जा सकता है।

गतिविधि– कक्षा 2 के बच्चों के लिए बुद्धि परीक्षण (IQ Test) प्रश्नावली डिजाइन करते समय, इसे रोचक और उनकी उम्र के अनुसार होना चाहिए। यहां एक सरल प्रश्नावली और निर्देश दिए जा रहे हैं–

निर्देश–

1. **समय सीमाः–** प्रत्येक प्रश्न के लिए 1–2 मिनट का समय दें।
2. **प्रश्नों का प्रकारः–** विभिन्न प्रकार के प्रश्न होंगे जैसे कि चित्र आधारित, मौखिक, और तर्क आधारित।
3. **उत्तर देने का तरीकाः–** बच्चे मौखिक रूप से या लिखित रूप में उत्तर दे सकते हैं।
4. **मूल्यांकनः–** प्रत्येक सही उत्तर के लिए अंक दिए जा सकते हैं।

प्रश्नावली

1. पैटर्न पहचाननाः–

दिखाए गए पैटर्न को देखें:– अगला रंग क्या होगा?

2. चित्र पहेलियाँः–

तीन चित्र दिखाए जाएँगेः– एक सेब, एक केला, एक गाड़ी। कौन सा चित्र बाकी दो से अलग है?

3. संख्याओं की पहेलीः–

2, 4, 6, 8, ... क्या आएगा अगले नंबर की जगह?

4. मौखिक पहेलियाँः–

मैं हवा में उड़ता हूं लेकिन पक्षी नहीं हूं, मैं क्या हूं?

5. वर्गीकरण की गतिविधिः–

इनमें से कौन सी चीज खाने योग्य नहीं है? रोटी, पुस्तक, सेब।

6. मौखिक तर्कः–

अगर सभी कुत्ते जानवर हैं और टॉमी एक कुत्ता है, तो क्या टॉमी एक जानवर है?

इस प्रश्नावली का उद्देश्य बच्चों की तार्किक सोच, पैटर्न पहचान, और समस्या सुलझाने की क्षमता का मूल्यांकन करना है। बच्चों को आरामदायक माहौल में और खेल–खेल में यह परीक्षण कराने से वे अधिक सहज महसूस करेंगे।

बोध परीक्षण

1. **निम्नांकित कथनों की सत्यता या असत्यता के बारे में बताइए–**

(क) अधिगम एवं परिपक्वता समानार्थी है। (सत्य/असत्य)

(ख) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के अन्तर्गत केवल अकादमिक ज्ञान का ही परीक्षण होता है। (सत्य/असत्य)

(ग) मूल्यांकन के परिणामों द्वारा ही ज्ञात होता है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सही दिशा में गतिमान है या नहीं। (सत्य/असत्य)

(घ) अधिगम में वांछनीय एवं अवांछनीय दोनो ही प्रकार के व्यवहार का बोध होता है। (सत्य/असत्य)

2. सुमेलित कीजिए–

'क'	'ख'
(अ) अधिगम का सामान्य अर्थ	1 अधिगम संप्राप्ति
(ब) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का उद्देश्य	2 सीखना
(स) सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुभव या अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता हैं।	3 गेट्स
(द) अनुभव एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यवहार में रूपान्तर अधिगम है।	4 सारटेन, वॉर्थ स्ट्रेंज एवं चैपमैन

स्व आकलन

1– किसी वस्तु के गुण–धर्म एवं परिमाण को आंकिक मान प्रदान करना कहलाता है–
(अ) मूल्यांकन
(ब) मापन
(स) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन
(द) उपर्युक्त सभी

2– 'मापन' द्वारा प्राप्त परिणामों का मूल्य निर्धारण कहलाता है–
(अ) मूल्यांकन
(ब) मापन
(स) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन
(द) उपर्युक्त सभी

3– शिक्षण एवं अभ्यास के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन कहलाता है–
(अ) अधिगम प्रतिफल
(ब) मापन
(स) मूल्यांकन
(द) अधिगम

4– समय–समय पर सुधार के उद्देश्य से किया गया मूल्यांकन कहलाता है–
(अ) योगात्मक मूल्यांकन
(ब) संरचनात्मक मूल्यांकन
(स) संस्थात्मक मूल्यांकन
(द) इनमें से कोई नहीं

5– शिक्षा का अधिकार अधिनियम कब लागू हुआ?
(अ) 2007
(ब) 2008
(स) 2009
(द) 2010

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मूल्यांकन एक प्रक्रिया है–
(अ) विकासात्मक (ब) सतत्
(स) नियमित (द) खण्डित

2. मयंक को गणित में 80 अंक प्राप्त हुए है। यह है–
(अ) मापन (ब) मूल्यांकन
(स) दोनों (द) कोई नहीं

3. मापन होता है–
(अ) मात्रात्मक (ब) गुणात्मक
(स) मूल्यात्मक (द) कोई नहीं

4. मूल्यांकन की प्रकृति है–
(अ) मात्रात्मक (ब) गुणात्मक
(स) मूल्यात्मक (द) कोई नहीं

5. ....के बिना मूल्यांकन संभव नहीं है–
   (अ) लेखनी   (ब) कागज
   (स) मापन   (द) मात्रा
6. मूल्यांकन प्रक्रिया के कौन से घटक है–
   (अ) शिक्षण उद्देश्य   (ब) अधिगम प्रक्रिया
   (स) व्यवहार में परिवर्तन   (द) उपर्युक्त सभी
7. सत्र के बीच–बीच में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सुधारार्थ किया जाने वाला मूल्यांकन कहलाता है–
   (अ) संरचनात्मक मूल्यांकन   (ब) योगात्मक मूल्यांकन
   (स) संकलित मूल्यांकन   (द) उपर्युक्त सभी
8. सत्रांत में किया जाने वाला मूल्यांकन कहलाता है–
   (अ) संरचनात्मक मूल्यांकन   (ब) योगात्मक मूल्यांकन
   (स) सतत मूल्यांकन   (द) व्यापक मूल्यांकन

प्रोजेक्ट कार्य

परिषदीय प्राथमिक विद्यालय की किसी भी कक्षा की हिन्दी पुस्तक के किसी पाठ के शिक्षण के उपरांत उस पाठ हेतु निर्धारित (सीखने का प्रतिफल) की प्राप्ति के परीक्षण हेतु एक प्रश्नावली का निर्माण कीजिए। ध्यान रहे कि पुस्तक में दिए गए अभ्यास प्रश्नों को प्रश्नावली में सम्मिलित न किया जाए।

पाठ योजना

(कहानी)

दिनांक :	कक्षा : 2	अवधि : 35 मिनट
कालांश : 1 घंटा	विषय : हिंदी	प्रकरण : 'चाँद'

सामान्य उद्देश्य	1. विद्यार्थियों में हिन्दी विषय के प्रति रुचि जागृत करना। 2. विद्यार्थियों में शुद्ध एवं स्पष्ट शब्दों के लेखन क्षमता का विकास करना। 3. विद्यार्थियों में मातृभाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना। 4. विद्यार्थियों के शब्द भंडार में वृद्धि करना। 5. विद्यार्थियों में भाषा के भावों की समझ की क्षमता का विकास करना।
विशिष्ट उद्देश्य	1. विद्यार्थी 'चाँद' नामक कहानी में निहित भावों को लिख सकेंगे। 2. विद्यार्थी कहानी के आधार पर 'चाँद' के विषय में लिख सकेंगे। 3. विद्यार्थी 'चाँद' पाठ में आए कठिन शब्दों का उच्चारण कर उसकी सूची बना सकेंगे। 4. विद्यार्थी पाठ के आधार पर 'चाँद' के आकार को समझकर व्यक्त कर सकेंगे। 5. विद्यार्थी पठित 'चाँद' पाठ के आधार पर चाँद और सूरज के बीच भेद कर सकेंगे।
सहायक सामग्री–	 मॉडल, चित्र, पाठ्यवस्तु, I. C. T. वीडियो आदि।
पूर्व ज्ञान	विद्यार्थी 'चंद्रमा' के विषय में सामान्य जानकारी रखते है।

प्रस्तावना

छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका कथन	विद्यार्थी अनुक्रिया
1. बच्चों! रात में आसमान में क्या– क्या दिखाई देता है?	चाँद, तारे
2. चाँद पूर्णिमा की रात में कैसा दिखाई देता है?	गोल
3. चाँद का रंग कैसा होता है?	सफेद / पीला
4. चाँद के विषय में और क्या जानते हो?	समस्यात्मक

उद्देश्य कथन– बच्चों! आज हम लोग 'किसलय' पाठ्यपुस्तक में संकलित 'चाँद' नामक पाठ का अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

अन्विति– "गर्मियों की रात .... कहानियाँ सुनाएँगे।" **आदर्श वाचन–** छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका द्वारा प्रस्तुत अन्विति का उचित विराम चिह्नों, आरोह–अवरोह के साथ आदर्श वाचन किया जाएगा तथा श्यामपट्ट पर चंद्रमा का चित्र बनाकर बच्चों को दिखाया जाएगा। **अनुकरण वाचन–** कतिपय विद्यार्थियों द्वारा उचित विराम चिह्नों तथा आरोह–अवरोह के साथ प्रस्तुत कहानी के अनुच्छेदों का अनुकरण वाचन किया जाएगा।	

काठिन्य निवारण

शब्द	युक्ति	अर्थ	विद्यार्थी अनुक्रिया
रात	विलोम कथन	दिन	विद्यार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका में लिख रहे हैं।
चाँद	पर्याय कथन	शशि, चंद्रमा, चंद्र, चंदा, हिमांशु, मयंक, राकेश	
चट्टान	अर्थ कथन	पत्थर का अत्यधिक विशाल खण्ड	
कल	विलोम कथन	आज	
सूरज	वाक्य प्रयोग विधि	सूरज रोज सुबह पूरब दिशा में निकलता है।	
मिट्टी	मात्रात्मक	ह्रस्व इ (ि)तथा दीर्घ ई(ी) की मात्रा	

बोध प्रश्न

1–साबिर और सना को आकाश में गोल–गोल थाली जैसा क्या दिखाई दिया?	चाँद
2–बच्चों ! 'आज' शब्द का विलोम क्या होगा?	कल
3–चंद्रमा किसका चक्कर लगाता है?	धरती का
4–सूरज तारा क्यों है?	क्योंकि तारों की अपनी रोशनी होती है।
5–कुछ लोग किसमें बैठकर चाँद पर गये?	रॉकेट
6–यदि सूरज नहीं हो तो क्या–क्या नहीं होगा?	विद्यार्थी कल्पनाशीलता के आधार पर अलग–अलग उत्तर देंगे।

श्यामपट्ट कार्य

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका काठिन्य निवारण तथा बोध प्रश्नों के उत्तर को श्यामपट्ट पर लिखेंगे।	विद्यार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।

निरीक्षण कार्य– छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका द्वारा कक्षा में घूम–घूम कर विद्यार्थी अनुक्रियाओं का निरीक्षण कार्य किया जाएगा।

पुनरावृत्ति के प्रश्न

1. हमें जीने के लिए कौन–कौन सी चीजें जरुरी हैं?
2. 'चाँद' किसके प्रकाश से चमकता है?
3. 'चाँद' का पर्यायवाची शब्द लिखिए।
4. सूरज कब निकलता है?
5. तारा शब्द में कौन–सी मात्रा है?
6. 'चाँद' को और क्या–क्या कहते है?

गृहकार्य

1. 'चाँद' विषय पर 5 वाक्य लिखिए।
2. 'सूरज' विषय पर 5 वाक्य लिखिए।
3. 'चाँद' पर कोई कविता याद करके कक्षा–कक्ष में सुनाइए।

डी०एल०एड० प्रथम सेमेस्टर
मॉडल प्रश्न–पत्र (तृतीय सत्र–2024)
षष्टम प्रश्न–पत्र

समय : 1 घंटा	विषय : हिंदी	पूर्णांक : 25

निर्देश

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के निर्धारित अंक प्रश्न के सम्मुख दिए गए हैं।
2. इस प्रश्न पत्र में तीन प्रकृति के प्रश्न सन्निहित है।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के सही विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लगभग तीस (30) शब्दों में, लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लगभग पचास (50) शब्दों में लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (प्रत्येक प्रश्न हेतु एक अंक)

प्रश्न 1. 'ग्राम श्री' कविता के रचनाकार हैं–
(क) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (ख) महादेवी वर्मा
(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) सुमित्रानंदन पन्त

प्रश्न 2. 'असमंजस' शब्द का समानार्थी शब्द है–
(क) शंका (ख) दुविधा
(ग) संशय (घ) संयम

प्रश्न 3. 'अंक' शब्द का अर्थ नहीं है–
(क) गोद (ख) बकरा
(ग) संख्या (घ) नाटक का एक खंड

प्रश्न 4. 'अपना सा मुंह लेकर रह जाना' मुहावरे का प्रसंगानुकूल सही अर्थ होगा–
(क) अपनी प्रशंसा अपने आप करना (ख) शर्मिंदा होना
(ग) बुद्धि भ्रष्ट होना (घ) बहुत क्रोधित होना

प्रश्न 5. 'मोहन प्रयाग में रहता है।' वाक्य में 'उद्देश्य' है–
(क) रहता (ख) है
(ग) प्रयाग (घ) मोहन

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक प्रश्न हेतु एक अंक)

प्रश्न 6. 'आँख का तारा' मुहावरे का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य प्रयोग कीजिए।

प्रश्न 7. 'सोदाहरण लोकोक्ति की परिभाषा दीजिए ।

प्रश्न 8. किस कवि को महाप्राण के उपनाम से जाना जाता है।

प्रश्न 9. 'देशज शब्द' किसे कहते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 10. सरल वाक्य की परिभाषा देते हुए उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

प्रश्न 11. 'स्वजन' एवं 'श्वजन' में अंतर स्पष्ट कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक प्रश्न हेतु 2 अंक)

प्रश्न 12. 'प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं? चार उदाहरण प्रस्तुत कर कीजिए।

प्रश्न 13. किसी एक त्योहार पर अपने शब्दों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति का प्रस्तुतीकरण कीजिए।

प्रश्न 14. अर्थ के आधार पर भक्स के कितने भेद है? उदाहरण सहित समझाइए।

प्रश्न 15. 'प्रकृति का सुकुमार कवि' के रूप में हिन्दी साहित्याकाश में कौन विख्यात है? उनकी प्रमुख रचनाओं का नाम लिखिए।

प्रश्न 16. अधिगम प्रतिफल को परिभाषित करते हुए उदाहरण के द्वारा स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 17. शिक्षण प्रक्रिया में मूल्यांकन के महत्त्व को रेखांकित कीजिए।

प्रश्न 18. गद्य एवं पद्य के मध्य प्रमुख अंतरों को स्पष्ट कीजिए।

भाषायी सन्दर्भ में एन.ई.पी. 2020

भारत संस्कृति का समृद्ध भंडार है— जो हजारों वर्षों में विकसित हुआ है और यहां की कला, साहित्यिक कृतियों, प्रथाओं, परंपराओं, भाषाई, अभिव्यक्तियों, कलाकृतियों, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के स्थलों इत्यादि में परिलक्षित होता हुआ दिखता है।

भारतीय कला एवं संस्कृति का संवर्धन न सिर्फ राष्ट्र बल्कि व्यक्तियों के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। बच्चों में अपनी पहचान और अपनेपन का भाव तथा अन्य संस्कृतियों और पहचानों की सराहना का भाव पैदा करने के लिए सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति जैसी प्रमुख क्षमताओं को बच्चों में विकसित करना जरूरी है। बच्चों में अपने सांस्कृतिक इतिहास कला, भाषा, एवं परंपरा की भावना और ज्ञान के विकास द्वारा ही एक सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान और आत्म—सम्मान बच्चों में निर्मित किया जा सकता है।

भाषा निस्सन्देह कला एवं संस्कृति से अटूट रूप से जुड़ी हुई है। विभिन्न भाषाएं दुनिया को भिन्न तरीके से देखती हैं इसलिए, मूल रूप से किसी भाषा को बोलने वाला व्यक्ति अपने अनुभवों को कैसे समझता है ? या उसे किस प्रकार ग्रहण करता है? यह उस भाषा की संरचना से तय होता है। विशेष रूप से किसी संस्कृति के लोगों का दूसरों के साथ बात करना जैसे परिवार के सदस्यों, प्राधिकार प्राप्त व्यक्तियों, समकक्षों और अपरिचित आदि भाषा से प्रभावित होता है तथा बातचीत के तौर—तरीकों को भी प्रभावित करती है। लहज़ा, अनुभवों की समझ और एक ही भाषा के व्यक्तियों की बातचीत में अपनापन यह सभी संस्कृति का प्रतिबिंब और दस्तावेज है। अतः संस्कृति हमारी भाषाओं में समाहित है। साहित्य नाटक, संगीत, फिल्म आदि के रूप में कला की पूरी तरह सराहना करना बिना भाषा के संभव नहीं है। संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए, हमें उस संस्कृति की भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन करना होगा। जैसा की दुनिया भर के कई विकसित देशों में यह देखने को मिलता है कि अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं में शिक्षित होना कोई बाधा नहीं है बल्कि, वास्तव में शैक्षिक, सामाजिक और तकनीकी प्रगति के लिए इसका बहुत बड़ा लाभ ही होता है। भारत की भाषाएं दुनिया में सबसे समृदध, सबसे वैज्ञानिक, सबसे सुंदर और सबसे अधिक अभिव्यंजक भाषा में से हैं, जिनमें प्राचीन और आधुनिक साहित्य गद्य और कविता दोनों के विशाल भंडार हैं। इन भाषा में लिखी गई फिल्म, संगीत और साहित्य भारत की राष्ट्रीय पहचान और धरोहर हैं। संस्कृत और राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से सभी युवा भारतीयों को अपने देश की भाषाओं के विशाल समृद्ध भंडार और उनके साहित्य के खजाने के बारे में जागरूक होना चाहिए।

भाषाएं प्रासंगिक और जीवंत बनी रहे इसके लिए इन भाषाओं में उच्चतर गुणवत्तापूर्ण अधिगम एवं प्रिंट सामग्री का सतत् प्रवाह बने रहना चाहिए जिसमें पाठ्य पुस्तकें, अभ्यास पुस्तकें, वीडियो, नाटक, कविताएं, उपन्यास, पत्रिकाएं आदि शामिल हैं। भाषाओं के शब्दकोषों और शब्द भंडार को आधिकारिक रूप से लगातार अपडेट/अद्यतन होते रहना चाहिए और उसका व्यापक प्रसार भी करना चाहिए ताकि समसामयिक मुद्दों और अवधारणाओं पर इन भाषाओं में चर्चा की जा सके।

यह सर्वविदित है कि छोटे बच्चे अपने घर की भाषा/मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते हैं और समझ लेते हैं। घर की भाषा आमतौर पर मातृभाषा या स्थानीय समुदायों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। हालांकि कई बार बहुभाषी परिवारों में, परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा बोली जाने वाली एक घरेलू भाषा हो सकती है, जो कभी—कभी मातृभाषा या स्थानीय भाषा से भिन्न हो सकती है। जहां तक संभव हो कम से कम ग्रेड 5 तक लेकिन बेहतर यह होगा कि ग्रेड 8 और उससे आगे तक भी हो, शिक्षा का माध्यम घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी। इसके बाद

घर/स्थानीय भाषा को जहां भी संभव हो भाषा के रूप में पढ़ाया जाता रहेगा। सार्वजनिक और निजी दोनों तरह के स्कूल इसकी अनुपालना करेंगे। विज्ञान सहित सभी विषयों में उच्चतर गुणवत्ता वाली पाठ्य पुस्तकों को घरेलू भाषाओं/मातृभाषा में उपलब्ध कराया जाएगा। यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास जल्दी किए जाएंगे कि बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषा और शिक्षण के माध्यम के बीच यदि कोई अंतराल मौजूद हो तो उसे समाप्त किया जा सके। ऐसे मामलों में जहां घर की भाषा की पाठ्य सामग्री उपलब्ध नहीं है, शिक्षकों और छात्रों के बीच संवाद की भाषा जहां तक संभव हो, वहां घर की भाषा बनी रहेगी।

जैसा कि अनुसंधान स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि बच्चे 2 और 8 वर्ष की आयु के बीच बहुत जल्दी भाषा सीखते हैं और बहुभाषिकता से इस उम्र के विद्यार्थियों को बहुत अधिक संज्ञानात्मक लाभ होता है, फाऊंडेशनल स्टेज की शुरुआत और उसके बाद से ही बच्चों को विभिन्न भाषाओं में (लेकिन मातृभाषा पर विशेष जोर देने के साथ) एक्स्पोजर दिए जाएंगे।

सभी भाषाओं को एक मनोरंजक और संवादात्मक शैली में पढ़ाया जाएगा, जिसमें बहुत सारी संवादात्मक बातचीत होगी और शुरुआती वर्षों में पढ़ने और बाद में मातृभाषा में लिखने के साथ ग्रेड 3 और आगे की कक्षाओं में अन्य भाषाओं में पढ़ने और लिखने के लिए कौशल विकसित किए जाएंगे।

स्कूली बच्चों में भाषा कला और संस्कृति को बढावा देने के लिए संगीत कला और हस्त कौशल पर बल देना, बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करने के लिए त्रिभाषा फार्मूला का जल्द क्रियान्वयन, साथ ही जब संभव हो मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षण तथा अधिक अनुभव–आधारित भाषा शिक्षण; उत्कृष्ट स्थानीय कलाकारों, लेखक, हस्तकलाकारों एवं अन्य विशेषज्ञों को स्थानीय विशेषज्ञता के विभिन्न विषयों में विशिष्ट प्रशिक्षक के रूप में स्कूलों से जोडना, पाठयचर्या, मानविकी, विज्ञान, कला, हस्तकला और खेल में पारंपरिक भारतीय ज्ञान का समावेशन करना, जब भी ऐसा करना प्रासंगिक हो, पाठ्यचर्या में अधिक लचीलापन, विशेषकर माध्यमिक स्कूल में और उच्चतर शिक्षा में, ताकि विद्यार्थी एक आदर्श संतुलन कायम रखते हुए अपने लिए कोर्स का चुनाव कर सकें जिससे वे स्वयं के सृजनात्मक, कलात्मक, सांस्कृतिक एवं अकादमिक आयामों का विकास कर सके आदि शामिल हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत भारत शीध्र ही अनुवाद एवं विवेचना से संबंधित अपने प्रयासों का विस्तार करेगा जिससे सर्वसाधारण को विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में उच्चतर गुणवत्ता वाला अधिगम सामग्री और अन्य महत्त्वपूर्ण लिखित एवं मौखिक सामग्री उपलब्ध हो सके। इसके लिए एक इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेसन एंड इण्टरप्रिटेशन (आई0आई0टी0आई0) की स्थापना की जायेगी। इस प्रकार का संस्थान देश के लिए महत्त्वपूर्ण सेवा प्रदान करेगा साथ ही अनेक बहु–भाषी भाषा और विषय विशेषज्ञ तथा अनुवाद एवं व्याख्या के विशेषज्ञों को नियुक्त करेगा जिससे सभी भारतीय भाषाओं को प्रसारित और प्रचारित करने में मदद मिलेगी।

सभी भारतीय भाषाओं और उनसे संबंधित समृद्ध स्थानीय कला एवं संस्कृति के संरक्षण हेतु सभी भारतीय भाषाओं एवं उनसे संबंधित स्थानीय कला एवं संस्कृति का, वेब आधारित प्लेटफार्म/पोर्टल/विकिपीडिया के माध्यम से दस्तावेजीकरण किया जाएगा। प्लेटफार्म पर वीडियो शब्दकोश रिकॉर्डिंग एवं अन्य सामग्री होगी जैसे– लोगों द्वारा भाषा बोलना (विशेषकर बुजुर्गों द्वारा) कहानी सुनाना, कविता पाठ करना, नाटक खेलना, लोक गायन एवं नृत्य करना आदि। देश भर के लोगों को इन प्रयासों में योगदान देने के लिए आमंत्रित किया जाएगा जिससे वे इन प्लेटफार्म/पोर्टल/विकिपीडिया पर प्रासंगिक सामग्री जोड़ सकेंगे।

संस्कृत भाषा के वृहद् एवं महत्त्वपूर्ण योगदान तथा विभिन्न विधाओं एवं विषयों के साहित्य, सांस्कृ तिक महत्त्व, वैज्ञानिक प्रकृति के चलते संस्कृत को केवल संस्कृत पाठशालाओं एवं विश्वविद्यालयों तक सीमित न रखते हुए इसे मुख्य धारा में लाया जाएगा। स्कूलों में त्रि–भाषा फार्मूला के तहत एक विकल्प के रूप में, साथ ही साथ उच्चतर शिक्षा में भी। इसे पृथक रूप में नहीं पढ़ाया जाएगा बल्कि रुचिपूर्ण एवं

नवाचारी तरीकों से एवं अन्य समकालीन एवं प्रासंगिक विषयों जैसे– गणित, खगोल शास्त्र, दर्शनशास्त्र, नाटक विधा, योग आदि से जोड़ा जाएगा।

शास्त्रीय आदिवासी और लुप्तप्राय भाषाओं सहित सभी भारतीय भाषाओं को संरक्षित और बढ़ावा देने के प्रयास नए जोश के साथ किए जाएंगे। प्रौद्योगिकी एवं क्राउडसोर्सिंग लोगों को व्यापक भागीदारी के साथ इन प्रयासों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। भारत इसी तरह सभी शास्त्रीय भाषाओं और साहित्य का अध्ययन करने वाले अपने संस्थानों और विश्वविद्यालय का विस्तार करेगा और उन हजारों पांडुलिपियों को इकट्ठा करने, संरक्षित करने, अनुवाद करने और उनका अध्ययन करने के मजबूत प्रयास करेगा जिन पर अभी तक ध्यान नहीं गया है।

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित प्रत्येक भाषा के लिए अकादमी स्थापित की जाएगी जिसमें हर भाषा से श्रेष्ठ विद्वान एवं मूल रूप से वह भाषा बोलने वाले लोग शामिल रहेंगे ताकि नवीन अवधारणाओं का सरल किंतु सटीक शब्द भंडार तय किया जा सके तथा नियमित रूप से नवीनतम शब्दकोश जारी किया जा सके (विश्व में कई भाषाओं अन्य भाषा अन्य कई भाषाओं के सफल प्रयासों के सदृश)। इन शब्दकोषों के निर्माण के लिए से अकादमियां एक दूसरे से परामर्श लेंगी, कुछ मामलों में आम जनता के सर्वश्रेष्ठ सुविधाओं को भी लेंगी।

राज्य हिन्दी संस्थान · उ.प्र. वाराणसी · प्रतिष्ठित जाग्रत

शुद्ध वर्ण उच्चारण हेतु ऑडियो

ऑडियो लिंक

https://drive.google.com/file/d/1PS7vNPVbauAL2sKRNLMVhr9lQqU7ZcIA/view?usp=sharing

संदर्भग्रंथ सूची

1. **रचनात्मक हिंदी एवम व्याकरण** – डॉ० शंकर लाल शर्मा, डॉ० कंचन शर्मा, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, प्रथम संस्करण 2010
2. **रचनात्मक लेखन** – संपादक–रमेश गौतम, माधुरी सुबोध, राजेंद्र गौतम, प्रभात रंजन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण, 2013
3. **संप्रेषणमूलक हिंदी** – डॉ० राम प्रकाश, डॉ० दिनेश गुप्त राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2009
4. **हिन्दी व्याकरण प्रशिक्षण साहित्य** – राज्य हिन्दी संस्थान, वाराणसी।
5. **देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण** – केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
6. **हिंदी व्याकरण** – कामताप्रसाद गुरु
7. **आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना** – डॉ० वासुदेवनन्दन प्रसाद
8. **मातृभाषा हिंदी शिक्षण** – एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली
9. **हिंदी शिक्षण** – डॉ० उमा मंगल

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी
(स्थापना वर्ष-1975)

निकट पुलिस लाइन, वाराणसी (पिनकोड-221001)

ई-मेल : rajyahindisansthan1975@gmail.com
वेबसाइट : rajyahindisansthanupvns.org.in